

Greatest Questions Ever Asked?

Steve Flatt

Lessons:

1. Is Anything Too Difficult For Me?
2. If A Man Dies Will He Live Again?
3. Who Is My Neighbor?
4. What Shall I Do With Christ?
5. Where Did The Ax Head Fall?
6. Where Is The Lamb?
7. What Must I Do To Be Saved?

Introduction

There are countless questions asked in the Bible. Some were:

- a. Rhetorical—God asked Adam “Where are you?”
- b. Condemning— God asked Adam “Have you eaten from the tree that I commanded you not to eat from?”
- c. Informational—“How can a man be born when he is old?” Nicodemus asked. “Surely he cannot enter a second time into his mother's womb to be born!”
- d. Eternal—“What must we do to be saved?”

The questions selected for The Greatest Questions Ever Asked series have an eternal significance.

Chapter 1

Is Anything Too Difficult For Me?

God asked Jeremiah, the prophet, "Is anything too difficult for me?" (Jeremiah 32:26) What a question! Is anything too difficult for me? Let me tell you the context of that question. Babylon is about to conquer Judah, the southern kingdom. Jeremiah, the weeping prophet, has been prophesying about that for a long time. Babylon is right at the door. Jeremiah said, "They built the siege ramps and they're putting them up against the wall of Jerusalem." God requested a most unusual thing of Jeremiah. He said, "Jeremiah, what I want you to do is go buy a field." Now folks, when an invading force is about to conquer your land, real estate investment is not a real good idea. Jeremiah said, "Lord, the siege ramps are right there, you don't understand." He said, "You don't understand, this is a symbol. I want witnesses to see the transaction so that they will know that this land is still yours. Though I am going to use Babylon to conquer Judah, I'm going to bring you back home. Then God asked the question: "Is there anything too difficult for me?"

Scripture is filled with instances of "Is anything too hard for the Lord?" God came to Abraham and Sarah after they waited a quarter of a century for a child. (Genesis 18:14) Job said, "I know that you can do all things." (Job 42:2) The

सबैभन्दा ठूलो प्रश्नहरू कहिल्यै सोधिएको

Steve Flatt

सबकः

1. क्या मेरे लिए कुछ भी मुश्किल है?
2. अगर एक आदमी मर जाता है तो क्या वह फिर से जीवित रहेगा?
3. मेरा पड़ोसी कौन है?
4. मैं मसीह के साथ क्या करूँ?
5. कुल्हाड़ी का सिर कहाँ गिरा?
6. मेमना कहाँ है?
7. बचने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

परिचय

बाइबल में अनगिनत प्रश्न पूछे गए हैं। कुछ थे:

- e. शब्दाडंबरपूर्ण—भगवान ने आदम से पूछा "तुम कहाँ हो?"
- f. निंदा—परमेश्वर ने आदम से पूछा "क्या तुमने उस पेड़ से खाया है जिसे मैंने तुम्हें खाने से मना किया था?"
- g. सूचना—"जब वह बूढ़ा हो जाता है तो आदमी कैसे पैदा हो सकता है?" निकोडेमस ने पूछा। "निश्चित रूप से वह जन्म लेने के लिए अपनी मां के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश नहीं कर सकता!"
- h. शाश्वत—"उद्धार पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?"

द ग्रेटेस्ट केश्वन एवर आस्कड सीरीज के लिए चुने गए प्रश्नों का शाश्वत महत्व है।

अध्याय 1

क्या मेरे लिए कुछ भी मुश्किल है?

परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह से पूछा, "क्या मेरे लिए कुछ भी कठिन है?" (यिर्मयाह 32:26) क्या ही बढ़िया सवाल है! क्या मेरे लिए कुछ भी कठिन है? मैं आपको उस प्रश्न का संदर्भ बताता हूँ। बाबुल दक्षिणी राज्य यहूदा पर विजय प्राप्त करने वाला है। यिर्मयाह, रोता हुआ भविष्यद्वक्ता, लंबे समय से इसके बारे में भविष्यवाणी कर रहा है। बाबुल ठीक दरवाजे पर है। यिर्मयाह ने कहा, "उन्होंने घेरने वाली ढलानें बनाई, और यरूशलेम की शहरपनाह के साम्हने खड़ी की हैं।" परमेश्वर ने यिर्मयाह से एक सबसे असामान्य बात का अनुरोध किया। उसने कहा, "यिर्मयाह, मैं चाहता हूँ कि तुम जाओ और एक खेत मोल लो।" अब दोस्तों, जब एक आक्रमणकारी सेना आपकी जमीन पर कब्जा करने वाली है, तो रियल एस्टेट निवेश वास्तव में अच्छा विचार नहीं है। यिर्मयाह ने कहा, "हे यहोवा, घेराव करनेवाले डंडे वहीं हैं, तू नहीं समझता।" उन्होंने कहा, "आप नहीं समझते, यह एक प्रतीक है। मैं चाहता हूँ कि गवाह लेन-देन देखें ताकि उन्हें पता चले कि यह जमीन अभी भी आपकी है। हालाँकि मैं यहूदा को जीतने के लिए

prophet Isaiah said "The Lord is the everlasting Lord, the Creator of the ends of the earth. He will not grow tired or weary." (Isaiah 40:28) Our Lord Jesus said "What is impossible with men is possible with God." (Luke 18:27) That's our God. He's all powerful, he's Almighty and he has unlimited power. He never gets tired or frustrated. Everything he does, he does effortlessly, whether it's creating a universe or answering a prayer.

Examine his power based upon those promises.

1. His power in Creation.

"The heavens declare the glory of God; the skies declare the work of his hands. Day after day they pour forth speech; night after night they display knowledge." (Psalm 19:1-2) Every one of us has stood and gazed over a mountain range or looked out over the ocean. Perhaps you've flown on an airplane and stared at the horizon and marveled at God's awesome power and design. Every moment creation is a witness of the reality that our God is all powerful.

I read not long ago that each second, our sun emits more energy and raw power than has been used on the face of the earth throughout history—each second. Scientists say that if nothing were to happen to interrupt it our sun will burn for thirty billion more years. Our sun is one of one hundred billion stars in the Milky Way Galaxy which is one of one trillion galaxies. Our God spoke those things into existence. He just said, "Let there be light and there was light. He said, "Stars," and stars were everywhere. That's what I call power. Surely, David knew exactly what he was talking about when he said, "Only a fool says in his heart there is no God." (Psalms 14:1)

2. His power found in the miracles

But it's not just Creation that proclaims it. The tremendous power found in the miracles in Scripture proclaims His mighty power. The parting of the Red Sea, the fall of the wall of Jericho, the day the sun stood still, the dead raised to life and then the miracles culminated in the life of Jesus. Jesus is the supreme example of God's great power. Nobody ever did and nobody ever claimed to do all that our Lord did. He demonstrated power over nature. He walked on water, he calmed the storms and he spoke to a tree and it withered. He had power over illness, healing the blind, the lame, the deaf and the lepers. Jesus raised the dead on three occasions. He broke the shackles of the grave himself. Jesus even demonstrated power over Satan and all of his evil forces. On one occasion, he commanded a whole legion of demons to come out of a man and go into a bunch of pigs. That's just the hem of the garment. But we've touched enough for jaws to drop, knees to shake and voices to tremble. God's power is awesome.

3. God wants to share his power with you.

The truly amazing thing is that God wants to share his power with you. "And his incomparably great power for us

बाबुल का इस्तेमाल करने जा रहा हूँ, मैं तुम्हें घर वापस लाने जा रहा हूँ। तब भगवान ने प्रश्न पूछा: "क्या मेरे लिए कुछ भी कठिन है?"

पवित्रशास्त्र "क्या कुछ भी प्रभु के लिए कठिन है?" परमेश्वर अब्राहम और सारा के पास तब आया जब उन्होंने एक बच्चे के लिए एक चौथाई सदी तक प्रतीक्षा की। (उत्पत्ति 18:14) अय्यूब ने कहा, "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है।" (अय्यूब 42:2) भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा, "यहोवा सनातन यहोवा है, जो पृथ्वी के दूर दूर देशों का सृष्टिकर्ता है। वह न थकेगा और न थकेगा।" (यशायाह 40:28) हमारे प्रभु यीशु ने कहा, "जो मनुष्य से असम्भव है वह परमेश्वर से सम्भव है।" (लूका 18:27) वही हमारा परमेश्वर है। वह सर्वशक्तिशाली है, वह सर्वशक्तिमान है और उसके पास असीमित शक्ति है। वह कभी थकता या निराश नहीं होता। वह जो कुछ भी करता है, सहजता से करता है, चाहे वह ब्रह्मांड का निर्माण करना हो या प्रार्थना का उत्तर देना हो।

उन वादों के आधार पर उसकी शक्ति का परीक्षण करें।

1. सृष्टि में उसकी शक्ति।

"आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है, आकाश उसके हाथों के कामों का वर्णन करता है। दिन पर दिन वे बातें करते हैं, रात पर रात वे ज्ञान का प्रचार करते हैं।" (भजन 19:1-2) हम में से प्रत्येक ने खड़े होकर एक पर्वत श्रृंखला को देखा है या समुद्र के ऊपर देखा है। शायद आप हवाई जहाज़ से उड़े हों और क्षितिज को घूर कर देखा हो और परमेश्वर की विस्मयकारी सामर्थ्य और रचना पर अचंभित हो गए हों। हर क्षण सृष्टि इस बात की साक्षी है कि हमारा ईश्वर सर्वशक्तिशाली है।

मैंने हाल ही में पढ़ा था कि हर सेकंड, हमारा सूर्य इतनी अधिक ऊर्जा और अपरिष्कृत शक्ति का उत्सर्जन करता है जितना पूरे इतिहास में पृथ्वी पर इस्तेमाल किया गया है - प्रत्येक सेकंड। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर इसे बाधित करने के लिए कुछ नहीं हुआ तो हमारा सूर्य तीस अरब और वर्षों तक जलता रहेगा। हमारा सूर्य मिल्की वे गैलेक्सी में एक सौ अरब सितारों में से एक है जो एक ट्रिलियन आकाशगंगाओं में से एक है। हमारे परमेश्वर ने उन बातों को अस्तित्व में लाया। उसने बस इतना कहा, "प्रकाश होने दो और प्रकाश था। उसने कहा, "तारे," और सितारे हर जगह थे। यही वह है जिसे मैं शक्ति कहता हूँ। निश्चित रूप से, डेविड को ठीक-ठीक पता था कि वह किस बारे में बात कर रहा है जब उसने कहा, "केवल एक मूर्ख कहता है कि उसके मन में कोई परमेश्वर नहीं है।" (भजन 14:1)

2. उसकी सामर्थ्य चमत्कारों में पाई जाती है

लेकिन यह सिर्फ सृष्टि नहीं है जो इसकी घोषणा करती है। इंजील में चमत्कारों में पाई जाने वाली जबरदस्त शक्ति उनकी शक्तिशाली शक्ति की घोषणा करती है। लाल सागर का विभाजन, यरीहो की दीवार का गिरना, जिस दिन सूर्य स्थिर खड़ा था, मृतक जीवित हो उठे और फिर यीशु के जीवन में चमत्कारों की पराकाष्ठा हुई। यीशु परमेश्वर की महान शक्ति का सर्वोच्च उदाहरण है।

who believe. That power is like the working of his mighty strength, which he exerted in Christ when he raised him from the dead and seated him at his right hand in the heavenly realms." (Ephesians 1:19-20) Now I hope you understood what was being said. That's incredible. God wants to share his limitless power with you, the same power that fuels the sun, the same power that spoke the ocean into existence, the same mighty power that raised Christ from the dead. He wants to channel that power through you and through me.

There are people everywhere who go through life, powerless. They just walk along as victims. They see themselves as victims of their circumstances, victims of society, victims of other people and victims of unfair treatment. They go through life weak, miserable and getting by. God says, "I want to give you power. I want to give you power to do some incredible things." What incredible things?

a. *The power to conquer sin in your life* "Therefore, there is now no condemnation for those who are in Christ Jesus, because through Christ Jesus the law of the Spirit of life set me free from the law of sin and death." (Romans 8:1-2) "Those who walk by the sinful nature they do the things of the sinful nature, but those who walk by the Spirit, they don't do the things of the sinful nature, they find themselves walking by the Spirit's life." (v. 5)

Is anybody here a slave to sin? Do you keep falling to the same temptation over and over and over again? Every time you say "I'm sorry, I'm never going to do that again," and lo and behold, you do it again, and again, and again. If the truth be told, that sin is your master. But do you know that God didn't design it to work that way, and that he will give you the power to break that cycle? He will.

b. *Power for peace in your life.* "The mind of sinful man is death, but the mind controlled by the Spirit is life and peace." (Romans 8:6) Maybe you can't readily think of one sin that is controlling you, you're just sitting there saying, "I'm just kind of blah, I don't know what life is all about. I don't have a peace of my existence. I don't understand." God is giving you the power to have that peace.

c. *Empower your prayer life through his Spirit living in you.* "In the same way, the Spirit helps us in our weakness. We do not know what we ought to pray for, but the Spirit himself intercedes for us with groans that words cannot express." (Romans 8:26)

d. *Power to overcome circumstances.* "And we know that in all things God works for the good of those who love him, who have been called according to his purpose."

किसी ने कभी नहीं किया और किसी ने कभी भी वह सब करने का दावा नहीं किया जो हमारे प्रभु ने किया। उन्होंने प्रकृति पर शक्ति का प्रदर्शन किया। वह पानी पर चला, उसने तूफानों को शांत किया और उसने एक पेड़ से बात की और वह सूख गया। उसके पास बीमारी, अंधे, लंगड़े, बहरे और कोढ़ियों को चंगा करने की शक्ति थी। यीशु ने तीन बार मरे हुआ को जिलाया। उसने कब्र की बेड़ियों को खुद तोड़ा। यीशु ने शैतान और उसकी सारी दुष्ट शक्तियों पर सामर्थ्य का भी प्रदर्शन किया। एक अवसर पर, उसने राक्षसों की एक पूरी सेना को एक आदमी से बाहर निकालने और सूअरों के झुंड में जाने का आदेश दिया। वह सिर्फ परिधान का घेरा है। लेकिन हमने इतना छुआ है कि जबड़ों को गिरा दिया जाए, घुटनों को हिला दिया जाए और आवाजें कांपने लगें। ईश्वर की शक्ति अद्भुत है।

3. परमेश्वर अपनी शक्ति आपके साथ बांटना चाहता है। वास्तव में आश्चर्यजनक बात यह है कि परमेश्वर अपनी शक्ति को आपके साथ बांटना चाहता है। "और उसकी अतुलनीय महान सामर्थ्य हम विश्वासियों के लिये है। वह सामर्थ्य उसकी उस प्रबल सामर्थ्य के कार्य के समान है, जो उस ने मसीह में लगाई, जब उस ने उसे मरे हुआ में से जिलाया, और स्वर्गीय स्थानों में अपक्की दहिनी ओर बैठाया।" (इफिसियों 1:19-20) अब मैं आशा करता हूँ कि आप समझ गए होंगे कि क्या कहा जा रहा था। यह अविश्वसनीय है। परमेश्वर अपनी असीम शक्ति को आपके साथ साझा करना चाहता है, वही शक्ति जो सूर्य को ईंधन देती है, वही शक्ति जिसने समुद्र को अस्तित्व में लाया, वही शक्तिशाली शक्ति जिसने मसीह को मरे हुआ में से जीवित किया। वह उस शक्ति को आपके और मेरे द्वारा प्रसारित करना चाहता है।

हर जगह ऐसे लोग हैं जो जीवन से गुजरते हैं, शक्तिहीन। वे सिर्फ पीड़ितों के रूप में साथ चलते हैं। वे खुद को अपनी परिस्थितियों के शिकार, समाज के शिकार, दूसरे लोगों के शिकार और अनुचित व्यवहार के शिकार के रूप में देखते हैं। वे जीवन को कमजोर, दुखी और अच्छे से गुजारते हैं। परमेश्वर कहते हैं, "मैं तुम्हें शक्ति देना चाहता हूँ। मैं तुम्हें कुछ अविश्वसनीय कार्य करने की शक्ति देना चाहता हूँ।" कैसी अविश्वसनीय बातें?

एक। आपके जीवन में पाप पर विजय पाने की शक्ति "इसलिये अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु के द्वारा मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।" (रोमियों 8:1-2) "जो लोग पापी स्वभाव के अनुसार चलते हैं वे पापी स्वभाव के कामों को करते हैं, परन्तु जो आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे पापी स्वभाव के कामों को नहीं करते, वे अपने आप को चलते हुए पाते हैं।" आत्मा का जीवन।" (वि. 5)

क्या यहाँ कोई पाप का दास है? क्या आप बार-बार एक ही प्रलोभन में पड़ते रहते हैं? हर बार जब आप कहते हैं "मुझे क्षमा करें, मैं फिर कभी ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ," और लो और देखो, आप इसे बार-बार करते हैं, और बार-बार करते हैं। सच कहा जाए तो वह पाप तुम्हारा मालिक है। लेकिन क्या

(Romans 8:28) God wants to empower you to live above your circumstances.

Have you ever asked anybody, "How are you doing?" They say, "I guess I'm doing all right under the circumstances." I always want to ask them, "Well, what are you doing under your circumstances? You've got no business being under them. Get on top of them. God doesn't want you under the circumstances. He doesn't want you going through life as a victim. He will give you the power to climb out from under those things that would devastate you and show you something positive you could never have seen or known otherwise." That's the promise of Romans 8:28.

- e. *Empower you to be more Christ-like.* "For those God foreknew he also predestined to be conformed to the likeness of his Son." (Romans 8:29) That is what God wants for you more than anything else. He wants you to be free from sin, to know peace and to have a great prayer life. He wants you on top of your circumstances, but more than anything else, our God wants you to be like Jesus Christ.

Let me summarize the way God would channel power through your life. He wants to enable you to live the richest, fullest, happiest and most productive life possible. No doubt some of you are thinking, "That works for you but it doesn't work for me. O, I'm a Christian, I've obeyed the gospel and I'm going to go to heaven, I guess. But I've never felt God's power in my life. I hear those things preached, but I don't know if it really works." That thinking leads to the fourth and most important.

4. Does it really have application in your life?

You better believe it does. Let's look at the process of applying his power. Most Christians don't think God's power is in their lives to any significant degree. I base that upon observation. I don't think most Christians sense God's power to any significant degree. It's not automatic. There are some things you must do to key into it. Unless you follow God's counsel for receiving his power, you'll live your life just as powerless and just as defeated as an unbeliever.

So how do I apply His power on a consistent basis?

- a. **I admit to a lack of power in my life.** Most of us think we're omnipotent. We think we're God. We don't say it out loud, but deep in our hearts we think: Is there anything too difficult for me? I can do anything and everything. If you don't believe that, look at your schedule, you are trying to do absolutely anything and everything. You think it's all up to you. Somebody says, "If you burn the candle at both ends, you're not as bright as you think you are." A lot of us need to learn that. Sooner or later stress, tension and frustration mounts.

आप जानते हैं कि परमेश्वर ने इसे इस तरह से काम करने के लिए नहीं बनाया है, और वह आपको उस चक्र को तोड़ने की शक्ति देगा? वह होगा।

- बी। आपके जीवन में शांति के लिए शक्ति। "पापी मनुष्य का मन मृत्यु है, परन्तु आत्मा द्वारा नियंत्रित मन जीवन और शांति है।" (रोमियों 8:6) हो सकता है कि आप आसानी से एक पाप के बारे में नहीं सोच सकते जो आपको नियंत्रित कर रहा है, आप बस वहां बैठे हुए कह रहे हैं, "मैं बस एक प्रकार का ब्लाह हूँ, मुझे नहीं पता कि जीवन क्या है। मैं मेरे अस्तित्व की शांति नहीं है। मुझे समझ नहीं आ रहा है। भगवान आपको वह शांति पाने की शक्ति दे रहे हैं।

- f. *आप में निवास करने वाली उसकी आत्मा के द्वारा अपने प्रार्थना जीवन को सशक्त करें।* "इसी प्रकार आत्मा हमारी निर्बलता में हमारी सहायता करता है। हम नहीं जानते कि हमें क्या प्रार्थना करनी चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती, हमारे लिये बिनती करता है।" (रोमियों 8:26)

- g. *परिस्थितियों पर काबू पाने की शक्ति।* "और हम जानते हैं, कि परमेश्वर सब बातों में उनके लिये भलाई ही करता है, जो उस से प्रेम रखते हैं, जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" (रोमियों 8:28) परमेश्वर आपको अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर जीने की शक्ति देना चाहता है।

क्या आपने कभी किसी से पूछा है, "आप कैसे हैं?" वे कहते हैं, "मुझे लगता है कि मैं परिस्थितियों में ठीक कर रहा हूँ।" मैं हमेशा उनसे पूछना चाहता हूँ, "ठीक है, आप अपनी परिस्थितियों में क्या कर रहे हैं? आपके पास उनके अधीन होने का कोई व्यवसाय नहीं है। उनके ऊपर चढ़ो। भगवान आपको परिस्थितियों में नहीं चाहता। वह आपको नहीं चाहता एक पीड़ित के रूप में जीवन से गुजर रहा है। वह आपको उन चीजों के नीचे से बाहर निकलने की शक्ति देगा जो आपको तबाह कर देंगी और आपको कुछ सकारात्मक दिखाएगी जो आप कभी नहीं देख सकते थे या अन्यथा नहीं जान सकते थे। यही रोमियों 8:28 की प्रतिज्ञा है।

- h. *आपको और अधिक मसीह के समान बनने के लिए सामर्थ्य दें।* "क्योंकि जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों।" (रोमियों 8:29) परमेश्वर आपके लिए किसी भी चीज़ से बढ़कर यही चाहता है। वह चाहता है कि आप पाप से मुक्त हों, शांति को जानें और एक महान प्रार्थना जीवन पाएं। वह आपको आपकी परिस्थितियों के ऊपर चाहता है, लेकिन किसी भी चीज़ से बढ़कर, हमारा परमेश्वर चाहता है कि आप यीशु मसीह के समान बनें।

मुझे सारांशित करने दें कि किस प्रकार परमेश्वर आपके जीवन में सामर्थ्य को प्रवाहित करेगा। वह आपको सबसे

Then, BOOM!

There's a lot of talk today about a mid-life crisis. A mid-life crisis really is simply waking up to your limitations. It's realizing that you're not God. It's realizing that you can't control everything, you're not going to reach every goal, you are a human being, you're weak and you're getting older. Your body is settling, and your hairline is receding.

What do you do when you realize that you're weak? Listen to God! Paul said, "But He said to me, 'My grace is sufficient for you, for my power is made perfect in weakness.' Therefore, I will boast all the more gladly about my weaknesses, so that Christ's power may rest on me." (2 Corinthians 12:9) If you will not admit your weakness, forget the power of God. As long as you pretend to be self-sufficient you short-circuit God's power in your life. As long as you feel I've got life by the tail, then God will step back and say, "Okay, take it. Let's see what it does to you."

- b. Believe in faith.** This is the key—write it down and inscribe it on your heart. The key to God channeling power in our lives is faith. Jesus taught, "Everything is possible to him who believes" (Mark 9:23) and "According to your faith it will be done to you." (Matthew 9:29)

If that's true, and it is, then two critical questions naturally follow: 1) what are you expecting God to do in your life? and 2) what are you expecting God to do through your life? Because he works according to faith, God has unlimited power. Let's don't limit him by our expectation of him. Many times, we've talked about this, but remember God is the ultimate power source and faith is our connector. Faith is our conduit, and the amount of power that God channels into our lives directly correlates to the amount of faith that we are using to connect.

The other day my battery died, or something died, the car wouldn't start. I fellow pull over and said, "I've got some jumper cables." They were these little old bitty things just made out of tinfoil. He hooked them up to his battery and mine and it still wouldn't crank. I thought, we can't solve it at all. Then this other fellow came up. He had a pick-up truck. He had everything in there. He took out jumper cables that took two of us to carry. They were big cables, he said, "Let me hook them up for you, son." I said, "Okay." Sure enough, he hooked them up and VAROOOOM! What was the difference? The difference was neither in the recipient and the power source, it was in the connection. It was in the strength of that connection.

A lot of us have faith that is like a little electrical cord for a 110-outlet and God wants us to have cable so that

समृद्ध, पूर्णतम, सबसे खुशहाल और सबसे अधिक उत्पादक जीवन जीने में सक्षम बनाना चाहता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप में से कुछ सोच रहे हैं, "यह आपके लिए काम करता है लेकिन यह मेरे लिए काम नहीं करता। 0, मैं एक ईसाई हूँ, मैंने सुसमाचार का पालन किया है और मुझे लगता है कि मैं स्वर्ग जा रहा हूँ। लेकिन मैंने अपने जीवन में कभी भी परमेश्वर की शक्ति को महसूस नहीं किया। मैं उन बातों का प्रचार सुनता हूँ, लेकिन मुझे नहीं पता कि क्या यह वास्तव में काम करता है।" यह सोच चौथी और सबसे महत्वपूर्ण बात की ओर ले जाती है।

4. क्या यह वास्तव में आपके जीवन में लागू होता है?

आप बेहतर मानते हैं कि यह करता है। आइए उसकी शक्ति को लागू करने की प्रक्रिया को देखें। अधिकांश ईसाई नहीं सोचते कि भगवान की शक्ति उनके जीवन में किसी भी महत्वपूर्ण डिग्री में है। मैं अवलोकन पर आधारित हूँ। मुझे नहीं लगता कि अधिकांश ईसाई भगवान की शक्ति को किसी भी महत्वपूर्ण डिग्री तक महसूस करते हैं। यह स्वचालित नहीं है। इसमें कुंजी के लिए आपको कुछ चीजें करनी होंगी। जब तक आप उसकी शक्ति प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की सलाह का पालन नहीं करते हैं, तब तक आप अपना जीवन बिल्कुल शक्तिहीन और एक अविश्वासी की तरह पराजित होकर जाएंगे।

तो मैं उसकी शक्ति को निरंतर आधार पर कैसे लागू करूँ?

एक। मैं अपने जीवन में शक्ति की कमी को स्वीकार करता हूँ। हम में से अधिकांश सोचते हैं कि हम सर्वशक्तिमान हैं। हमें लगता है कि हम भगवान हैं। हम इसे ज़ोर से नहीं कहते हैं, लेकिन अपने दिल की गहराई में हम सोचते हैं: क्या मेरे लिए कुछ भी मुश्किल है? मैं कुछ भी और सब कुछ कर सकता हूँ। यदि आप ऐसा नहीं मानते हैं, तो अपने शेड्यूल को देखें, आप बिल्कुल कुछ भी और सब कुछ करने की कोशिश कर रहे हैं। आपको लगता है कि यह सब आप पर निर्भर है। कोई कहता है, "यदि आप मोमबत्ती को दोनों सिरों से जलाते हैं, तो आप उतने उज्वल नहीं हैं जितना आप सोचते हैं कि आप हैं।" हममें से बहुतों को यह सीखने की जरूरत है। देर-सवेर तनाव, तनाव और हताशा बढ़ती ही जाती है। फिर, बूम!

आज मिड-लाइफ़ क्राइसिस के बारे में काफी बातें हो रही हैं। एक मध्य-जीवन संकट वास्तव में केवल अपनी सीमाओं के प्रति जागना है। यह एहसास है कि आप भगवान नहीं हैं। यह एहसास है कि आप सब कुछ नियंत्रित नहीं कर सकते, आप हर लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाएंगे, आप एक इंसान हैं, आप कमजोर हैं और आप बूढ़े हो रहे हैं। आपका शरीर व्यवस्थित हो रहा है, और आपकी हेयरलाइन कम हो रही है।

जब आपको पता चलता है कि आप कमजोर हैं तो आप क्या करते हैं? भगवान की सुनो! पौलुस ने कहा, "परन्तु उस ने मुझ से कहा, 'मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ्य

we can really know the power. Vince Hefner once said, "God has given us an atomic bomb power and yet we live firecracker lives." There is not a problem too big for God. There is no request he cannot handle. Then the issue is my faith. What am I willing to believe? If you want to see God's power in your life, you must first believe in faith.

- c. **Speak in faith.** I find most preachers leave this out. Paul says, "It is written: (and he quotes Psalm 116) 'I believed; therefore I have spoken.' With that same spirit of faith we also believe and therefore speak." (2 Corinthians 4:13) Paul says, "After you believe, you also need to speak." You must verbalize your faith. There must be an announcement of what you're intending to see God do. You don't just think it; you announce it and speak it. Folks, that's what a goal is. A goal is a statement of faith. Now if you don't believe in God or if you're not following the prescription, then your goal is only a statement of faith in your own power. But a well-crafted goal can and should be a statement of faith in God's power. I believe God can and will bless my life this way.

Well-constructed goals are statements of faith. The size of your goals is determined by the size of your God. You show me the goals in your life and I'll show you what you really think in the power of God. How many of you have a goal "I believe God will use me to bless hundreds of people." He can. The question is: Do you believe that and will you state that? If you've got a family that's fractured right now, do you believe that God can use you to be the spark of light and blessing in your family? He can. Do you believe that? Would you say it? Folks, it's very important that you announce your faith. James says, "The tongue is the rudder of your life. It sets the direction, it charts the course." It has the power of life and it has the power of death.

What are you saying about your marriage? What are you saying about your job? What are you saying about your finances? What are you saying about your children? What are you saying about your church? Many of you are sitting around waiting for God to do something in your lives, but you're short-circuiting it all by the way you talk. You say you believe it but then deny it by your complaints. How many times have I heard somebody say, "Well, I'm praying God will save my marriage, but it's the pits?" They say, "I'm praying my kids will make the right choices, oh, but sometimes I think they're hopeless." Or, "I believe that God has the power to allow me to break those bad habits, but that's just the way I am." Don't short-circuit God's power by your thoughts and utterances. God's power is not automatic. You must first admit you need His power, believe in faith that He can supply your need, and speak and act in faith.

निर्बलता में सिद्ध होती है।" इस कारण मैं और भी आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा, ताकि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया रहे।" (2 कुरिन्थियों 12:9) यदि आप अपनी कमजोरी को स्वीकार नहीं करेंगे, तो परमेश्वर की शक्ति को भूल जाइए। जब तक आप आत्मनिर्भर होने का ढोंग करते हैं तब तक आप अपने जीवन में परमेश्वर की शक्ति को शॉर्ट-सर्किट करते हैं। जब तक आपको लगता है कि मुझे पूंछ से जीवन मिला है, तब तक भगवान पीछे हटेंगे और कहेंगे, "ठीक है, इसे ले लो। देखते हैं कि यह तुम्हारे साथ क्या करता है।"

बी। विश्वास में विश्वास करो। यही कुंजी है—इसे लिख लें और इसे अपने हृदय पर अंकित कर लें। हमारे जीवन में परमेश्वर की शक्ति को प्रसारित करने की कुंजी विश्वास है। यीशु ने सिखाया, "विश्वास करने वाले के लिए सब कुछ हो सकता है" (मरकुस 9:23) और "तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो जाएगा।" (मत्ती 9:29)

यदि यह सच है, और यह है, तो दो महत्वपूर्ण प्रश्न स्वाभाविक रूप से अनुसरण करते हैं: 1) आप अपने जीवन में परमेश्वर से क्या करने की उम्मीद कर रहे हैं? और 2) आप अपने जीवन में परमेश्वर से क्या करने की उम्मीद कर रहे हैं? क्योंकि वह विश्वास के अनुसार कार्य करता है, परमेश्वर के पास असीमित शक्ति है। आइए हम उससे अपनी अपेक्षा के अनुसार उसे सीमित न करें। कई बार, हमने इस बारे में बात की है, लेकिन याद रखें कि ईश्वर परम शक्ति स्रोत हैं और विश्वास हमारा संबंधक है। विश्वास हमारी नाली है, और परमेश्वर हमारे जीवन में जितनी शक्ति का संचार करता है, वह सीधे उस विश्वास की मात्रा से संबंधित है जिसका उपयोग हम जोड़ने के लिए कर रहे हैं।

दूसरे दिन मेरी बैटरी खत्म हो गई, या कुछ मर गया, कार शुरू नहीं होगी। मैंने साथी को खींच कर कहा, "मेरे पास कुछ जम्पर केबल हैं।" वे ये छोटी-छोटी पुरानी छोटी-छोटी चीजें थीं जो टिनफॉयल से बनी थीं। उसने उन्हें अपनी बैटरी और मेरी बैटरी से जोड़ दिया और यह अभी भी क्रैक नहीं होगा। मैंने सोचा, हम इसे बिल्कुल भी हल नहीं कर सकते। फिर यह दूसरा साथी ऊपर आया। उनके पास एक पिक-अप ट्रक था। उसके पास सब कुछ था। उसने जम्पर केबल निकाली जिसे हम दोनों को उठाना पड़ा। वे बड़े केबल थे, उन्होंने कहा, "मुझे उन्हें तुम्हारे लिए हुक करने दो, बेटा।" मैंने कहा, "ठीक है।" निश्चित रूप से, उसने उन्हें पकड़ लिया और वरूम! क्या अंतर था? अंतर न तो प्राप्तकर्ता और शक्ति स्रोत में था, यह संबंध में था। यह उस संबंध की ताकत में था।

हममें से बहुतों का विश्वास 110-आउटलेट के लिए एक छोटे से बिजली के तार की तरह है और परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास केबल हो ताकि हम वास्तव में शक्ति को जान सकें। विस हेफनर ने एक बार कहा था, "ईश्वर ने हमें परमाणु बम की

d. Act in faith. This point is vital and most people miss it. If you want God's power in your life, you step out in advance before the power is released. See, God wants you to take an action for him before you ever feel anything. Did you catch that? Somebody says, "Are you saying that I've got to act as if I have the power, even though I don't yet have the power, in order to get the power?" Yes. That's acting in faith. You go ahead and act in faith before you feel it and God rewards it. You don't wait for a feeling.

Some of you right now are waiting for a feeling. You're waiting for God to move you. "I'm waiting for a feeling in order to get involved in a ministry." "I'm waiting for that one sermon to suddenly just move me and I'll plug right in." Some are saying "I'm waiting for God to move me to give generously." "I'm waiting for God to move me to share my faith at work." "I'm waiting for God to give me the feeling to get my marriage in order." If the only time that you do things is when you feel like it, rest assured, the devil will make sure you never feel like it. He has tremendous influence over our emotions. You've got to act in faith. Take the step before you feel like it, whether you ever feel like it or not. Immaturity is living by your feelings, and maturity is living by faith, your commitments. So act now.

Many people miss God's blessing because they've never tried. If you don't try, you don't receive the power.

Do you remember when Peter had fished all night without catching anything? Jesus said, "Peter, I want you to go out, launch out into the deep, (and remember those great words) and cast your nets." (Luke 5:6) Peter said "Lord, we've fished all night. They're not biting." He said, "I didn't ask if they were biting, I didn't ask if you felt like going, I said launch out into the deep." What did Peter do? He launched out into the deep and the nets began to break and the boats began to sink. You act in faith.

The children of Israel were finally going to cross the Jordan River into the Promised Land under Joshua. They put the Ark of the Covenant on the shoulders of the priests carrying it by the poles and Joshua said, "Walk, walk right into the water and as you walk into the water don't worry, it's going to subside." I've often wondered what they thought as they got close to the edge and they felt the water hit their toes, then their ankles and maybe mid-calf. Were they wondering, "What are we doing here?" But all of a sudden the water just backed up and they walked across on dry ground.

Peter in Matthew 14 saw the Lord walking on the water. He stepped out and he acted in faith receiving the

शक्ति दी है और फिर भी हम पटाखों वाला जीवन जीते हैं।" भगवान के लिए कोई भी समस्या बड़ी नहीं होती। ऐसा कोई अनुरोध नहीं है जिसे वह संभाल नहीं सकता। फिर मुद्दा मेरी आस्था है। मैं क्या विश्वास करने को तैयार हूँ? यदि आप अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ्य को देखना चाहते हैं, तो आपको पहले विश्वास में विश्वास करना होगा।

सी। विश्वास में बोलो। मैं देखता हूँ कि अधिकांश प्रचारक इसे छोड़ देते हैं। पॉल कहते हैं, "यह लिखा है: (और वह भजन 116 उद्धृत करता है) 'मैंने विश्वास किया, इसलिए मैंने बात की है।' उसी विश्वास की आत्मा के साथ हम भी विश्वास करते हैं और इसलिए बोलते हैं।" (2 कुरिन्थियों 4:13) पौलुस कहता है, "विश्वास करने के बाद तुझे बोलने की भी आवश्यकता है।" आपको अपने विश्वास को मौखिक रूप से व्यक्त करना चाहिए। एक घोषणा अवश्य होनी चाहिए कि आप परमेश्वर को क्या करते देखने का इरादा कर रहे हैं। आप इसे सिर्फ नहीं सोचते हैं; आप इसकी घोषणा करते हैं और इसे बोलते हैं। दोस्तों, लक्ष्य यही होता है। एक लक्ष्य विश्वास का एक बयान है। अब यदि आप ईश्वर में विश्वास नहीं करते हैं या यदि आप नुस्खे का पालन नहीं कर रहे हैं, तो आपका लक्ष्य केवल अपनी शक्ति में विश्वास का कथन है। लेकिन एक अच्छी तरह से तैयार किया गया लक्ष्य ईश्वर की शक्ति में विश्वास का बयान हो सकता है और होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि भगवान मेरे जीवन को इस तरह से आशीर्वाद दे सकते हैं और देंगे।

अच्छी तरह से निर्मित लक्ष्य विश्वास के कथन हैं। आपके लक्ष्यों का आकार आपके ईश्वर के आकार से निर्धारित होता है। आप मुझे अपने जीवन में लक्ष्य दिखाएं और मैं आपको दिखाऊंगा कि आप वास्तव में ईश्वर की शक्ति में क्या सोचते हैं। आप में से कितने लोगों का लक्ष्य है "मुझे विश्वास है कि परमेश्वर सैकड़ों लोगों को आशीष देने के लिए मेरा उपयोग करेगा।" वह कर सकता है। सवाल यह है कि क्या आप ऐसा मानते हैं और क्या आप ऐसा कहेंगे? यदि आपके पास एक परिवार है जो अभी टूटा हुआ है, तो क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर आपको आपके परिवार में प्रकाश और आशीष की चिंगारी बनने के लिए उपयोग कर सकता है? वह कर सकता है। क्या आप मानते हैं कि? क्या आप इसे कहेंगे? दोस्तों, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप अपने विश्वास की घोषणा करें। जेम्स कहते हैं, "जीभ आपके जीवन की पतवार है। यह दिशा तय करती है, यह पाठ्यक्रम को चार्ट करती है।" इसमें जीवन की शक्ति है और इसमें मृत्यु की शक्ति है।

आप अपनी शादी के बारे में क्या कह रहे हैं? आप अपनी नौकरी के बारे में क्या कह रहे हैं? आप अपने वित्त के बारे में क्या कह रहे हैं? आप अपने बच्चों के बारे में क्या कह रहे हैं? आप अपने चर्च के बारे में क्या कह रहे हैं? आप में से बहुत से लोग अपने जीवन में परमेश्वर के कुछ करने की प्रतीक्षा में आस-पास बैठे हैं, लेकिन आप जिस तरह से बात करते हैं,

power to walk on that water. Many of you are waiting thinking you are waiting on God. But, God is waiting on you. The power is there to heal whatever is really injurious in your life. He just wants you to admit you need it, believe in faith, speak in faith, then step out and act in faith. "Is anything too difficult for me?" No, nothing is too difficult for God. Amazing Grace #1272 Steve Flatt July 14, 1996

Chapter 2

If A Man Dies, Will He Live Again?

"If a man dies, will he live again?" (Job 14:14) is a question that has haunted the mind of every man and woman who has ever lived. From the dawn of creation it has been an enigma to the mind of man. Solomon wrote Ecclesiastes something like his journal. He was perplexed; he had more questions than answers. "All go to the same place, all come from dust and to dust all return. Who knows if the spirit of man rises upward?" (Ecclesiastes 3:20) Though Job offered no answer to his question and though Solomon went through a period where he had more questions than answers, the Scripture gives an emphatically clear answer to the question if a man dies, will he live again? YES! YES! A hundred times YES!

"For God so loved the world that he gave his only begotten Son that whosoever believeth on him would not perish, but have" (What?) "Everlasting life." (John 3:16) Jesus told Martha, the sister of Lazarus who had just died, "I am the resurrection and the life. He who believes in me will live, even though he dies; and whoever lives and believes in me will never die." (John 11:25) He said to his disciples, I am about to leave you but "In my Father's house are many rooms; if it were not so, I would have told you. I am going there to prepare a place for you. And if I go and prepare a place for you, I will come back and take you to be with me that you also may be where I am." (John 14:2-3)

1 Corinthians 15 and 1 Thessalonians 4 are great chapters about the return of Jesus. Finally, the aged Apostle John is given the opportunity in a vision to see heaven itself. He gives it a magnificent description; I guess the best you can do in human language. My favorite part is his description of Jesus' Church as a bride beautifully dressed for her husband. (Revelation 20:1-7) If a man dies, will he live again? Oh, yes he will.

But we know much of our world doesn't believe that, not even much of the religious world believes it. A Gallup poll that looked at our religious beliefs as a country indicated that 94 percent of all Americans believe in God. That's encouraging, isn't it? I was surprised that 84 percent of America believes that Jesus is the Son of God, not just a great man. But less than 70 percent of America believe that there will be a heaven and significantly less than half

उससे सब कुछ छोटा कर रहे हैं। आप कहते हैं कि आप इसे मानते हैं लेकिन फिर अपनी शिकायतों से इनकार करते हैं। मैंने कितनी बार किसी को यह कहते सुना है, "ठीक है, मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि भगवान मेरी शादी को बचा ले, लेकिन यह गढ़े हैं?" वे कहते हैं, "मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि मेरे बच्चे सही विकल्प चुनेंगे, ओह, लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि वे निराश हैं।" या, "मुझे विश्वास है कि परमेश्वर के पास मुझे उन बुरी आदतों को छोड़ने की अनुमति देने की शक्ति है, लेकिन मैं ऐसा ही हूँ।" अपने विचारों और कथनों से परमेश्वर की शक्ति को शॉर्ट-सर्किट न करें। ईश्वर की शक्ति स्वचालित नहीं है। आपको पहले स्वीकार करना होगा कि आपको उसकी शक्ति की आवश्यकता है, विश्वास में विश्वास करें कि वह आपकी आवश्यकता को पूरा कर सकता है, और विश्वास में बोलें और कार्य करें।

डी। विश्वास में कार्य करें। यह बिंदु महत्वपूर्ण है और ज्यादातर लोग इसे याद करते हैं। यदि आप अपने जीवन में परमेश्वर की सामर्थ्य चाहते हैं, तो आप सामर्थ्य के प्रकट होने से पहले ही कदम बढ़ा देते हैं। देखें, परमेश्वर चाहता है कि इससे पहले कि आप कुछ महसूस करें, आप उसके लिए एक कदम उठाएं। क्या आपने उसे पकड़ा? कोई कहता है, "क्या आप कह रहे हैं कि मुझे कार्य करना है जैसे कि मेरे पास शक्ति है, भले ही मेरे पास अभी तक शक्ति नहीं है, शक्ति प्राप्त करने के लिए?" हाँ। वह विश्वास में अभिनय कर रहा है। इससे पहले कि आप इसे महसूस करें आप आगे बढ़ते हैं और विश्वास में कार्य करते हैं और परमेश्वर इसका प्रतिफल देता है। आप एक भावना की प्रतीक्षा नहीं करते हैं।

आप में से कुछ अभी एक भावना की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप भगवान के स्थानांतरित होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। "मैं एक मंत्रालय में शामिल होने के लिए एक भावना की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" "मैं उस एक धर्मोपदेश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जो अचानक मुझे स्थानांतरित करे और मैं ठीक से जुड़ जाऊँ।" कुछ कह रहे हैं "मैं परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि वह मुझे उदारता से देने के लिए प्रेरित करे।" "मैं काम पर अपने विश्वास को साझा करने के लिए भगवान को प्रेरित करने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" "मैं अपनी शादी को व्यवस्थित करने के लिए भगवान की भावना देने के लिए इंतजार कर रहा हूँ।" यदि आप केवल उसी समय काम करते हैं जब आप ऐसा महसूस करते हैं, तो निश्चित रहें, शैतान यह सुनिश्चित करेगा कि आप कभी भी ऐसा महसूस न करें। हमारी भावनाओं पर उनका जबरदस्त प्रभाव है। आपको विश्वास में कार्य करना है। ऐसा महसूस करने से पहले ही कदम उठाएं, चाहे आप कभी ऐसा महसूस करें या न करें। अपरिपक्वता अपनी भावनाओं से जी रही है, और परिपक्वता विश्वास से जी रही है, आपकी प्रतिबद्धताएं। तो अब कार्य करें।

बहुत से लोग परमेश्वर की आशीष से चूक जाते हैं क्योंकि उन्होंने कभी कोशिश ही नहीं की। कोशिश नहीं करेंगे तो शक्ति नहीं मिलेगी।

believe that there is a literal hell.

Our religious culture has no room today for eternity. We have stripped faith of its eternal dimensions. Heaven has become just learning how to live the good life. Hell has just become the self-induced trauma that we have when we don't. We, who don't believe that sometimes, maybe even oft-times, act like we believe it. We become so absorbed with the propaganda of our culture, so absorbed in the quest for things and status, and so caught up with what I call the "Gospel of NOW," we tend to lose sight of eternity, don't we?

Have any of you ever seen that movie *Heaven Can Wait*? The plot of the movie was a professional football quarterback who was called home to heaven early in an accident. When he gets there in heaven, the angel talks to him and says, "Oh no, we've made a mistake." The whole plot of the movie is how can we get him back down on earth so he can play in the Super Bowl. I mean after all, who would want to go to heaven when you can play in the Super Bowl? Do you see how insidious it is? We Christians watching the movie were sitting there going, "Yes, Yes, get him back, get him back, get him back."

I think if the truth be told, we're a lot like little Tommy in the Sunday School class. The teacher asked "How many of you want to go to heaven?" Everybody raised their hand except little Tommy. The teacher looked at Tommy and said, "Tommy, don't you want to go to heaven one day?" He said, "Oh, one day. I thought you meant right now."

Oh yes, I want to go to heaven ONE day, like that one day I'm going on that African safari, one day I'll try sky diving, one day I'll really climb up and clean out the attic and that one day that down in our hearts we think will never really come.

We've lost sight of eternity. We've lost the depth of the meaning of Hebrews 9:27, "It is appointed unto man once to die and after that the judgment." We've lost the meaning of Acts 17:31, "Because he has fixed the day upon which he will judge the world with righteousness by a man whom he has appointed and of this he has given assurance by raising him from the dead." The resurrection of the dead means a lot of things, but here's one thing it means: The God who is able to raise Jesus up from the dead is able to judge the entire world based upon what they do with Jesus, The Christ.

When I was a boy growing up, I heard a lot of sermons about eternity, heaven and hell. It seemed like I heard more on hell. Maybe I just remembered those longer. I thought, if I ever get a chance to preach, I don't think I'm going to preach like that, I think I'm going to preach like Jesus preached. Then I grew up and I read the Bible. I found out that nobody preached more about heaven and hell than the man, Jesus of Nazareth.

क्या आपको याद है जब पतरस ने सारी रात बिना कुछ पकड़े मछली पकड़ी थी? यीशु ने कहा, "पतरस, मैं चाहता हूँ कि तुम बाहर जाओ, गहरे में जाओ, (और उन महान शब्दों को याद रखो) और अपना जाल डालो।" (लूका 5:6) पतरस ने कहा, "हे प्रभु, हम ने सारी रात मछली पकड़ी है। वे काटते नहीं।" उन्होंने कहा, "मैंने यह नहीं पूछा कि क्या वे काट रहे हैं, मैंने यह नहीं पूछा कि क्या आपको जाने का मन कर रहा है, मैंने कहा कि गहरे में बाहर निकलो।" पतरस ने क्या किया? वह गहरे में चला गया और जाल टूटने लगे और नावें डूबने लगीं। आप विश्वास से कार्य करें।

इस्राएल के बच्चे अंततः यरदन नदी को पार करके यहोशू के अधीन प्रतिज्ञा की भूमि में जाने वाले थे। उन्होंने वाचा के सन्दूक को डण्डोंके द्वारा उठाए हुए याजकोंके कन्धोंपर रखा, और यहोशू ने कहा, चल, सीधे जल में चल, और जब तू जल में चले, तब चिन्ता न करना, वह कम हो जाएगा। मैंने अक्सर सोचा है कि वे क्या सोचते हैं जब वे किनारे के करीब पहुँच गए और उन्होंने महसूस किया कि पानी उनके पैर की उंगलियों, फिर उनके टखनों और शायद पिंडली के मध्य में लगा। क्या वे सोच रहे थे, "हम यहाँ क्या कर रहे हैं?" लेकिन अचानक पानी वापस आ गया और वे सूखी जमीन पर चलने लगे।

मत्ती 14 में पतरस ने प्रभु को पानी पर चलते हुए देखा। वह बाहर निकला और उसने उस पानी पर चलने की शक्ति पाकर विश्वास में कार्य किया। आप में से बहुत से लोग यह सोचते हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं कि आप परमेश्वर की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन, भगवान आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। आपके जीवन में वास्तव में जो भी हानिकारक है उसे ठीक करने की शक्ति है। वह बस इतना चाहता है कि आप स्वीकार करें कि आपको इसकी आवश्यकता है, विश्वास में विश्वास करें, विश्वास में बोलें, फिर बाहर निकलें और विश्वास में कार्य करें। "क्या मेरे लिए कुछ भी मुश्किल है?" नहीं, भगवान के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। अमेज़िंग ग्रेस #1272 स्टीव फ्लैट 14 जुलाई 1996

अध्याय दो

अगर एक आदमी मर जाता है, तो क्या वह फिर से जीवित रहेगा?

"अगर एक आदमी मर जाता है, तो क्या वह फिर से जीवित रहेगा?" (अय्यूब 14:14) एक ऐसा प्रश्न है जिसने हर उस पुरुष और स्त्री के मन को परेशान किया है जो कभी जीवित रहे हैं। सृष्टि के प्रारंभ से ही यह मनुष्य के मन के लिए एक पहली रहा है। सुलैमान ने सभोपदेशक को अपनी पत्रिका की तरह कुछ लिखा। वह हैरान था; उनके पास उत्तर से अधिक प्रश्न थे। "सब एक ही स्थान को जाते हैं, सब मिट्टी से आते हैं और सब मिट्टी में मिल जाते हैं। कौन जानता है कि मनुष्य की आत्मा ऊपर की ओर उठे?" (सभोपदेशक 3:20) हालाँकि अय्यूब ने अपने प्रश्न का कोई उत्तर

If you don't believe it, read his statements in Matthew, Mark, Luke, and John. Nobody was calling his listeners more often to weigh temporal gain against eternal consequences than Jesus of Nazareth. Re-read the parables and the Sermon on the Mount. "What would it profit a man if he were to gain the whole world, but lose his own soul?" "What will a man give in exchange for his soul?" Jesus didn't come preaching about how to change the government and he lived in a corrupt one. He didn't come preaching about how to be healthy and wealthy. He didn't come to try and tell men how to talk in tongues. He came to teach about eternity and he did it with force. This might surprise you, but nobody taught more about hell than Jesus the Christ.

Who was it that said, "Why do you fear the one who can destroy the body when you ought to fear the one who can destroy both the body and soul in hell?" See the former is "NOW" thinking; the other is "ETERNITY" thinking. We do a grave injustice to ourselves and to this world if we don't answer Job's question: "If a man dies, will he live again?" The answer is: Yes, he will. But where? See the question isn't whether eternity or not, the question is what kind of eternity, Heaven or Hell.

There is one key passage about life after our time here on earth. "There was a rich man who was dressed in purple and fine linen and lived in luxury every day. At his gate was laid a beggar named Lazarus, covered with sores and longing to eat what fell from the rich man's table. Even the dogs came and licked his sores. The time came when the beggar died and the angels carried him to Abraham's side. The rich man also died and was buried. In hell, where he was in torment, he looked up and saw Abraham far away, with Lazarus by his side. So he called to him, 'Father Abraham, have pity on me and send Lazarus to dip the tip of his finger in water and cool my tongue, because I am in agony in this fire.' But Abraham replied, 'Son, remember that in your lifetime you received your good things, while Lazarus received bad things, but now he is comforted here and you are in agony. And besides all this, between us and you a great chasm has been fixed, so that those who want to go from here to you cannot, nor can anyone cross over from there to us.' He answered, 'Then I beg you, father, send Lazarus to my father's house, for I have five brothers. Let him warn them, so that they will not also come to this place of torment.' Abraham replied, 'They have Moses and the Prophets; let them listen to them.' 'No, father Abraham,' he said, 'but if someone from the dead goes to them, they will repent.' He said to him, 'If they do not listen to Moses and the Prophets, they will not be convinced even if someone rises from the dead.'" (Luke 16:19-31)

Five elementary truths about eternity can be found in the above text.

1. **Death will not end your existence.**

नहीं दिया और यद्यपि सुलैमान एक ऐसी अवधि से गुज़रा जहाँ उसके पास उत्तर से अधिक प्रश्न थे, पवित्रशास्त्र इस प्रश्न का सशक्त रूप से स्पष्ट उत्तर देता है कि यदि एक मनुष्य मर जाता है, तो क्या वह फिर से जीवित होगा? हाँ! हाँ! सौ बार हाँ!

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु पाए" (क्या?) "अनन्त जीवन।" (यूहन्ना 3:16) यीशु ने लाजर की बहन मार्या से कहा, जो अभी-अभी मरी थी, "मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ। जो मुझ पर विश्वास करता है वह मरने पर भी जीवित रहेगा; और जो कोई जीवता है और मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी न मरेगा।" (यूहन्ना 11:25) उसने अपने चेलों से कहा, मैं तुम्हें छोड़ देने पर हूँ परन्तु "मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं; यदि न होते, तो मैं बता देता।" मैं वहाँ तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊंगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो। (यूहन्ना 14:2-3)

1 कुरिन्थियों 15 और 1 थिस्सलुनीकियों 4 यीशु की वापसी के बारे में महान अध्याय हैं। अंत में, वृद्ध प्रेरित यूहन्ना को एक दर्शन में स्वयं स्वर्ग को देखने का अवसर दिया जाता है। वह इसका एक शानदार वर्णन करता है; मुझे लगता है कि आप मानव भाषा में सबसे अच्छा कर सकते हैं। मेरा पसंदीदा हिस्सा यीशु के चर्च का वर्णन है जो एक दुल्हन के रूप में अपने पति के लिए खूबसूरती से तैयार होती है। (प्रकाशितवाक्य 20:1-7) यदि मनुष्य मर जाए, तो क्या वह फिर से जीवित होगा? ओह, हाँ वह करेगा।

लेकिन हम जानते हैं कि हमारी दुनिया का अधिकांश हिस्सा इस पर विश्वास नहीं करता है, यहाँ तक कि धार्मिक दुनिया के अधिकांश लोग भी इस पर विश्वास नहीं करते हैं। एक गैलप पोल जिसने एक देश के रूप में हमारे धार्मिक विश्वासों को देखा, ने संकेत दिया कि 94 प्रतिशत अमेरिकी ईश्वर में विश्वास करते हैं। यह उत्साहजनक है, है ना? मुझे आश्चर्य हुआ कि अमेरिका के 84 प्रतिशत लोगों का मानना है कि यीशु केवल एक महान व्यक्ति नहीं, बल्कि ईश्वर के पुत्र हैं। लेकिन अमेरिका के 70 प्रतिशत से भी कम लोगों का मानना है कि स्वर्ग होगा और आधे से भी कम लोगों का मानना है कि वास्तव में नर्क है।

हमारी धार्मिक संस्कृति में अनंत काल के लिए आज कोई जगह नहीं है। हमने इसके शाश्वत आयामों की आस्था को छीन लिया है। अच्छा जीवन जीने का तरीका सीखना ही स्वर्ग बन गया है। नरक सिर्फ आत्म-प्रेरित आघात बन गया है जो हमारे पास है जब हम नहीं करते हैं। हम, जो यह नहीं मानते कि कभी-कभी, यहाँ तक कि कई बार, ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे हम विश्वास करते हैं। हम अपनी संस्कृति के प्रचार में इतने मग्न हो जाते हैं, चीजों और हैसियत की खोज में इतने मग्न हो जाते हैं, और जिसे मैं "अभी का सुसमाचार" कहता हूँ, उसमें फँस जाते हैं, हम अनंत काल की दृष्टि खो देते हैं, है ना?

क्या आप में से किसी ने कभी वह फिल्म हेवन कैन वेट देखी है?

If a man dies, will he live again? You can be sure of it. You know death is the earth's great equalizer. I don't care who you are or what you have, you won't escape it. When we hear of a poor person dying, somebody who lives in the slums, some beggar or homeless person, it doesn't seem to register. But when we hear that a rich person died overnight of a heart attack, we are aghast. That is because we tend to associate people with what they have. Since a rich person has a lot it's going to last for a long time. Let me tell you something, you're not going to die a rich man. You're not going to die a poor man. You're just going to die a man. What you have won't make one shred of difference. You leave all your earthly wealth, fame, honor and position behind at death. Death is earth's great equalizer.

Death doesn't end your existence. When you die you will have consciousness. If I read this correctly, Abraham, the rich man and Lazarus, they knew who they were and they knew where they were. You will have identity. The rich man was the rich man, Lazarus was Lazarus, Abraham was Abraham and Isaac was Isaac. In fact you will still be you. Apparently, there will be some degree of memory. Did you notice how Abraham said to the rich man, "Remember when you lived, you had your fine things." Death doesn't end your existence.

The Sadducees were a sect of the Jews who did not believe in the resurrection. They were always trying to trip Jesus up. So they asked him "Lord, teacher, tell us this. If a man had a wife and he dies, and then she marries his brother, then he dies, and then she marries another brother. Well let's just say that goes on 10 times, then in the resurrection, whose wife will she be?" When they finished the question, Jesus looked at them and said, "You've got two problems. You don't really believe in the power of God and you don't even know the Scripture." He said, "Haven't you read how the Almighty said, 'I AM the God of Abraham, Isaac, and Jacob.'" And he said that long after they died. He didn't say I WAS the God of Abraham, Isaac, and Jacob. "I am the God of Abraham, Isaac, and Jacob, and I'm not the God of the dead, I'm the God of the living." Death does not end your existence.

2. There will be an immediate separation.

There will be an immediate separation. I gather that not only from the rich man and Lazarus but also from Matthew 25 where Jesus talks about separating the sheep and the goats into two separate groups, those who will come in and receive the blessings and those who will be outcast. Now I know some people can't believe that our loving Almighty God would send people to hell.

I've searched my Bible through and through. I find no place in Scripture where the Bible says God sends anybody to hell. I find the exact opposite. "God is patient, not wanting anybody to perish." (2 Peter 3:9) The only reason this old world is still standing today is because God knows that

फिल्म का प्लॉट एक पेशेवर फुटबॉल क्वार्टरबैक था, जिसे एक दुर्घटना में स्वर्ग में घर कहा जाता था। जब वह वहाँ स्वर्ग में पहुँचता है, तो स्वर्गदूत उससे बात करता है और कहता है, "अरे नहीं, हमसे गलती हो गई है।" फिल्म का पूरा प्लॉट यह है कि हम उसे धरती पर वापस कैसे ला सकते हैं ताकि वह सुपर बाउल में खेल सके। मेरा मतलब है कि जब आप सुपर बाउल में खेल सकते हैं तो कौन स्वर्ग जाना चाहेगा? क्या आप देखते हैं कि यह कितना कपटी है? हम ईसाई फिल्म देख रहे थे और वहाँ बैठे जा रहे थे, "हाँ, हाँ, उसे वापस लाओ, उसे वापस लाओ, उसे वापस लाओ।"

मुझे लगता है कि अगर सच कहा जाए, तो हम संडे स्कूल की कक्षा में छोटे टॉमी की तरह हैं। शिक्षक ने पूछा "आप में से कितने लोग स्वर्ग जाना चाहते हैं?" छोटे टॉमी को छोड़कर सभी ने हाथ उठाया। शिक्षक ने टॉमी की ओर देखा और कहा, "टॉमी, क्या तुम एक दिन स्वर्ग नहीं जाना चाहते हो?" उसने कहा, "ओह, एक दिन। मुझे लगा कि तुम्हारा मतलब अभी है।"

अरे हाँ, मैं एक दिन स्वर्ग जाना चाहता हूँ, जैसे कि एक दिन मैं उस अप्रफ्रीकी सफारी पर जा रहा हूँ, एक दिन मैं स्काई डाइविंग की कोशिश करूँगा, एक दिन मैं वास्तव में ऊपर चढ़ूँगा और अटारी को साफ करूँगा और वह एक वह दिन जब हमारे दिल में हम सोचते हैं कि वास्तव में कभी नहीं आएगा।

हमने अनंत काल की दृष्टि खो दी है। हमने इब्रानियों 9:27 के अर्थ की गहराई को खो दिया है, "मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" हमने प्रेरितों के काम 17:31 का अर्थ खो दिया है, "क्योंकि उस ने वह दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है, और उसे मरे हुआँ में से जिलाकर इस बात का निश्चय दिया है।" मरे हुआँ के पुनरुत्थान का अर्थ बहुत सी बातों से है, लेकिन यहाँ इसका एक अर्थ है: परमेश्वर जो यीशु को मरे हुआँ में से जिलाने में सक्षम है, वह पूरी दुनिया का न्याय इस आधार पर कर सकता है कि वे यीशु, मसीह के साथ क्या करते हैं।

जब मैं एक लड़का था, बड़ा हो रहा था, मैंने अनंत काल, स्वर्ग और नरक के बारे में बहुत से उपदेश सुने। ऐसा लग रहा था जैसे मैंने नरक पर अधिक सुना। हो सकता है कि मैं अभी उन्हें लंबे समय तक याद रखूँ। मैंने सोचा, अगर मुझे कभी प्रचार करने का मौका मिला, तो मुझे नहीं लगता कि मैं उस तरह से प्रचार करने जा रहा हूँ, मुझे लगता है कि मैं यीशु की तरह प्रचार करने जा रहा हूँ। फिर मैं बड़ा हुआ और मैंने बाइबल पढ़ी। मुझे पता चला कि स्वर्ग और नरक के बारे में नासरत के यीशु से अधिक किसी ने प्रचार नहीं किया।

यदि आप इस पर विश्वास नहीं करते हैं, तो मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में उसके कथनों को पढ़िए। नासरत के यीशु की तुलना में कोई भी अपने श्रोताओं को शाश्वत परिणामों के खिलाफ लौकिक लाभ को तौलने के लिए नहीं बुला रहा था। दृष्टान्तों और पहाड़ी उपदेश को फिर से पढ़ें। "एक आदमी को क्या फायदा होगा अगर वह पूरी दुनिया हासिल करे, लेकिन अपनी आत्मा खो

somebody is going to come to Jesus today, and he wants them as part of the kingdom. God says, "...I have no pleasure in the death of the wicked..." (Ezekiel 33:11) I confess that is one way I'm far short of God. There are times when I read of somebody getting on an airplane as a terrorist with guns and bomb traps and maybe they kill a couple of hostages and are holding the rest. Every now and then a SWAT team will come and they'll shoot them, just shoot them right there. There is a part of me when I hear that, I say, "YES. Good. Get the rest of them." Because I fear they won't come to justice, otherwise. But not God, my God has no joy in the death of a wicked person. Do you know why? Because when that wicked person dies, he or she is lost. God doesn't send anyone to hell. When someone rejects Jesus Christ and Heaven, they condemn themselves and choose Hell.

"For God so loved the world that he sent his only begotten Son, that whosoever believes on him will not perish but have everlasting life." (John 3:16) The next verse says, "For he didn't come to condemn the world, but he came to save the world through himself." Folks, get this idea out of your mind. It is not that at your death God will choose to send you to some realm of death, you have chosen the death lifestyle for yourself right now. All God is going to do on that great judgment day is to declare the choices that men and women have been making for themselves all along. That's the reality. If you think God wants to send anybody to hell, re-look at the cross. If there is ever proof that our God will go out of his way to make sure anybody and hopefully everybody will be saved, it's at the cross of Jesus Christ. But for those who are not washed by the blood that's offered there, they will be on the wrong end of an immediate separation.

3. Every man's eternal destiny is unchangeable.

If heaven and hell, if paradise and torment have anything in common, it is their unalterable fixedness, mercy comes before the grave. I've searched my Bible and found absolutely no validity that you could pay or pray themselves or anyone else into heaven after death. In fact in the story about the rich man and Lazarus, Abraham looked at that rich man and in a Greek tense says, "There has been and remains yet fixed a gulf between us that no man can span." In a sense God didn't dig that chasm the rich man did. He did it during his life. He lived his life separate from people like Lazarus, didn't he? His whole life, he said, "Lazarus, I'm over here and you're over there, don't you bother me and I won't bother you. I don't want to have anything to do with a poor old wretch like you." Really all God did when the rich man died is to keep what he had chosen intact.

I've already alluded to in some sense and in many ways the future life is just the present life identified continued. What's interesting to me is that even in torment, even in hell, the rich man still saw Lazarus as a beggar and servant.

दे?" "मनुष्य अपनी आत्मा के बदले में क्या देगा?" यीशु इस बात का प्रचार करने नहीं आया था कि सरकार को कैसे बदलना है और वह भ्रष्ट में रहता था। वह यह प्रचार करने नहीं आया था कि स्वस्थ और धनी कैसे बनें। वह यह कोशिश करने और लोगों को यह बताने नहीं आया था कि अन्यभाषा में कैसे बात करनी चाहिए। वह अनंत काल के बारे में शिक्षा देने आया था और उसने इसे बलपूर्वक किया। यह आपको आश्चर्यचकित कर सकता है, परन्तु नरक के बारे में यीशु मसीह से अधिक किसी ने नहीं सिखाया।

वह कौन था जिसने कहा, "जो शरीर को नष्ट कर सकता है, उससे तुम क्यों डरते हो, जबकि तुम्हें उससे डरना चाहिए जो शरीर और आत्मा दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है?" पूर्व देखें "अब" सोच; दूसरा "अनंत काल" सोच है। यदि हम अघ्यूब के इस प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं: "यदि मनुष्य मर जाए, तो क्या वह फिर जीवित होगा?" उत्तर है: हाँ, वह करेगा। पर कहाँ? देखिए सवाल यह नहीं है कि अनंत काल है या नहीं, सवाल यह है कि अनंत काल कैसा है, स्वर्ग या नर्क।

यहाँ पृथ्वी पर हमारे समय के बाद जीवन के बारे में एक महत्वपूर्ण मार्ग है। "एक धनी मनुष्य था जो बैजनी कपड़े और मलमल पहिनता और प्रति दिन सुख-विलास में रहता था। लाज़र नाम का एक भिखारी उसके फाटक पर रखा रहता था, जो घावों से भरा हुआ था, और वह धनवान की मेज से गिरा हुआ खाना चाहता था। यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। वह समय आया जब भिखारी मर गया और स्वर्गादूत उसे इब्राहीम के पास ले गए। धनी व्यक्ति भी मरा और गाड़ा गया। अधोलोक में, जहाँ वह पीड़ा में था, उसने ऊपर देखा और इब्राहीम को दूर देखा, उसके पास लाजर था। इसलिए उसने उसे पुकारा, पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करो और लाजर को भेजो कि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में डुबाकर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस आग में तड़प रहा हूँ।" परन्तु इब्राहीम ने उत्तर दिया, 'हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और लाजर बुरी वस्तुएं प्राप्त कर चुका है। परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। और इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है, यहां से जो यहां से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से उस पार हमारे पास आ सके। उसने उत्तर दिया, 'तो मैं तुमसे विनती करता हूँ, पिता, लाजर को मेरे पिता के घर भेज दो, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं। वह उन्हें चिता दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।' इब्राहीम ने उत्तर दिया, 'उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; उन्हें उनकी बात सुनने दो। 'नहीं, पिता अब्राहम,' उन्होंने कहा, 'लेकिन अगर मृतकों में से कोई उनके पास जाता है, तो वे पश्चाताप करेंगे।' उस ने उस से कहा, यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुएों में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे।'" (लूका 16:19-31) हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है, ताकि जो यहां से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से उस पार हमारे पास आ सके। उसने उत्तर दिया, 'तो मैं तुमसे विनती करता हूँ, पिता, लाजर को मेरे पिता के घर भेज दो, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं। वह उन्हें चिता दे, ऐसा न हो कि वे भी

He looked over at Abraham and said, "Abraham, tell Lazarus to go down there, get me some water and bring that water back here." He still saw him as a servant. Every man's eternal destiny is unchangeable after death.

4. The righteous will receive comfort.

I suspect it is more than coincidental that we don't know the name of the rich man, but we know the name of Lazarus even before he died. That kind of indicates to me that God knew all along who the important one was, didn't he? Now I suspect that when the rich man died he had one elaborate funeral. There were flowers everywhere and memorials given to charities in his name, they probably lined the synagogue; the mayor was there and maybe even the procurator of Jerusalem. I imagine everybody was there for his funeral. But all it says about Lazarus is he died. It doesn't even say he is buried. I suspect they threw him out in old Potter's field. But I know for a fact Lazarus had one thing at his funeral that the rich man didn't have. He had angels. Angels carried him to Abraham's bosom. Suddenly, he is the affluent one. Death was the best thing that ever happened to Lazarus.

I've said this many times at funerals, but I want you to hear it while you're alive, okay? I'm convinced that when you are baptized into Christ, you have already experienced the only death of any significance you ever need to experience. "Don't you know that all of us who were baptized into Christ Jesus were baptized into his death? (Romans 6:3) That's the saving power of this universe. Galatians 3 states that when we are baptized into Christ, we are clothed in him. 1 Thessalonians 4:14 says, for since "We believe that Jesus died and rose again and so we believe that God will bring with Jesus those who have fallen asleep in him." Did you notice those two little words, "IN HIM?" The question is not: Are you going to fall asleep? Are you going to die? If the Lord tarries long enough, everybody is going to die. The question is: Are you going to fall asleep IN HIM? When we die with Christ in immersion, baptism, and are raised to walk in a newness of life, we become IN, HIM, CHRIST. We've died the only death of any significance. We have the promise of Scripture that when we sleep, we will be raised to experience comfort and peace.

5. The unrighteous will experience agony.

In torment, it was the rich man who became the beggar to the point that even one drop of cold water was worth begging for. I'm not attempting to graphically or physically describe hell. I know that from what we've just read, the rich man was in pain. He had the pain of remembering opportunity that he had ignored. He had the pain of knowing the fate of others who were destined to his same fate, his brothers.

I can't with a finite mind describe exactly what hell will be like. But there were three things that Jesus constantly associates with hell throughout his teachings. He talks

इस पीड़ा की जगह में आएँ।' इब्राहीम ने उत्तर दिया, 'उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; उन्हें उनकी बात सुनने दो। 'नहीं, पिता अब्राहम,' उन्होंने कहा, 'लेकिन अगर मृतकों में से कोई उनके पास जाता है, तो वे पश्चाताप करेंगे।' उस ने उस से कहा, यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मेरे हुआँ में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे।" (लूका 16:19-31) हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई ठहराई गई है, ताकि जो यहां से तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सकें, और न कोई वहां से उस पार हमारे पास आ सके। उसने उत्तर दिया, 'तो मैं तुमसे विनती करता हूँ, पिता, लाजर को मेरे पिता के घर भेज दो, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं। वह उन्हें चिता दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।' इब्राहीम ने उत्तर दिया, 'उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; उन्हें उनकी बात सुनने दो। 'नहीं, पिता अब्राहम,' उन्होंने कहा, 'लेकिन अगर मृतकों में से कोई उनके पास जाता है, तो वे पश्चाताप करेंगे।' उस ने उस से कहा, यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मेरे हुआँ में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे।" (लूका 16:19-31) लाजर को मेरे पिता के घर भेज दो, क्योंकि मेरे पांच भाई हैं। वह उन्हें चिता दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की जगह में आएँ।' इब्राहीम ने उत्तर दिया, 'उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; उन्हें उनकी बात सुनने दो। 'नहीं, पिता अब्राहम,' उन्होंने कहा, 'लेकिन अगर मृतकों में से कोई उनके पास जाता है, तो वे पश्चाताप करेंगे।' उस ने उस से कहा, यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मेरे हुआँ में से कोई जी भी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे।" (लूका 16:19-31)

अनंत काल के बारे में पाँच प्राथमिक सत्य उपरोक्त पाठ में पाए जा सकते हैं।

1. मृत्यु आपके अस्तित्व को समाप्त नहीं करेगी।

अगर एक आदमी मर जाता है, तो क्या वह फिर से जीवित रहेगा? आप इसके बारे में सुनिश्चित हो सकते हैं। आप जानते हैं कि मृत्यु पृथ्वी की महान तुल्यकारक है। मुझे परवाह नहीं है कि आप कौन हैं या आपके पास क्या है, आप इससे बच नहीं पाएँगे। जब हम सुनते हैं कि कोई गरीब मर रहा है, कोई झुग्गी में रहता है, कोई भिखारी है, कोई बेघर है, तो लगता ही नहीं है। लेकिन जब हम सुनते हैं कि एक अमीर आदमी की रातों-रात दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई, तो हम दंग रह जाते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम लोगों को उनके पास जो कुछ है उससे जोड़ते हैं। चूंकि एक अमीर व्यक्ति के पास बहुत कुछ होता है तो यह लंबे समय तक चलने वाला होता है। मैं तुम्हें एक बात बता दूँ, तुम एक अमीर आदमी नहीं मरने जा रहे हो। तुम एक गरीब आदमी नहीं मरने जा रहे हो।

about fire, weeping and gnashing of teeth. How utterly presumptuous is that any one of us to act like that wouldn't matter or that it doesn't exist.

All of us need to ask some serious questions about who we are and where we're going.

Consider the future. Get away from the "Gospel of NOW" and think in light of eternity. The devil's oldest tool is to get man to think about right now. Remember when Esau came in after a three-day hunt and Jacob was cooking up some stew, he said, "Let me have some stew, Jacob." Jacob said, "Okay, but I want your birthright." Do you think Esau thought that through? He wasn't thinking about forever. He thought, I'm hungry and I want it right now. What was David thinking when he stood on his roof and looked down and saw Bathsheba? Do you think he was thinking about the long term? Do you think he thought about any consequences, especially any eternal consequences? All he thought about was I want that woman and I want her right now. All Judas was thinking about when he betrayed the Son of God was not the fact that there would never be another family to name a male child, Judas, again. He was thinking about 30 pieces of silver would spend real good right now.

Paul has one of the greatest and most simple statements I've ever heard, "So we look not to the things which are seen, but the things which are unseen. For the things which are seen are temporary. And the things which are not seen are eternal." (2 Corinthians 4:18) If you could come back 100 years from today and stand in the very spot where you are standing, I doubt that you would see anything you can see right now. If you can see it, it's temporary. If you can't see it, it's eternal. Those invisible things are things like God's love. That's why nothing can separate us from God's love. (Romans 8:35) Or like the church, nobody can lay their eyes on the whole church, except God. The gates of Hades, the grave, will not prevail against the church. Your soul is invisible, too. We see the body is going to return to the dust from whence it came, but not the soul that animates, gives life to every one of our bodies. The real you, is going to live forever somewhere. **Think in light of the future.**

Walk in light of Scripture. The rich man made two mistakes, he was selfish, most of us tend to be, and he minimized the power of the written Word of God. If he hadn't done that, the Word of God would have changed him. Do you remember when he said, "Look, if you can't help me, send somebody to my brothers?" Abraham replied "Let them listen to Moses and the prophets." He said, "Oh, they won't listen to Moses and the prophets, but if someone came back from the dead, they'd listen." It closes with some of the most chilling words I've ever heard, "If they will not listen to Moses and the prophets, they will not listen to someone who has come back from the dead."

तुम बस एक आदमी मरने जा रहे हो। आपके पास क्या है, इससे रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ेगा। आप अपना सारा सांसारिक धन, प्रसिद्धि, सम्मान और पद मृत्यु के समय पीछे छोड़ देते हैं। मृत्यु पृथ्वी की महान तुल्यकारक है।

मृत्यु आपके अस्तित्व को समाप्त नहीं करती है। जब तुम मरोगे तो तुम्हें होश होगा। अगर मैं इसे सही ढंग से पढ़ूँ, इब्राहीम, अमीर आदमी और लाजर, वे जानते थे कि वे कौन थे और वे जानते थे कि वे कहाँ थे। आपकी पहचान होगी। धनी व्यक्ति धनवान था, लाजर लाजर था, इब्राहीम इब्राहीम था और इसहाक इसहाक था। वास्तव में तुम अब भी तुम ही रहोगे। जाहिर है, कुछ हद तक याददाश्त होगी। क्या आपने ध्यान दिया कि कैसे इब्राहीम ने अमीर आदमी से कहा, 'याद करो जब तुम जीवित थे, तो तुम्हारे पास अच्छी चीजें थीं। मृत्यु आपके अस्तित्व को समाप्त नहीं करती है।

सदूकी यहूदियों का एक पंथ था जो पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे। वे हमेशा यीशु को फँसाने की कोशिश कर रहे थे। तो उन्होंने उससे पूछा, "भगवान, शिक्षक, हमें यह बताओ। अगर किसी आदमी की पत्नी होती है और वह मर जाता है, और फिर वह अपने भाई से शादी करती है, तो वह मर जाती है, और फिर वह दूसरे भाई से शादी कर लेती है। ठीक है, चलो बस कहते हैं कि 10 बार चलता है।", फिर पुनरुत्थान में, वह किसकी पत्नी होगी?" जब उन्होंने प्रश्न पूरा कर लिया, तो यीशु ने उनकी ओर देखा और कहा, "तुम्हारी दो समस्याएँ हैं। तुम वास्तव में परमेश्वर की शक्ति में विश्वास नहीं करते और तुम पवित्रशास्त्र को भी नहीं जानते।" उसने कहा, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि सर्वशक्तिमान ने कैसे कहा, 'मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूँ।' और उन्होंने कहा कि उनके मरने के काफी समय बाद। उसने यह नहीं कहा कि मैं इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर था। 'मैं इब्राहीम, इसहाक, और याकूब का परमेश्वर हूँ, और मैं' मैं मरे हुए का परमेश्वर नहीं हूँ, मैं जीवितों का परमेश्वर हूँ।" मृत्यु आपके अस्तित्व को समाप्त नहीं करती है।

2. तत्काल अलगाव होगा।

तत्काल अलगाव होगा। मैं उसे न केवल धनवान और लाजर से बटोरता हूँ, वरन उन से भी। मती 25 जहाँ यीशु भेड़ों और बकरियों को दो अलग-अलग समूहों में अलग करने की बात करता है, वे जो अंदर आएंगे और आशीर्वाद प्राप्त करेंगे और जो बहिष्कृत होंगे। अब मैं जानता हूँ कि कुछ लोग विश्वास नहीं कर सकते कि हमारा प्रेमी सर्वशक्तिमान परमेश्वर लोगों को नरक में भेजेगा।

मैंने अपनी बाइबिल को पूरी तरह से खोजा है। मुझे पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई स्थान नहीं मिलता जहाँ बाइबल कहती है कि परमेश्वर किसी को भी नरक में भेजता है। मुझे ठीक इसके विपरीत लगता है। "ईश्वर धैर्यवान है, नहीं चाहता कि कोई नाश हो।" (2 पतरस 3:9) इस पुरानी दुनिया के आज भी खड़े होने का एकमात्र कारण यह है कि परमेश्वर जानता है कि आज कोई यीशु के पास आने वाला है, और वह उन्हें राज्य का हिस्सा बनाना चाहता है। परमेश्वर कहते हैं, "...दुष्टों के मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता..." (यहजकेल 33:11) मैं मानता हूँ कि एक तरह से मैं परमेश्वर से बहुत छोटा हूँ।

Jesus has "come back from the dead." How are you responding to the Word of God and to the Jesus it presents? Is your heart or mind opened or closed? Have you obeyed His gospel? Do you have your eyes set on eternity? If you've been living in the "Gospel of NOW," it's only temporary, focus on the eternity. Today is the day of salvation. Change from the ways of the world by putting your faith and trust in Him now. Call upon Him to forgive, confess your belief that He is God who came to earth in the flesh, die to your sins and be buried. Be buried in water baptism so He can raise you to a new life of righteousness and be added to His church. Amazing Grace #1278 Steve Flatt September 1, 1996

Chapter 3

Who is My Neighbor?

"On one occasion an expert in the law stood up to test Jesus. 'Teacher,' he asked, 'what must I do to inherit eternal life?' 'What is written in the Law?' he replied. 'How do you read it?' He answered: 'Love the Lord your God with all your heart and with all your soul and with all your strength and with all your mind' and 'Love your neighbor as yourself.'" (Luke 10:25-29)

Jesus was pleased. He affirmed that response saying, "You've answered correctly. Do this and you will live." But this lawyer wasn't through. "But he wanted to justify himself, so he asked Jesus, 'And who is my neighbor?'" There's our question, just who is my neighbor?

The response Jesus gave is well known to almost all of us. It's so rich and beautiful. "In reply Jesus said: 'A man was going down from Jerusalem to Jericho, when he fell into the hands of robbers. They stripped him of his clothes, beat him and went away, leaving him half dead. A priest happened to be going down the same road and when he saw the man, he passed by on the other side. So too, a Levite when he came to the place and saw him, passed by on the other side. But a Samaritan, as he traveled, came where the man was; and when he saw him, he took pity on him. He went to him and bandaged his wounds, pouring on oil and wine. Then he put the man on his own donkey, took him to an inn and took care of him. The next day he took out two silver coins and gave them to the innkeeper. 'Look after him,' he said, 'and when I return, I will reimburse you for any extra expense you may have.'

"Which of these three do you think was a neighbor to the man who fell into the hands of robbers?"

"The expert in the law replied, 'The one who had mercy on him.' Jesus told him, 'Go and do likewise.'"

What a wonderful story Jesus tells in response to this man's

ऐसे समय होते हैं जब मैं किसी को बंदूक और बम जाल के साथ आतंकवादी के रूप में हवाई जहाज पर चढ़ने के बारे में पढ़ता हूँ और शायद वे कुछ बंधकों को मार देते हैं और बाकी को पकड़ लेते हैं। बीच-बीच में एक स्वाट टीम आएगी और वे उन्हें गोली मार देंगे, बस उन्हें वहीं गोली मार दें। जब मैं यह सुनता हूँ तो मेरा एक हिस्सा होता है, मैं कहता हूँ, "हां। अच्छा। बाकी को ले आओ।" क्योंकि मुझे डर है कि वे न्याय के लिए नहीं आएंगे, अन्यथा। लेकिन भगवान नहीं, मेरे भगवान को एक दुष्ट व्यक्ति की मृत्यु में कोई खुशी नहीं है। क्या आप जानते हैं क्यों? क्योंकि जब वह दुष्ट व्यक्ति मरता है, तो वह या वह खो गई है। परमेश्वर किसी को नरक नहीं भेजता। जब कोई यीशु मसीह और स्वर्ग को अस्वीकार करता है, तो वे स्वयं की निंदा करते हैं और नर्क को चुनते हैं।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र भेज दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना 3:16) अगला पद कहता है, "क्योंकि वह जगत पर दोष लगाने नहीं आया, परन्तु अपने द्वारा जगत का उद्धार करने आया है।" दोस्तों, इस विचार को अपने दिमाग से निकाल दो। ऐसा नहीं है कि आपकी मृत्यु पर ईश्वर आपको मृत्यु के किसी दायरे में भेजने का चुनाव करेगा, आपने अभी अपने लिए मृत्यु की जीवन शैली को चुना है। उस महान निर्णय के दिन परमेश्वर जो कुछ भी करने जा रहा है, वह उन विकल्पों की घोषणा करना है जो पुरुष और महिलाएं अपने लिए हमेशा से करते रहे हैं। यही हकीकत है। यदि आप सोचते हैं कि परमेश्वर किसी को भी नरक में भेजना चाहता है, तो क्रूस को फिर से देखें। यदि कोई प्रमाण है कि हमारा परमेश्वर किसी को सुनिश्चित करने के लिए अपने रास्ते से हट जाएगा और उम्मीद है कि हर कोई बचाया जाएगा, तो यह यीशु मसीह के क्रूस पर है।

3. प्रत्येक मनुष्य की अनन्त नियति अपरिवर्तनीय है।

यदि स्वर्ग और नरक, यदि स्वर्ग और पीड़ा में कुछ भी समान है, तो यह उनकी अपरिवर्तनीय स्थिरता है, दया कब्र से पहले आती है। मैंने अपनी बाइबिल की खोज की है और बिल्कुल कोई वैधता नहीं पाई है कि आप भुगतान कर सकते हैं या मरने के बाद स्वर्ग में खुद को या किसी और को प्रार्थना कर सकते हैं। वास्तव में अमीर आदमी और लाजर के बारे में कहानी में, इब्राहीम ने उस अमीर आदमी को देखा और ग्रीक काल में कहता है, "हमारे बीच एक खाई थी और अब तक बनी हुई है जिसे कोई भी आदमी पाट नहीं सकता है।" एक अर्थ में परमेश्वर ने वह खाई नहीं खोदी जो उस धनी व्यक्ति ने खोदी थी। उन्होंने इसे अपने जीवन के दौरान किया। उसने अपना जीवन लाजर जैसे लोगों से अलग बिताया, है ना? अपने पूरे जीवन में, उसने कहा, "लाजर, मैं यहाँ हूँ और तुम वहाँ हो, तुम मुझे परेशान मत करो और मैं तुम्हें परेशान नहीं करूँगा। मैं एक गरीब बूढ़े के साथ कुछ भी नहीं करना चाहता तुम्हारे जैसा नीच।"

मैं पहले ही कुछ अर्थों में संकेत कर चुका हूँ और कई मायनों में भविष्य का जीवन केवल वर्तमान जीवन की पहचान जारी है। मेरे लिए दिलचस्प बात यह है कि पीड़ा में भी, यहाँ तक कि नरक में भी, अमीर आदमी ने अभी भी लाजर को एक भिखारी और नौकर

question about who might be his neighbor. It starts with a problem. A man was traveling along a steep and most dangerous road, the one between Jericho and Jerusalem. He is waylaid, robbed, stripped of his clothes and beaten. The Bible said he's left half-dead. Along came a priest and a Levite. Now both of those are religious officials, they're preacher types. They see this poor victim and the Bible said, "They pass by on the other side." Finally, Jesus says, "A Samaritan comes along."

Now we can't adequately understand how the expert in the law responded as Jesus was telling this story. When Jesus said, "And a Samaritan came along," it was like taking his fingers and raking them across a blackboard. We call this the *Parable of the Good Samaritan*. To a Jew, that was not only an oxymoron, it was a fantasy. There was no such thing as a Good Samaritan. "This Samaritan did all these things, he picked him up, he poured oil and wine on him, he bandaged him, he took him to the hotel and he left money for his care." The Jews hated the Samaritans so badly that even as Jesus told the story and he asked "Now you tell me, which of those was a neighbor to that victim?" The lawyer couldn't even bring himself to say the word Samaritan. He ended up having to say, "Well, I guess it was the one who had mercy on him."

I want you to see in this magnificent story, first of all, the three potential perspectives we have on life.

1. *What's yours is mine and I'm going to get it.*

Now who had that perspective in the parable? The robbers. They saw this guy coming along he had money and clothes. They wanted them so they beat him over the head and they took them. What's yours is mine and I'm going to get it.

Our world is filled with this kind of life perspective. I'm not going to dwell on it long because as a child of God it's an anathema to you. I know a few Christians who profess otherwise who act that way, but not many. That's not a right way to live. It's like the story that Aesop told of the dog who stole the piece of meat from the butcher shop. He went through the woods happy that he had his meat. He came to a stream where he saw his reflection. He thought he was seeing another dog with another piece of meat. Even though he had more than he could ever eat, he was jealous. He dropped his piece of meat to snatch the other piece and ended up losing both.

There is a prevalent life perspective in this world that says, "What is yours is mine and I'm going to get it." But the second perspective I particularly want you to see because it's more insidious and more dangerous.

2. *What's mine is mine and I'm going to keep it.*

This was the perspective of the priest and of the Levite. It's also the perspective of most of the people we know. The attitude that the robbers had was condemnable. The attitude

के रूप में देखा। उसने इब्राहीम की ओर देखा और कहा, "इब्राहीम, लाज़र को वहाँ नीचे जाने के लिए कहो, मेरे लिए थोड़ा पानी लाओ और उस पानी को यहाँ वापस ले आओ।" वह अभी भी उसे एक सेवक के रूप में देखता था। मृत्यु के बाद प्रत्येक मनुष्य का शाश्वत भाग्य अपरिवर्तनीय है।

4. धर्मियोंको शान्ति मिलेगी।

मुझे संदेह है कि यह संयोग से अधिक है कि हम अमीर आदमी का नाम नहीं जानते, लेकिन हम मरने से पहले ही लाजर का नाम जानते हैं। इस तरह का संकेत मुझे बताता है कि परमेश्वर हमेशा से जानता था कि महत्वपूर्ण कौन था, है ना? अब मुझे संदेह है कि जब अमीर आदमी मरा तो उसका एक विस्तृत अंतिम संस्कार था। हर जगह फूल थे और उनके नाम पर दान करने वाले स्मारक थे, वे शायद सभास्थल को रेखांकित करते थे; वहाँ का मेयर था और शायद जेरूसलम का प्रोक््यूरैटर भी। मुझे लगता है कि हर कोई उनके अंतिम संस्कार के लिए वहाँ था। लेकिन यह सब लाजर के बारे में कहता है कि वह मर गया। यह भी नहीं कहता कि उसे दफनाया गया है। मुझे संदेह है कि उन्होंने उसे पुराने कुम्हार के खेत में फेंक दिया था। लेकिन मैं एक तथ्य के लिए जानता हूँ कि लाजर के अंतिम संस्कार में एक चीज थी जो अमीर आदमी के पास नहीं थी। उसके पास देवदूत थे। स्वर्गदूत उसे इब्राहीम की गोद में ले गए। अचानक, वह समृद्ध है।

मैंने इसे कई बार अंत्येष्टि में कहा है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप जीवित रहते हुए इसे सुनें, ठीक है? मुझे विश्वास है कि जब आप मसीह में बपतिस्मा लेते हैं, तो आप पहले से ही किसी भी महत्व की एकमात्र मृत्यु का अनुभव कर चुके होते हैं जिसे आपको अनुभव करने की आवश्यकता होती है। "क्या तुम नहीं जानते, कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? (रोमियों 6:3) यही इस ब्रह्मांड की बचाने वाली शक्ति है। गलातियों 3 में कहा गया है कि जब हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं, तो हम उसे पहन लेते हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 4:14 कहता है, क्योंकि "हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और फिर से जी उठा और इसलिए हमें विश्वास है कि परमेश्वर उन्हें यीशु के साथ लाएगा जो उसमें सो गए हैं।" क्या आपने उन दो छोटे शब्दों पर ध्यान दिया, "उसमें?" प्रश्न यह नहीं है: क्या तुम सो जाने वाले हो? सवाल यह है: क्या आप उसमें सोने जा रहे हैं? जब हम विसर्जन, बपतिस्मा में मसीह के साथ मरते हैं, और जीवन के नएपन में चलने के लिए उठते हैं, तो हम उसमें, उसके, मसीह में बन जाते हैं। हम किसी भी महत्व की एकमात्र मृत्यु मर चुके हैं। हमारे पास पवित्रशास्त्र की प्रतिज्ञा है कि जब हम सोएंगे, हम आराम और शांति का अनुभव करने के लिए उठ खड़े होंगे।

5. अधर्मी पीड़ा का अनुभव करेंगे।

पीड़ा में, यह अमीर आदमी था जो इस हद तक भिखारी बन गया कि ठंडे पानी की एक बूंद भीख मांगने लायक थी। मैं रेखांकन या भौतिक रूप से नरक का वर्णन करने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ। मुझे पता है कि जो हमने अभी पढ़ा है, उससे अमीर आदमी दर्द में था। उसे उस अवसर को याद करने का दर्द था जिसे उसने

that the priest and Levite had was not commendable, but it was understandable. Wasn't it? It's interesting to me that Jesus talks about a priest and a Levite, both religious men. They were going from Jerusalem to Jericho to do service in the temple. The priest and the Levites one week out of every year had to perform temple service. They had to do all the duties and prepare the sacrifices. To go along this route was not an unusual thing as Jericho is not very far from the Jerusalem, and many priests lived there. They saw this man beaten, bleeding, and robbed, but they chose to pass by on the other side.

Now there could have been one other thing at work here. You see if a priest or Levite was heading toward the temple to perform a service, the last thing that individual would want to do would be to become unclean. According to the Jewish law, if you were to touch a corpse, it would make you ceremonially unclean. They may have been in a hurry with important work to do. They could have even thought about the risk of becoming ceremonially unclean. This man may either be dead or he may die in my hands. So, rather than risking becoming unclean they went on their way. "What's mine is mine and I'm going to keep it."

Now folks, let's get off our little pedestals. I want to tell you that every one of those reasons makes sense to me unless I'm the guy in the ditch. Then none of them makes sense at all. But if we're bluntly honest, this attitude about what's mine is mine and I'm going to keep it describes most of us, most of the time.

3. What's mine is yours and I'm going to give it.

The Samaritan stopped, he felt compassion, he helped, he went the extra mile and he followed through. The latter is the attitude and the perspective that we're called to have. "Love your neighbor as yourself." What's mine is yours, and I'm going to give it.

But now wait a minute, the expert in the law says, "Where do you draw the line? I mean you just can't love everybody, everywhere to the full extent of your love. How far do you have to go in this neighbor business? Seeking to justify himself he asked "Who is my neighbor?" You see the only way he could justify himself was to somehow limit this law. Just who is the neighbor I'm supposed to love? Then Jesus set forth the premise for the whole parable. I know you love and appreciate the story, but I really want to make sure you see the gist of it. The man asked a question, "Who is my neighbor?" Jesus responded by asking him another question. He said the question is not who is your neighbor; the question is who is your neighbor's neighbor? Jesus said the question I'm asking you is, "Are you willing to be a neighbor to your neighbor?" Are you willing to love even the most unlovable of people? Like a Samaritan loving a Jew or vice versa. Or, maybe loving the drug addict who has lied to you and stolen from you or maybe loving the guy who pulls up in the beat-up car that's full of trash and

नज़र अंदाज़ कर दिया था। उन्हें दूसरों के भाग्य को जानने का दर्द था जो उनके समान भाग्य, उनके भाइयों के लिए नियत थे।

मैं सीमित दिमाग से ठीक-ठीक वर्णन नहीं कर सकता कि नरक कैसा होगा। लेकिन तीन चीज़ें ऐसी थीं जिन्हें यीशु ने अपनी पूरी शिक्षा में लगातार नरक के साथ जोड़ा। वह आग, रोने और दाँत पीसने की बात करता है। यह कितनी बड़ी ढिंढाई है कि हममें से किसी का भी इस तरह का बर्ताव करने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा या यह मौजूद नहीं है।

हम सभी को कुछ गंभीर सवाल पूछने की जरूरत है कि हम कौन हैं और हम कहाँ जा रहे हैं।

भविष्य पर विचार करें! "अभी का सुसमाचार" से दूर हो जाओ और अनंत काल के प्रकाश में सोचो। शैतान का सबसे पुराना औज़ार है मनुष्य को अभी सोचने पर विवश करना। याद करो जब एसाव तीन दिन के शिकार के बाद आया और याकूब कुछ दाल पका रहा था, तो उसने कहा, "मुझे कुछ स्टू खाने दो, याकूब।" याकूब ने कहा, "ठीक है, लेकिन मुझे तुम्हारा पहिलौठे का अधिकार चाहिए।" क्या आपको लगता है कि एसाव ने ऐसा सोचा था? वह हमेशा के बारे में नहीं सोच रहा था। उसने सोचा, मुझे भूख लगी है और मुझे अभी चाहिए। दाऊद क्या सोच रहा था जब वह अपनी छत पर खड़ा हुआ और नीचे दृष्टि करके बतशेबा को देखा? क्या आपको लगता है कि वह लंबी अवधि के बारे में सोच रहा था? क्या आपको लगता है कि उसने किसी परिणाम के बारे में सोचा था, विशेषकर किसी शाश्वत परिणाम के बारे में? उसने केवल इतना सोचा कि मैं उस महिला को चाहता हूँ और मैं उसे अभी चाहता हूँ। सारा यहूदा सोच रहा था कि जब उसने परमेश्वर के पुत्र के साथ विश्वासघात किया, तो यह तथ्य नहीं था कि एक नर बच्चे का नाम यहूदा रखने के लिए कोई और परिवार कभी नहीं होगा। वह सोच रहा था कि चाँदी के 30 टुकड़े अभी बहुत अच्छा खर्च करेंगे।

पॉल के सबसे महान और सबसे सरल बयानों में से एक है जो मैंने कभी सुना है, "इसलिए हम देखी हुई वस्तुओं को नहीं देखते, परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते हैं। क्योंकि देखी हुई वस्तुएं अस्थायी होती हैं। जो दिखाई नहीं देता वह सनातन है।" (2 कुरिन्थियों 4:18) यदि आप आज से 100 वर्ष बाद वापस आ सकते हैं और उसी स्थान पर खड़े हो सकते हैं जहाँ आप खड़े हैं, तो मुझे संदेह है कि आप अभी कुछ भी देख सकते हैं। यदि आप इसे देख सकते हैं, यह अस्थायी है। यदि आप इसे नहीं देख सकते हैं, तो यह शाश्वत है। वे अदृश्य चीज़ें परमेश्वर के प्रेम जैसी चीज़ें हैं। इसलिए कुछ भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता। (रोमियों 8:35) या कलीसिया की तरह, परमेश्वर के सिवा कोई भी पूरी कलीसिया पर अपनी दृष्टि नहीं रख सकता। अधोलोक के द्वार, कब्र, कलीसिया पर प्रबल नहीं होंगे। आपकी आत्मा भी अदृश्य है। हम देखते हैं कि शरीर जहाँ से आया था वहाँ से मिट्टी में मिल जाएगा, लेकिन वह आत्मा नहीं जो जीवित है, हमारे प्रत्येक शरीर को जीवन देती है। असली तुम, हमेशा के लिए कहीं रहने वाले हो। **भविष्य के प्रकाश में सोचो।**

he's looking for a hand-out. In the pit of your stomach, you've got this feeling that he's really trying to take advantage of you.

Are you willing to love the person with the different skin color? Are you willing to love the person with a belief different from your own? Are you really willing to love a person who has strong opinions that differ with yours? Are you willing to love the fellow with AIDS? Are you willing to love a thief? Like that Samaritan, are you willing to love somebody who hates you? Those are pretty hard questions. See, I don't think it was just the lawyer who needed to justify himself, was it? The truth be told, if we examine most of our daily walks, we might want to ask the question, "Who is my neighbor?"

In fact, maybe you're asking right now, "How on earth do you do that?" Is that just some crazy ideal? Is that one of those moral platitudes that nobody really does but sounds good being preached? Is it like a mirage? I don't think so. I believe it's real, and I believe it's possible and I believe that every day that we grow in Christ we can love our neighbor as ourselves. But in order to do that, we've got to see this parable for all that's in it. This parable is more than a story. It's a picture. I think it's a picture of us. Remember behind every parable is a hidden spiritual meaning for those who are willing to receive it. I think Jesus wanted his lawyer to see this parable as a picture of him before God and he wants us to see the same thing.

Who are you in the story? Who are you? Are you the robber? I hope not. Are you the priest? Are you the Levite? Tell the truth. Do you really think you're the Good Samaritan? Does that characterize your life as you drive down the road every day? Do you know who you are? You're the mugged guy in the ditch. You're the one beside the road having been attacked by Satan. He has beaten you with sin and you're going to die there unless someone comes along and rescues you. All the things that we think will pull us up out of the ditch like our money, our smarts, our good looks and our achievements will pass us by and leave us right there in the ditch. Do you know what we need? We need a Samaritan. By the way, do you know who the Samaritan in the parable really is? Just think a minute. Who is the one despised, rejected and hated who still reaches down to save dying humanity? That's right, it's Jesus.

The key to becoming more like that Good Samaritan and to unlocking a whole new attitude of compassion in our hearts: It's seeing yourself in the ditch dying or dead if God hadn't rescued you. Now that Jewish lawyer couldn't see himself there. He looked at people the way most of us do. He broke them into two lists, a) those I am better than and b) those better than I am. The list of those better than I am is pretty short. Almost every Gallup poll shows that most all Americas believe they are going to heaven. When asked

शास्त्र के प्रकाश में चलो/अमीर आदमी ने दो गलतियाँ कीं, वह स्वार्थी था, हममें से अधिकांश लोग ऐसा करते हैं, और उसने परमेश्वर के लिखित वचन की शक्ति को कम कर दिया। यदि उसने ऐसा नहीं किया होता, तो परमेश्वर के वचन ने उसे बदल दिया होता। क्या आपको याद है जब उसने कहा, "देखो, अगर तुम मेरी मदद नहीं कर सकते, तो किसी को मेरे भाइयों के पास भेजो?" इब्राहीम ने उत्तर दिया, "उन्हें मूसा और भविष्यद्वक्ताओं को सुनने दो।" उसने कहा, "ओह, वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनेंगे, परन्तु यदि कोई मरे हुआओं में से वापस आए, तो वे सुनेंगे।" यह मेरे द्वारा अब तक सुने गए सबसे सर्द शब्दों में से कुछ के साथ समाप्त होता है, "यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनेंगे, तो वे किसी की भी नहीं सुनेंगे जो मरे हुआओं में से वापस आ गया है।"

यीशु "मृतकों में से जी उठा है।" आप परमेश्वर के वचन और उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए यीशु के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दे रहे हैं? क्या आपका दिल या दिमाग खुला या बंद है? क्या आपने उसके सुसमाचार का पालन किया है? क्या आपकी आँखें अनंत काल पर टिकी हैं? यदि आप "अभी के सुसमाचार" में रह रहे हैं, तो यह केवल अस्थायी है, अनंत काल पर ध्यान दें। आज मोक्ष का दिन है। अब उस पर अपना विश्वास और भरोसा रखकर दुनिया के तौर-तरीकों से बदलें। उसे क्षमा करने के लिए बुलाओ, अपने विश्वास को स्वीकार करो कि वह परमेश्वर है जो शरीर में पृथ्वी पर आया, अपने पापों के लिए मरो और दफन हो जाओ। पानी के बपतिस्मे में दफन हो जाओ ताकि वह आपको धार्मिकता के एक नए जीवन में उठा सके और अपने चर्च में जोड़ा जा सके। अमेज़िंग प्रेस #1278 स्टीव फ्लैट 1 सितंबर 1996

अध्याय 3

मेरा पड़ोसी कौन है?

"एक अवसर पर कानून का एक विशेषज्ञ यीशु की परीक्षा लेने के लिए खड़ा हुआ। 'गुरु', उसने पूछा, 'अनन्त जीवन का वारिस होने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?' 'कानून में क्या लिखा है?' उसने उत्तर दिया। 'आप इसे कैसे पढ़ते हैं?' उसने उत्तर दिया: 'अपने परमेश्वर यहीवा से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना' और 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।'" (लूका 10:25-29)।

यीशु प्रसन्न हुआ। उन्होंने उस प्रतिक्रिया की पृष्टि करते हुए कहा, "आपने सही उत्तर दिया है। ऐसा करो और तुम जीवित रहोगे।" लेकिन यह वकील सफल नहीं हुआ। "लेकिन वह खुद को सही ठहराना चाहता था, इसलिए उसने यीशु से पूछा, 'और मेरा पड़ोसी कौन है?'" हमारा सवाल है, बस मेरा पड़ोसी कौन है?

यीशु ने जो उत्तर दिया उससे हम लगभग सभी परिचित हैं। यह बहुत समृद्ध और सुंदर है। "जवाब में यीशु ने कहा, 'एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेर लिया।

why the number one answer by far is "Well, I'm a pretty good person." See, in America we don't think we need a Savior, we don't think we need a cross or the atoning blood of Christ. I just need to know that I'm better than most people and I've pretty well assured myself that I am. That's right at the core of our gut.

The reason we struggle being our neighbor's neighbor is because we don't see our likeness in that ditch. We can't fathom that God sees us as helpless, bleeding, dying, and needing rescued. We will never have hearts of compassion until we respond to the heart that stops beating for us.

Simon, the Pharisee, had Jesus over to dinner one night. Simon was a proper man, he held a proper party, he did all the proper things but a woman of the street walked in. When I say she was a woman of the street, I don't mean that's where she lived, I mean that's where she worked and you know what I mean. The first thing she did was break in to the party that was improper. Then she let down her hair, which was also improper. She made a spectacle of herself in front of Jesus, which was improper. Simon thought if this man were a prophet he wouldn't tolerate all this impropriety. (Luke 7)

Jesus knowing his heart said, "Simon, I want to tell you a story." Simon said, "Tell me teacher." He said, "There was once two men and they owed a certain money lender. One of them owed 500 denarii and one of them owed 50 denarii. The money lender forgave both. Jesus said, "Simon, let me ask you something, which one do you think was the one who loved the money lender the most?" Simon said, "Well, I guess it was the one who owed him the most." Jesus said, "That's right." He said, "When I came into your house, Simon, you didn't wash my feet. But she's been washing my feet with her tears. When I came into your house, you didn't give me a kiss (that was a sign of hospitality); she's not stopped kissing my feet. When I came to your house, you didn't put oil on my head. She's poured perfume all over my feet. He said, "Simon, she loves me much because she's been forgiven much." Then he hit Simon with a zinger. He said, "But he who has been forgiven little, loves little." That's it!

If I could translate that into our parable about the Good Samaritan, the one who thinks he has never been in the ditch gets very few others out of it. If we ever see ourselves as the guy in the ditch, then this becomes more than a nice little parable that will motivate us for an hour after church to go do something nice for somebody. If we ever see ourselves in the ditch, this becomes a whole pattern for life.

There are three ways that changes your whole view.

1. No longer do you see enemies, you see victims of the enemy.
2. No problems, but people with problems.
3. No longer do you feel pity longer do you see, but you

उन्होंने उसके कपड़े उतार लिए, और मार पीटकर उसे अधमूआ छोड़कर चले गए। एक याजक जा रहा था। उसी मार्ग से चलते हुए उस पुरुष को देखते ही परली ओर से चला गया। और एक लेवी उस स्थान पर पहुंचकर उसे देखकर परली ओर से चला गया। परन्तु एक सामरी यात्रा करते हुए आया। वह पुरुष कहां था, और उसे देखकर उस पर तरस खाया, और उसके पास जाकर उसके घावों पर तेल और दाखमधु डालकर पट्टियां बान्धी, और अपने गधे पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उसकी सेवा टहल की दूसरे दिन उसने दो चाँदी के सिक्के निकाले और सरायवाले को दिए। उसने कहा, 'इसका ध्यान रखना,' और जब मैं लौटूँगा,

"आपके विचार में इन तीनों में से कौन उस व्यक्ति का पड़ोसी था जो लुटेरों के हाथ लग गया था?"

"कानून के विशेषज्ञ ने उत्तर दिया, 'वह जिसने उस पर दया की।' यीशु ने उससे कहा, 'जा और ऐसा ही कर।'"

इस व्यक्ति के इस प्रश्न के उत्तर में कि उसका पड़ोसी कौन हो सकता है, यीशु कितनी अद्भुत कहानी सुनाते हैं। यह एक समस्या से शुरू होता है। एक आदमी एक खड़ी और सबसे खतरनाक सड़क पर यात्रा कर रहा था, जो यरीहो और यरुशलम के बीच है। उसके साथ मारपीट की जाती है, उसे लूटा जाता है, उसके कपड़े उतार दिए जाते हैं और पीटा जाता है। बाइबिल ने कहा कि वह अधमरा रह गया है। साथ में एक याजक और एक लेवी आए। अब वे दोनों धार्मिक अधिकारी हैं, वे उपदेशक प्रकार के हैं। वे इस गरीब पीड़ित को देखते हैं और बाइबिल ने कहा, "वे दूसरी तरफ से गुजरते हैं।" अंत में, यीशु कहते हैं, "एक सामरी साथ आता है।"

अब हम पर्याप्त रूप से यह नहीं समझ सकते कि कानून के विशेषज्ञ ने कैसी प्रतिक्रिया दी जब यीशु यह कहानी कह रहे थे। जब यीशु ने कहा, "और एक सामरी साथ आया," यह उसकी उंगलियों को लेने और उन्हें एक ब्लैकबोर्ड पर ले जाने जैसा था। हम इसे भले सामरी का दृष्टांत कहते हैं। एक यहूदी के लिए, वह केवल एक ऑक्सीमोरोन नहीं था, यह एक कल्पना थी। गुड सेमेरिटन जैसी कोई चीज नहीं होती। "उस सामरी ने थे सब काम किए, उसे उठाया, उस पर तेल और दाखमधु डाला, उस पर पट्टी बांधी, वह उसे होटल में ले गया, और उस ने उसकी देखभाल के लिथे रुपये छोड़ दिए।" यहूदी सामरी लोगों से इतनी नफरत करते थे कि जैसे यीशु ने कहानी सुनाई और उन्होंने पूछा "अब तुम मुझे बताओ, उनमें से कौन उस पीड़ित का पड़ोसी था?" वकील सामरी शब्द कहने के लिए खुद को तैयार भी नहीं कर सका। उन्होंने अंत में कहा, "ठीक है,

मैं चाहता हूँ कि आप इस शानदार कहानी में सबसे पहले जीवन के तीन संभावित दृष्टिकोणों को देखें।

4. जो तेरा है वह मेरा है और मैं उसे लेने जा रहा हूँ

अब दृष्टान्त में वह दृष्टिकोण किसका था? लुटेरे। उन्होंने देखा कि यह आदमी साथ आ रहा है, उसके पास पैसे और कपड़े हैं। वे उन्हें चाहते थे इसलिए उन्होंने उसे सिर पर पीटा और वे उन्हें ले गए।

feel compassion. Pity is looking down at the guy in the ditch and saying, "I'm glad I'm not the one down in that ditch." But compassion is looking down in that ditch and saying, "I've been there and I could still be there right now except for the grace of God." See, only when we see ourselves as a guy beside the road, will we become ministers of mercy.

It's not enough to brow-beat people into saying, "Go out and help. Go out and help. Go out and help." You can do that, but only for a limited time. But when my heart is radically transformed, knowing that Jesus was the Samaritan who pulled me out of the ditch, I will live the rest of my life looking for hands that I can reach out to. Folks, you see I found that it is true that your hands can do some good things without the heart being converted, not many, but a few. But whenever the heart is genuinely converted the hands are always helping.

When Jesus closed this, story, he said, "Go out and ___ what, likewise?" Did he say, "Go out and preach, likewise?" "Go out and think, likewise?" "Go out and memorize, likewise?" He said, "Go out and DO, likewise."

I heard a story about an elderly lady who got caught under an underpass in a flash flood. The water had come up in the doors. She was old and she was too scared to get out into that water which would have been up to her thighs, it might have washed her away. She was trembling. A fellow was passing over the overpass in a big four-wheel drive and glancing down happened to see her. He did stop, put it in park, jumped out and looked over there. He could see she was just petrified. He said, "Ma'am, can I help you?" And I love her response. Shaking she said, "Not from up there." I want to tell you something. God doesn't want us to be helping people from up here. God wants us helping people in the ditch because we've been there.

One of the things that has stayed in my mind just about as long as I've lived is the judgment scene in Matthew 25. Do you remember the parable of the sheep and the goats? How the sheep go to the right and the goats to the left? He's going to say to the sheep, "I was hungry and you fed me, I was thirsty and you gave me drink. I was naked and you clothed me. I was sick and in prison and you came and visited me." He's going to say to the goats, "I was all these things and you didn't do anything." Then he's going to say to these on the right, "Come on in you blessed of the Father," but to those on the left, "Depart from me."

I'm intrigued by a lot of things that we deem to be particularly important that He did not even mention. He doesn't say one word about church attendance, does he? He doesn't say a word about doctrine. He doesn't say a single word about our dress. Don't misunderstand, I'm not saying all those things aren't important, particularly the first two. If you know me at all, you know that I think they are

जो तेरा है वह मेरा है और मैं उसे लेने जा रहा हूँ।

हमारी दुनिया इस तरह के जीवन के नजरिए से भरी पड़ी है। मैं इस पर लंबे समय तक नहीं रुकूंगा क्योंकि भगवान के बच्चे के रूप में यह आपके लिए अभिशाप है। मैं कुछ ऐसे ईसाइयों को जानता हूँ जो अन्यथा दावा करते हैं जो इस तरह से कार्य करते हैं, लेकिन बहुत से नहीं। यह जीने का सही तरीका नहीं है। यह उस कहानी की तरह है जो ईसप ने उस कुत्ते के बारे में कही थी जिसने कसाई की दुकान से मांस का टुकड़ा चुराया था। वह जंगल से होकर खुश हो गया कि उसके पास उसका मांस था। वह एक धारा के पास आया जहाँ उसने अपना प्रतिबिंब देखा। उसने सोचा कि वह दूसरे कुत्ते को मांस के दूसरे टुकड़े के साथ देख रहा है। हालाँकि उसके पास खाने से अधिक था, फिर भी वह ईर्ष्या करता था। उसने दूसरे टुकड़े को छीनने के लिए अपने मांस के टुकड़े को गिरा दिया और दोनों को खो दिया।

इस संसार में एक प्रचलित जीवन दृष्टि है जो कहती है, "जो तेरा है वह मेरा है और मैं उसे पाकर रहूँगा।" लेकिन दूसरा परिप्रेक्ष्य मैं विशेष रूप से चाहता हूँ कि आप देखें क्योंकि यह अधिक कपटी और अधिक खतरनाक है।

5. जो मेरा है वह मेरा है और मैं इसे रखने जा रहा हूँ

यह याजक और लेवी का दृष्टिकोण था। यह उन अधिकांश लोगों का दृष्टिकोण भी है जिन्हें हम जानते हैं। लुटेरों का यह रवैया निंदनीय है। याजक और लेवी का रवैया प्रशंसनीय नहीं था, लेकिन यह समझ में आता था। क्या यह नहीं था? मेरे लिए यह दिलचस्प है कि यीशु एक पुजारी और लेवी दोनों धार्मिक पुरुषों के बारे में बात करता है। वे मन्दिर में सेवा करने के लिये यरूशलेम से यरीहो को जा रहे थे। याजक और लेवियों को प्रत्येक वर्ष में से एक सप्ताह मन्दिर में सेवा करनी पड़ती थी। उन्हें सभी कर्तव्यों का पालन करना था और बलिदान तैयार करना था। इस मार्ग से जाना कोई असामान्य बात नहीं थी क्योंकि यरीहो यरूशलेम से बहुत दूर नहीं है, और कई याजक वहाँ रहते थे। उन्होंने इस आदमी को पिटते, लहलुहान और लूटते देखा, लेकिन उन्होंने दूसरी तरफ से गुजरना चुना।

यहाँ काम की एक और बात हो सकती थी। आप देखते हैं कि यदि कोई पुजारी या लेवी सेवा करने के लिए मंदिर की ओर जा रहा था, तो वह व्यक्ति जो आखिरी काम करना चाहेगा वह अशुद्ध होना होगा। यहूदी व्यवस्था के अनुसार, यदि आप किसी शव को छूते हैं, तो यह आपको औपचारिक रूप से अशुद्ध कर देगा। हो सकता है कि वे किसी महत्वपूर्ण कार्य को करने की जल्दी में हों। वे औपचारिक रूप से अशुद्ध होने के जोखिम के बारे में भी सोच सकते थे। यह आदमी या तो मर सकता है या मेरे हाथों मर सकता है। इसलिए, अशुद्ध होने का जोखिम उठाने के बजाय वे अपने मार्ग पर चले गए। "जो मेरा है वह मेरा है और मैं इसे रखने जा रहा हूँ।"

अब दोस्तों, चलो अपने छोटे आसनों से उतरें। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि उन सभी कारणों से मुझे समझ में आता है जब तक

extremely important. The very first thing I see in Scripture that God wants to know about each one of us is "Were you your neighbor's neighbor?" Did you have a heart that was transformed that had you looking for people to pull out of the ditch?

I hope and pray that you see yourself where you really are. You're either in the ditch or you've been there. If you're not a Christian, you're in the ditch right now and you're going to die there unless you let Jesus pull you out. Come in obedience to the gospel, confess his name where all can hear and wash away your sins by the blood of Jesus being buried with Him through water baptism to be resurrected to a new life in Christ. Your sin will be completely forgiven. He has pulled you out of the ditch of sin. He has also commissioned you to go look for other ditch dwellers. As long as you remember where you were, you'll be pulling them out right and left. That, by the way, is how God's kingdom grows. Amazing Grace #1275 Steve Flatt August 4, 1996

Chapter 4

What Shall I Do With Christ?

It's in the early hours of Friday morning. Jesus was led by rather a strange mixture of soldiers and priests from a garden called Gethsemane to the House of Caiaphas, the Roman appointed high priest. After a period of time there he was shuttled off to Annas, the real Jewish high priest, and then back to Caiaphas again. Those two high priests have decided that this man must die, but they had no authority to do that, only the Roman procurator could condemn a man to death. So they brought him to Pontius Pilate. The world would have never remembered a petty Roman governor named Pilate except for his encounter with Jesus. Awakened at an early hour he realized this was just some kind of petty argument among the Jews. In the process of his conversation and deliberations with Jesus, Pilate quickly saw that this man had done nothing wrong, certainly nothing that deserved death, so he devises a plan.

It had been a Roman custom for some time to appease the Jews by releasing to them a particular prisoner during Passover time. "Now it was the governor's custom at the Feast to release a prisoner chosen by the crowd. At that time they had a notorious prisoner, called Barabbas. So when the crowd had gathered, Pilate asked them, 'which one do you want me to release to you: Barabbas, or Jesus who is called Christ?' For he knew it was out of envy that they had handed Jesus over to him." (Matthew 27:15-18)

We know precious little about Barabbas. Mark and Luke tell us that he had helped lead a failed insurrection against the Roman government and that he had been guilty of murder. Pilate thought that he was appealing to the Jews' sense of morality. He knew how badly they hated the

कि मैं खाई में आदमी नहीं हूँ। फिर उनमें से किसी का भी कोई मतलब नहीं है। लेकिन अगर हम स्पष्ट रूप से ईमानदार हैं, तो मेरा क्या है और मैं इसे रखने जा रहा हूँ, इस बारे में यह रवैया हम में से अधिकांश समय का वर्णन करता है।

6. जो मेरा है वह तुम्हारा है और मैं उसे देने जा रहा हूँ।

सामरी रुक गया, उसने दया महसूस की, उसने मदद की, वह अतिरिक्त मील गया और उसने पीछा किया। बाद वाला वह रवैया और दृष्टिकोण है जिसके लिए हम बुलाए गए हैं। "अपने पड़ोसियों से खुद जितना ही प्यार करें।" जो मेरा है वह तुम्हारा है, और मैं इसे देने जा रहा हूँ।

कैन अब एक मिनट रुकिए, कानून के विशेषज्ञ कहते हैं, "आप कहाँ रेखा खींचते हैं? मेरा मतलब है कि आप हर किसी को, हर जगह अपने प्यार की पूरी हद तक प्यार नहीं कर सकते। आपको इस पड़ोसी में कितनी दूर जाना है?" व्यापार? खुद को सही ठहराने की कोशिश में उसने पूछा "मेरा पड़ोसी कौन है?" आप देखते हैं कि वह खुद को सही ठहराने का एकमात्र तरीका इस कानून को सीमित करना था। बस वह पड़ोसी कौन है जिसे मैं प्यार करने वाला हूँ? फिर यीशु ने इसके लिए आधार निर्धारित किया पूरा दृष्टांत। मुझे पता है कि आप कहानी से प्यार करते हैं और उसकी सराहना करते हैं, लेकिन मैं वास्तव में यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि आप इसका सार देखें। उस आदमी ने एक सवाल पूछा, "मेरा पड़ोसी कौन है?" यीशु ने उससे एक और सवाल पूछकर जवाब दिया। उसने कहा प्रश्न यह नहीं है कि तुम्हारा पड़ोसी कौन है, प्रश्न यह है कि तुम्हारे पड़ोसी का पड़ोसी कौन है? यीशु ने कहा कि मैं तुमसे यह प्रश्न पूछ रहा हूँ, "क्या आप अपने पड़ोसी का पड़ोसी बनना चाहते हैं?" क्या आप सबसे अप्रिय लोगों से भी प्यार करने को तैयार हैं? जैसे एक सामरी एक यहूदी से प्यार करता है या इसके विपरीत। या, शायद उस ड्रग एडिक्ट से प्यार करना जिसने आपसे झूठ बोला है और आपसे चोरी की है या शायद उस आदमी से प्यार करना जो कचरे से भरी बीट-अप कार में रुकता है और वह हैंड-आउट की तलाश में है। आपके पेट के गड्ढे में, आपको यह एहसास हुआ है कि वह वास्तव में आपका फायदा उठाने की कोशिश कर रहा है। यह वास्तव में आपका फायदा उठाने की कोशिश कर रहा है। यह वास्तव में आपका फायदा उठाने की कोशिश कर रहा है।

क्या आप अलग-अलग त्वचा के रंग वाले व्यक्ति से प्यार करने को तैयार हैं? क्या आप अपने से अलग विश्वास वाले व्यक्ति से प्यार करने को तैयार हैं? क्या आप वास्तव में किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करने को तैयार हैं जिसकी राय आपसे अलग है? क्या आप एड्स से पीड़ित साथी से प्यार करने को तैयार हैं? क्या आप एक चोर से प्यार करने को तैयार हैं? उस सामरी की तरह, क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करने को तैयार हैं जो आपसे घृणा करता है? वे काफी कठिन प्रश्न हैं। देखिए, मुझे नहीं लगता कि सिर्फ वकील को खुद को सही ठहराने की जरूरत थी, है ना? सच कहा जाए तो, यदि हम अपनी अधिकांश दैनिक यात्राओं की जाँच करें, तो हम यह प्रश्न पूछना चाह सकते हैं, "मेरा पड़ोसी कौन है?"

Roman government, but surely, surely they wouldn't condone murder. Since Jesus had been guilty of no real crime and just a week earlier he had been quite popular when he came into the city with cries of 'Hosanna! Hosanna! Pilate thought that surely the crowd would request his release. But much to his surprise and dismay they cried, "Give us Barabbas, Give us Barabbas." It's Pilate's next question that's the focus of our study. In fear and anger and confusion, he asked "What shall I do, then, with Jesus who is called Christ?"

Pilate didn't realize it, but he was asking a question marked much larger than himself, much larger than its time. As long as men live, Pilate will be remembered as the man through whom life's central question is asked. "What shall I do with Jesus who is called the Christ?"

Notice the first person pronoun: What shall I do with Jesus? There are very few things in life that are inescapable. The old adage says, "Death and taxes are the only thing." No that's not right, there are precious few more and Jesus is one of those. For 2,000 years, he has been the central character of human history and because Jesus is at the heart of the universe, he is at the core of every human's agenda. The one truth about Jesus Christ that everyone agrees upon is this: He cannot be ignored. As the centuries have rolled by, men have answered him with love, some with contempt, some with scorn, others with disdain, some with astonishment, some with denial and some with affection, but all have answered. The biography of Jesus closes with these words, he says, "Lo, I am with you always even unto the end of the world."

Jesus Christ is still alive. He is not the figment of some imagination or the product of a fairy tale. He is not just a historical man. He is not the surprise founder of one of the world's great religions. He is alive. He is just at home here as he was in Capernaum. He is the same yesterday, today, and forever. If you let that sink in, then the question that Pilate asked years ago is just as pertinent and just as important today as it was then.

The question of whether Jesus was to live or die was more than a matter of concern for a Jewish Sanhedrin or a Roman procurator. No, the question of whether Jesus must live or die is answered in the heart, mind, of every man and in every woman. What will you do with this Jesus who is called Christ? You can look at that Crucifixion scene and you can see the specific choices in the lives and on the faces of hosts of characters there. Let me share with you four of those choices.

1. Choose truth or tradition.

Truth or tradition was the issue facing the chief priest and the Pharisees. In fact, this issue was the primary reason there was a cross. The Jews had been looking for a Messiah for centuries. It had been prophesied all the way through the Old Testament. Every day Jewish families by the

वास्तव में, शायद आप अभी पूछ रहे हैं, "आप ऐसा कैसे करते हैं?" क्या यह सिर्फ कुछ पागल आदर्श है? क्या यह उन नैतिक बातों में से एक है जो वास्तव में कोई नहीं करता है लेकिन प्रचार किया जाना अच्छा लगता है? क्या यह मृगतृष्णा जैसा है? मुझे ऐसा नहीं लगता। मेरा मानना है कि यह वास्तविक है, और मेरा मानना है कि यह संभव है और मेरा मानना है कि हर दिन जब हम मसीह में बढ़ते हैं तो हम अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर सकते हैं। लेकिन ऐसा करने के लिए, हमें इस दृष्टान्त को देखना होगा क्योंकि इसमें जो कुछ भी है वह सब कुछ है। यह दृष्टान्त एक कहानी से अधिक है। यह एक तस्वीर है। मुझे लगता है कि यह हमारी तस्वीर है। याद रखें हर दृष्टान्त के पीछे उन लोगों के लिए एक छिपा हुआ आध्यात्मिक अर्थ है जो इसे प्राप्त करने के इच्छुक हैं। मुझे लगता है कि यीशु चाहते थे कि उनका वकील इस दृष्टान्त को भगवान के सामने उनकी तस्वीर के रूप में देखे और वह चाहते हैं कि हम भी वही देखें।

कहानी में आप कौन हैं? आप कौन हैं? क्या तुम डाकू हो? मुझे आशा नहीं है। क्या आप पुजारी हैं? क्या आप लेवी हैं? सच बताओ। क्या आप वास्तव में सोचते हैं कि आप अच्छे सामरी हैं? क्या यह आपके जीवन की विशेषता है जब आप हर दिन सड़क पर गाड़ी चलाते हैं? क्या आपको पता है कि आप कौन हैं? तुम खाई में लूटे गए आदमी हो। आप सड़क के किनारे वाले हैं जिस पर शैतान ने हमला किया है। उसने तुम्हें पाप से पीटा है और तुम वहाँ मरने जा रहे हो जब तक कि कोई आकर तुम्हें बचा न ले। वे सभी चीजें जो हम सोचते हैं कि हमें गड़ढ़े से बाहर खींच लेंगी जैसे हमारा पैसा, हमारी चतुराई, हमारा अच्छा रूप और हमारी उपलब्धियां हमें पीछे छोड़ देंगी और हमें वहीं गड़ढ़े में छोड़ देंगी। क्या आप जानते हैं कि हमें क्या चाहिए? हमें एक सामरी की जरूरत है। वैसे, क्या आप जानते हैं कि दृष्टान्त में सामरी वास्तव में कौन है? जरा एक मिनट सोचिए। कौन है तिरस्कृत, नकारा और नफ़रत जो अब भी मरती हुई मानवता को बचाने के लिए नीचे पहुँचता है? यह सही है, यह यीशु है।

उस नेक सामरी की तरह और अधिक बनने की कुंजी और हमारे दिलों में करुणा के एक पूरे नए दृष्टिकोण को खोलने के लिए: यह अपने आप को खाई में मरते या मरे हुए देखना है यदि परमेश्वर ने आपको बचाया नहीं होता। अब उस यहूदी वकील से अपने आप को वहाँ नहीं देखा गया। उसने लोगों को वैसे ही देखा जैसे हम में से अधिकांश लोग करते हैं। उसने उन्हें दो सूचियों में तोड़ दिया, क) वे जो मुझसे बेहतर हैं और ख) वे जो मुझसे बेहतर हैं। मुझसे बेहतर लोगों की सूची बहुत छोटी है। लगभग हर गैलप पोल से पता चलता है कि अधिकांश अमेरिकी मानते हैं कि वे स्वर्ग जा रहे हैं। यह पूछे जाने पर कि अब तक नंबर एक का जवाब क्यों है, "ठीक है, मैं बहुत अच्छा इंसान हूँ।" देखें, अमेरिका में हमें नहीं लगता कि हमें एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है, हमें नहीं लगता कि हमें एक क्रॉस या मसीह के प्रायश्चित लहू की आवश्यकता है। मुझे सिर्फ यह जानने की जरूरत है कि मैं ज्यादातर लोगों से बेहतर हूँ और मैंने खुद को अच्छी तरह से आश्वस्त किया है कि मैं हूँ। वह'

thousands prayed for the coming of the Messiah but they supposed he would be some great military and governmental genius. They were looking for a new Moses or a Joshua or a David. They were looking for someone who was strong, a military genius on a white horse behind a chariot. He would lead the great forces to a conquest over the Romans. In other words, they were looking for what they wanted, not what God had proclaimed.

So in the fullness of time the Messiah came and he was hardly what they expected. Born in an animal stall there was no aroma of royalty, no political connections, no pedigree or no formal training. Why he wasn't even Judean, he was from Galilee. His closest friends smelled like fish and he kept the company of tax collectors and prostitutes. The masses loved him. They loved him because he loved them and because he spoke simple truths. He was truth but the "powers that be" expected tradition. To tamper with tradition is to always court the cross.

In Matthew 15 at the beginning of that chapter, Jesus condemned their little tradition that they had set up so Jewish people had neglect the care of their own parents by pledging their estates to the temple. Concluding in verse 6 some scathing remarks, "you have made void the word of God by your petty little traditions." In Matthew 23, he called the chief priests and Pharisees whited sepulchers "you're all painted on the outside, but inside you're full of dead men's bones."

Truth or tradition, it's a timeless issue, a timeless choice. The Pharisees were looking for what they wanted, not what God proclaimed and so do many of us. Over the centuries, denominations, sect, cults and groups and their leaders have painted pictures of Jesus that bear little resemblance to the real Son of God. During that same period individuals by the millions who never read a Bible, were telling you "Well my idea of God is..." or "I've always thought of Jesus as..." Just another way of choosing tradition over truth. Hear me. God does not honor perception. If he did, the Pharisees would have been fine. What God honors is truth.

What will you do with the real Jesus? Will you make him what you want him to be? Or, will you mold your life to who he is?

2. *The choice of Christ or the crowd?*

This was the choice that was specifically faced Peter. It's ironic that the crucifixion of Jesus was propelled by an angry crowd, a senseless mob. It's ironic because all throughout his ministry, Jesus was very popular with the crowds. The great Sermon on the Mount, the reason he was on a mountain is because he needed that amphitheater to be able to proclaim his message to such a huge host of people. (Matthew 5-7) Jesus took a handful of food and fed 5,000 men plus women and children. (Matthew 14) Zacchaeus climb up into a tree because he couldn't see, the crowd was

हम अपने पड़ोसी के पड़ोसी होने के कारण संघर्ष करते हैं क्योंकि हम उस खाई में अपनी समानता नहीं देखते हैं। हम यह नहीं समझ सकते कि परमेश्वर हमें असहाय, लहलुहान, मरते हुए और बचाए जाने की आवश्यकता के रूप में देखता है। जब तक हम उस दिल का जवाब नहीं देंगे जो हमारे लिए धड़कना बंद कर देता है, तब तक हमारे पास करुणा का दिल नहीं होगा।

शमौन, फरीसी, ने एक रात यीशु को खाने पर बुलाया। साइमन एक उचित आदमी था, उसने एक उचित पार्टी का आयोजन किया, उसने सभी उचित चीजें कीं लेकिन गली की एक महिला चली आई। जब मैं कहता हूँ कि वह गली की महिला थी, तो मेरा मतलब यह नहीं है कि वह वहीं रहती थी, मेरा मतलब है वहीं उसने काम किया और आप जानते हैं कि मेरा क्या मतलब है। उसने जो पहला काम किया, वह उस पार्टी में शामिल हो गई जो अनुचित थी। फिर उसने अपने बाल कटवा लिए, जो कि अनुचित भी था। उसने यीशु के सामने अपना तमाशा बनाया, जो अनुचित था। शमौन ने सोचा कि यदि यह व्यक्ति भविष्यद्वक्ता होता तो वह यह सब अनौचित्य बरदाश्त नहीं करता। (ल्यूक 7)

यीशु ने उसके मन की बात जानकर कहा, "शमौन, मैं तुझे एक कहानी सुनाना चाहता हूँ।" साइमन ने कहा, "मुझे शिक्षक बताओ।" उसने कहा, "एक बार दो आदमी थे और उन पर एक साहूकार का कर्ज था। उनमें से एक के पास 500 दीनार थे और उनमें से एक के पास 50 दीनार थे। साहूकार ने दोनों को माफ कर दिया। यीशु ने कहा, 'शमौन, मुझे तुमसे कुछ पूछने दो, जो तुम्हें क्या लगता है कि वह कौन था जो साहूकार से सबसे अधिक प्रेम करता था?' शमौन ने कहा, "ठीक है, मुझे लगता है कि यह वही था जिसने उसका सबसे अधिक ऋणी था।" यीशु ने कहा, "यह सही है।" उसने कहा, "जब मैं आया अपने घर में, शमौन, तुमने मेरे पैर नहीं धोए। लेकिन वह अपने आँसुओं से मेरे पैर धो रही है। जब मैं तुम्हारे घर आया, तो तुमने मुझे एक चुंबन नहीं दिया (यह आतिथ्य का संकेत था); उसने मेरे पैर चूमना बंद नहीं किया है। जब मैं तेरे घर आया, तब तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला। उसने मेरे पूरे पैरों पर इत्र डाला है। उसने कहा, "साइमन, वह मुझसे बहुत प्यार करती है क्योंकि उसे बहुत क्षमा किया गया है।" इसके बाद उन्होंने सिमोन को जिंजर से मारा। उसने कहा, "परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।" इतना ही!

अगर मैं अच्छे सामरी के बारे में हमारे दृष्टांत में इसका अनुवाद कर सकता हूँ, तो जो सोचता है कि वह कभी खाई में नहीं गया है, उसमें से बहुत कम लोग निकलते हैं। अगर हम कभी खुद को खाई में पड़े आदमी के रूप में देखते हैं, तो यह एक छोटे से अच्छे दृष्टान्त से अधिक हो जाता है जो हमें चर्च के बाद एक घंटे के लिए किसी के लिए कुछ अच्छा करने के लिए प्रेरित करेगा। अगर हम कभी खुद को खाई में देखते हैं, तो यह जीवन के लिए एक संपूर्ण पैटर्न बन जाता है।

तीन तरीके हैं जो आपके पूरे विचार को बदल देते हैं।

4. अब आप दुश्मनों को नहीं देखते, आप दुश्मन के पीड़ितों

too great. (Luke) Just seven days earlier when he came to Jerusalem they were putting palm leaves down in his path crying out "Hosanna to the Son of God." In fact it was because of the crowd that Jesus lived as long as he did.

About two-thirds of the way through his ministry "the Pharisees said to one another, 'See, this is getting us nowhere. Look the whole world has gone after him!'" (John 12:19) Many times in the gospels, the crowds were ready to crown him king. But Jesus will never be crowned by a crowd. He is either enthroned or dethroned in the heart of each individual.

Do you remember how Peter followed at a distance after Jesus' arrest? He stood by a campfire warming himself and three different times he denied knowing the Lord. Why was that? It's a silly question, isn't it? It doesn't take a rocket scientist to figure it out. It was not the politically-correct position at that moment. There might have very well been a fourth cross on that hill called Calvary. At the very least it would have brought about surely a severe beating, Christ or the crowd? Peter took the crowd.

After the Resurrection, after Jesus saw him face to face and told him how much he loved him, after Jesus forgave him, after the Pentecost seven weeks later, after the coming of the Holy Spirit and after the coming of his church, that same Peter is such a force for Christianity, he's called in before those same leaders. He's threatened with his very life and they say, "Peter, what are you going to do?" The bottom line is he's got the same question again. Christ or the crowd? To his credit, this time Peter looks them squarely in the eyes and if you'll allow the paraphrase, he said, "I'll take the Christ, thank you." (Acts 4-5)

Every day you face the same question and so do I. The crowd is very fickle. We say America is a Christian nation. That's not supposing that the majority of Americans ever were Christians, but the Judeo-Christian ethic was everything that this country stood for, admired and valued. Today, quite frankly, being a Christian is generally viewed as being uncool, ignorant and politically incorrect. About the only thing that our society is intolerant of is for somebody who believes there is such a thing as absolute truth. It is totally unacceptable for somebody to stand up and say "I agree with Jesus that he is the way, the truth and the life. No you don't get to heaven any other way, only by him." How about you? Are you salt and light to a dying world? Or, do you choose like Peter to stand by your own little campfire, afraid and unnoticed?

3. Conscience or Caesar?

Pilate knew that this man was innocent, certainly innocent of any offense which would mandate execution. So when bombarded by accusations regarding this man as a traitor, Pilate called him inside and asked Jesus, "Are you a King?" Jesus looked calmly and said, "You've said it correctly, but my kingdom is not of this world." After their conversation,

को देखते हैं।

5. कोई समस्या नहीं है, लेकिन समस्या वाले लोग।
6. अब आप देखते हैं तो आपको दया नहीं आती है, लेकिन आप करुणा महसूस करते हैं। दया उस आदमी को खाई में देख रही है और कह रही है, "मुझे खुशी है कि मैं उस खाई में नीचे नहीं हूँ।" लेकिन करुणा उस खाई में नीचे देख रही है और कह रही है, "मैं वहाँ था और मैं अब भी वहाँ हो सकता हूँ सिवाय भगवान की कृपा के।" देखिए, जब हम खुद को सड़क के किनारे एक आदमी के रूप में देखते हैं, तभी हम दया के मंत्री बनेंगे।

लोगों को यह कहने के लिए धमकाना काफी नहीं है, "बाहर जाओ और मदद करो। बाहर जाओ और मदद करो। बाहर जाओ और मदद करो।" आप ऐसा कर सकते हैं, लेकिन सीमित समय के लिए ही। लेकिन जब मेरा दिल मौलिक रूप से बदल जाता है, यह जानकर कि यीशु सामरी था जिसने मुझे खाई से बाहर निकाला, मैं अपना शेष जीवन उन हाथों की तलाश में बिताऊंगा जिन तक मैं पहुंच सकता हूँ। दोस्तों, आप देखिए मैंने पाया कि यह सच है कि आपके हाथ कुछ अच्छे काम कर सकते हैं बिना हृदय परिवर्तन के, बहुत से नहीं, बल्कि कुछ। लेकिन जब भी दिल वास्तव में परिवर्तित होता है तो हाथ हमेशा मदद कर रहे होते हैं।

जब यीशु ने इस कहानी को समाप्त किया, तो उसने कहा, "बाहर जाओ और क्या, इसी तरह?" क्या उसने कहा, "इसी रीति से निकलकर प्रचार करो?" "बाहर जाओ और सोचो, इसी तरह?" "बाहर जाओ और याद करो, इसी तरह?" उन्होंने कहा, "बाहर जाओ और इसी तरह करो।"

मैंने एक बुजुर्ग महिला के बारे में एक कहानी सुनी जो अचानक आई बाढ़ में एक अंडरपास के नीचे फंस गई थी। दरवाजों में पानी आ गया था। वह बूढ़ी थी और वह उस पानी में निकलने से भी डरती थी जो उसकी जांघों तक होता, शायद उसे थो देता। वह कांप रही थी। एक साथी एक बड़े चार-पहिया ड्राइव में ओवरपास के ऊपर से गुजर रहा था और नीचे नज़र उसे देखने को मिली। वह रुका, उसे पार्क में रखा, बाहर कूदा और वहाँ देखा। वह देख सकता था कि वह सिर्फ डरा हुआ था। उसने कहा, "मैडम, क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?" और मुझे उसकी प्रतिक्रिया पसंद है। काँपते हुए उसने कहा, "वहाँ से नहीं।" मैं आपको कुछ कहना चाहता हूँ। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम ऊपर से लोगों की मदद करें। परमेश्वर चाहता है कि हम खाई में पड़े लोगों की मदद करें क्योंकि हम वहाँ रहे हैं।

जब तक मैं जीवित रहा, तब तक एक चीज जो मेरे मन में रही वह है मर्ती 25 में न्याय का दृश्य। क्या आपको भेड़ और बकरियों का दृष्टांत याद है? भेड़ें दाहिनी ओर और बकरियाँ बाईं ओर कैसे जाती हैं? वह भेड़ों से कहेगा, "मैं भूखा था और तुमने मुझे खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया। मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए। मैं बीमार था और जेल में था और तुम आए और मुझसे मिलने आए।" वह बकरियों से कहेगा, "मैं तो ये सब कुछ था, और तुम ने कुछ नहीं किया।" तब वह दाहिनी ओर वालों से

Pilate knew Jesus was no rebel. He was no insurrectionist or zealot. He wondered why this man was even appearing before him in the first place.

Matthew gives us a parenthetical note by recording "while Pilate was sitting on his judge's seat, his wife sent him this message, 'don't have anything to do with that innocent man for I have suffered a great deal today in a dream because of him.'" (Matthew 26:19) So Pilate made the decision, the initial decision to release him. As the Jews saw that decision unfolding and their plot being foiled, John the apostle records their response. "From then on, Pilate tried to set Jesus free, but the Jews kept shouting, 'If you let this man go, you are no friend of Caesar's. Anyone who claims to be a king opposes Caesar.'" (John 19:12) BAM! Do you know what that was? That was the sound of the door slamming on Jesus. That was the sound of the deciding blow.

For over a quarter of a century Judea had become a testing ground for future leadership in Rome. Like the old song says, "If you could make it there, you could make it anywhere." If a Roman procurator could stay there three or four years and appease the Jews and keep all things quiet, he would head back to Rome for a political promotion. If he couldn't make it there, he just kind of wandered off into obscurity. When Pilate heard those words, "If you are this man's friend, you are no friend of Caesar's." He could immediately picture word getting back to Caesar that here was a man, Pilate, who was opposing a group that was an offshoot of the Jews, somebody that was causing an insurrection; maybe it was going to be a lot of trouble. Pilate said, "What will it be, conscience or Caesar?" He chose Caesar.

We have the same choice. Our Caesar is that power, authority or influence, whose approval we think we need so desperately. Maybe it's your boss at work who holds the raise and promotion in one hand and a pink slip in the other asking you to compromise your integrity. It's the V.I.P. whose favor we think we must have and millions of times each day integrity is compromised, conviction is diluted and sometimes the pocketbook valued. Caesar is served, and Christ is crucified.

4. Submission or self.

Let's look at one more character in the crucifixion drama, a man by the name of Judas Iscariot. I believe in his heart we find the basic struggle and decision of life. I'm convinced that many people have a totally wrong impression of who Judas is. Most of us picture him totally and constantly as being some diabolical villain who wore a black hat, kept a cape over his face, hid in the shadows and was just the epitome of evil all of his life. I don't believe that's true. I believe that when Jesus went out to find 12 men, 12 apostles, he chose the best men that he could find and Judas was one of them. Educated and a Judean, he was probably

कहेगा, "आओ, तुम पिता के धन्य लोगों में आओ," परन्तु उन से जो छोड़ दिया, "मुझसे विदा हो।"

मैं बहुत सी ऐसी चीजों से चकित हूँ जो हमें विशेष रूप से महत्वपूर्ण लगती हैं जिनका उन्होंने उल्लेख भी नहीं किया। वह कलीसिया में उपस्थिति के बारे में एक शब्द भी नहीं कहता है, है ना? वह सिद्धांत के बारे में एक शब्द नहीं कहता। वह हमारे पहनावे के बारे में एक शब्द भी नहीं कहते। गलत मत समझिए, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वे सभी चीजें महत्वपूर्ण नहीं हैं, खासकर पहली दो। यदि आप मुझे बिल्कुल जानते हैं, तो आप जानते हैं कि मुझे लगता है कि वे अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सबसे पहली बात जो मैं पवित्रशास्त्र में देखता हूँ कि परमेश्वर हम में से प्रत्येक के बारे में जानना चाहता है "क्या तुम अपने पड़ोसी के पड़ोसी थे?" क्या आपके पास एक ऐसा हृदय था जो परिवर्तित हो गया था और क्या आप खाई से बाहर निकलने के लिए लोगों की तलाश कर रहे थे?

मैं आशा और प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने आप को देखें कि आप वास्तव में कहां हैं। आप या तो खाई में हैं या आप वहां रहे हैं। यदि आप एक ईसाई नहीं हैं, तो आप अभी गड्ढे में हैं और आप वहीं मरने वाले हैं, जब तक कि आप यीशु को आपको बाहर निकालने नहीं देते। सुसमाचार की आज्ञाकारिता में आओ, उसके नाम को स्वीकार करो जहां सभी सुन सकते हैं और यीशु के लहू से अपने पापों को धो सकते हैं जो पानी के बपतिस्मा के माध्यम से उसके साथ गाड़ा जा रहा है ताकि मसीह में एक नए जीवन के लिए पुनरुत्थित किया जा सके। तुम्हारा पाप पूरी तरह से क्षमा कर दिया जाएगा। उसने आपको पाप की खाई से बाहर निकाला है। उसने आपको अन्य गड्ढों में रहने वालों की तलाश करने के लिए भी नियुक्त किया है। जब तक आपको याद रहेगा कि आप कहां थे, आप उन्हें दाएं और बाएं खींच रहे होंगे। वैसे, इसी तरह से परमेश्वर का राज्य बढ़ता है। अमेज़िंग ग्रेस #1275 स्टीव फ्लैट 4 अगस्त 1996

अध्याय 4

मैं मसीह के साथ क्या करूँ?

वाकया शुक्रवार सुबह तड़के का है। यीशु का नेतृत्व सैनिकों और याजकों के एक अजीबोगरीब मिश्रण द्वारा किया गया था, जो गेथसेमेन नामक एक बगीचे से रोमन महायाजक नियुक्त किए गए कैफा के घर तक गया था। कुछ समय के बाद वह वास्तविक यहूदी महायाजक हन्ना के पास बंद कर दिया गया, और फिर कैफा के पास वापस आ गया। उन दो महायाजकों ने फैसला किया है कि इस आदमी को मरना चाहिए, लेकिन उनके पास ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था, केवल रोमन न्यायाधीश ही एक आदमी को मौत की सजा दे सकता था। सो वे उसे पुन्तियुस पीलातुस के पास ले आए। यीशु के साथ मुलाकात के अलावा दुनिया ने कभी भी पीलातुस नाम के एक छोटे से रोमन गवर्नर को याद नहीं किया होगा। तड़के जगने पर उसने महसूस किया कि यह यहूदियों के बीच किसी तरह का मामूली विवाद था। यीशु के साथ अपनी बातचीत और विचार-विमर्श की प्रक्रिया में पीलातुस ने तुरंत देखा

the most qualified and best prepared of the 12. No, Judas' fate and his reputation came about as the result of a wrong decision in the ageless struggle, the choice of sovereignty, the choice over who rules. God or self.

As time passed, Judas became a shock witness of the outcome of his deeds. As he listens to the angry howls of this lynch mob, his heart begins to break. I don't think he bargained on the cross. So as Jesus is led up that hill; panic-stricken he sought to undo the deal by returning the blood money. He runs and throws it at the chief priests' feet. In their hypocrisy, those who paid it wouldn't take it back. Stricken by a wounded conscience, he mistakenly sought to undo the deed by turning to a hangman's noose.

Tell me, have you ever stopped to think if Judas could not live without the Christ, why didn't he choose to live for him? The answer is simple. He had no intention of living without Jesus. He wanted to take him, but not too seriously. He wanted to keep Jesus and lose nothing, in fact even gain 30 pieces of silver. He was willing to follow Jesus, but on his own terms, it was conditionally. He wanted that middle ground. Judas sought to cling to Christ in one hand and 30 pieces of silver in the other. That choice is still there. God or self? One of them has to be crucified.

Paul said what is at the very heart of the whole gospel message, "I am crucified with Christ, nevertheless I live, yet not I, but Christ lives in me." (Galatians 2:20) You can confess and be baptized, but until you make the decision in your heart to crucify self and let Christ reign, you will not know the joy and the fruit of Christianity.

Do you know who the most miserable people in the world are? Growing up, I was always told it was the sinners, those who were out there living the lascivious life, partying and having a high time. But they are not the most miserable people in the world. Don't misunderstand. Eventually what they involve themselves in will catch up to them. It's a hollow life which leads to emptiness. It leads to total rejection and dejection. But they aren't the most miserable people in the world. The most miserable people in the world are the ones like Judas who stand on that middle ground and try to hold on to the cross in one hand and the world with the other. By straddling that divide, that nobody can straddle, they're constantly torn apart inside. Submission or self, that's what you've got to answer when you face the question, what shall I do with Jesus who is called the Christ.

Isn't it amazing? Pilate asked that question almost 2,000 years ago and yet it still echoes through the years. The basic choices, truth or tradition, Christ or the crowd, conscience or Caesar and submission or self are all still there. What's your decision? What will you do with this Jesus who is called the Christ?

Sadly, when the crowd heard that question, they under the leadership of the chief priests and the Pharisees, started to

कि इस व्यक्ति ने कुछ भी गलत नहीं किया है।

कुछ समय के लिए यह एक रोमी रीति थी कि फसह के समय में एक विशेष बंदी को रिहा करके यहूदियों को खुश किया जाता था। "प्रभु के समय राज्यपाल की यह रीति थी कि वह भीड़ के चुने हुए बन्धु को छोड़ देता था। उस समय बरअब्बा नाम का एक कुख्यात बन्धु था। सो जब भीड़ इकट्ठी हो गई, तो पीलातुस ने उन से पूछा, तुम मुझे किस के वश में करना चाहते हो? तुम्हारे लिए छोड़ दो: बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है? क्योंकि वह जानता था, कि उन्होंने यीशु को डाह से पकड़वा दिया है।" (मत्ती 27:15-18)

हम बरअब्बा के बारे में बहुत कम जानते हैं। मार्क और ल्यूक हमें बताते हैं कि उसने रोमन सरकार के खिलाफ एक असफल विद्रोह का नेतृत्व करने में मदद की थी और वह हत्या का दोषी था। पीलातुस ने सोचा कि वह यहूदियों की नैतिकता की भावना को आकर्षित कर रहा है। वह जानता था कि वे रोमन सरकार से कितनी बुरी तरह नफरत करते थे, लेकिन निश्चित रूप से, निश्चित रूप से वे हत्या को माफ नहीं करेंगे। चूंकि यीशु किसी वास्तविक अपराध का दोषी नहीं था और केवल एक सप्ताह पहले जब वह शहर में आया तो होसन्ना! होसन्ना! पीलातुस ने सोचा कि निश्चय ही भीड़ उसकी रिहाई की विनती करेगी। परन्तु उसके बहुत आश्चर्य और विस्मय के कारण वे चिल्ला उठे, "हमें बरअब्बा दो, हमें बरअब्बा दो।" यह पीलातुस का अगला प्रश्न है जो हमारे अध्ययन का केंद्र बिंदु है। भय और क्रोध और भ्रम में, उसने पूछा "तो मैं यीशु के साथ क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?"

पीलातुस को इसका एहसास नहीं था, लेकिन वह एक ऐसा सवाल पूछ रहा था जो अपने आप से बहुत बड़ा था, अपने समय से बहुत बड़ा। जब तक मनुष्य जीवित रहेगा, पीलातुस को उस व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा जिसके माध्यम से जीवन का केंद्रीय प्रश्न पूछा जाता है। "मैं यीशु के साथ क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?"

पहले व्यक्ति सर्वनाम पर ध्यान दें: मैं यीशु के साथ क्या करूँ? जीवन में बहुत कम चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें टाला नहीं जा सकता। पुरानी कहावत कहती है, "मौत और कर ही एक चीज है।" नहीं, यह सही नहीं है, कुछ और कीमती हैं और यीशु उनमें से एक है। 2,000 वर्षों से, वह मानव इतिहास का केंद्रीय चरित्र रहा है और क्योंकि यीशु ब्रह्मांड के केंद्र में है, वह प्रत्येक मानव के एजेंडे के मूल में है। यीशु मसीह के बारे में एक सच्चाई जिस पर सभी सहमत हैं वह यह है: उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है। जैसे-जैसे शताब्दियां बीतती गईं, पुरुषों ने उन्हें प्यार से, कुछ ने तिरस्कार से, कुछ ने तिरस्कार से, दूसरों ने तिरस्कार से, कुछ ने विस्मय से, कुछ ने इनकार से और कुछ ने स्नेह से उत्तर दिया, लेकिन सभी ने उत्तर दिया। यीशु की जीवनी इन शब्दों के साथ समाप्त होती है, वे कहते हैं, "देखो, मैं जगत के अंत तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।"

ईसा मसीह अभी जीवित हैं। वह किसी कल्पना की उपज या किसी परीकथा की उपज नहीं है। वह सिर्फ एक ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं हैं। वह दुनिया के महान धर्मों में से एक के आश्चर्यजनक संस्थापक

chant "Crucify Him, crucify Him, crucify Him!" I hope your response is different. Jesus said in Matthew 10:32, "Whoever confesses me before men, the same will I confess before the Father." He said in Mark 16:16, "He that believes and is baptized will be saved, he that believes not will be condemned."

Today, that most important question is before you. "What will you do with Jesus who is called the Christ?" If you have never answered that in the larger sense, if you've never said, "I know he is the Son of God, I'll confess that, I'll confess it right now, then now is the time. I want to be baptized, symbolically burying my old sinful self into a watery grave to be raised to walk in a newness of life." I hope your answer will not be like the crowd by saying "crucify him again. Crucify him again."

Those of you who have committed your life to Christ, would you examine those four basic choices that are wrapped up within that question? Would you look deep within your heart and ask yourself am I painting a picture of a Jesus I want or am I following the truth? Am I really listening to the siren call of the crowd or am I standing firm in a dying world that needs someone who will stand? Ask yourself the question, is my conscience leading me or am I bowing before some Caesar somewhere? Finally, have I surrendered to him? Or, are you really calling your own shots. Were you once faithful in Christ but now need to recommit, to ask God to forgive you once again as he's willing to do and to receive the strength from that cross to get up and walk again with the true self. Then today is the day for that commitment. Don't delay. Today is the day for salvation. Amazing Grace #1277 Steve Flatt August 25, 1996

Chapter 5

Where Did the Ax Head Fall?

A at first glance this question might not be considered one of the greatest questions ever asked or any significance or implications to your life. But by the time we're finished, perhaps, you will see some things that are extremely important in your walk with God.

Elisha is the great prophet in Israel, the successor to his mentor, Elijah. Elisha has begun a school for future prophets. It has grown to the point that their present facility was too small. So they've gone to a new site and begun clearing land for the new facility.

"The company of the prophets said to Elisha, 'Look, the place where we meet with you is too small for us. Let us go to the Jordan, where each of us can get a pole; and let us build a place there for us to live.' And he said, 'Go.' Then one of them said, 'Won't you please come with your servants?' 'I will,' Elisha replied. And he went with them. They went to the Jordan and began to cut down trees. As

नहीं हैं। वह जीवित है। वह जैसे कफरनहूम में था वैसे ही यहां घर में है। वह कल, आज और युगानुयुग एक सा है। यदि आप उसे डूबने देते हैं, तो पीलातुस ने वर्षों पहले जो प्रश्न पूछा था, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक और उतना ही महत्वपूर्ण है जितना तब था।

यह प्रश्न कि यीशु को जीवित रहना है या मरना है, एक यहूदी महासभा या एक रोमी न्यायाधीश के लिए चिन्ता का विषय था। नहीं, यीशु को जीवित रहना है या मरना है, इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक स्त्री के हृदय, मन और मस्तिष्क में दिया गया है। तुम इस यीशु के साथ क्या करोगे जो मसीह कहलाता है? आप उस क्रूसीफिक्शन के दृश्य को देख सकते हैं और आप जीवन में और पात्रों के मेजबानों के चेहरों पर विशिष्ट विकल्प देख सकते हैं। मैं आपके साथ उन चार विकल्पों को साझा करता हूँ।

6. सत्य या परंपरा चुनें.

मुख्य पुजारी और फरीसियों के सामने सच्चाई या परंपरा का मुद्दा था। वास्तव में, यह मुद्दा एक क्रॉस होने का प्राथमिक कारण था। यहूदी सदियों से एक मसीहा की तलाश में थे। पूरे पुराने नियम में इसकी भविष्यवाणी की गई थी। हर दिन हजारों की संख्या में यहूदी परिवार मसीहा के आने के लिए प्रार्थना करते थे लेकिन उन्हें लगता था कि वह कोई महान सैन्य और सरकारी प्रतिभा होगा। वे एक नए मूसा या यहोशू या दाऊद की तलाश कर रहे थे। वे किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहे थे जो मजबूत हो, एक रथ के पीछे एक सफेद घोड़े पर एक सैन्य प्रतिभा हो। वह रोमनों पर विजय प्राप्त करने के लिए बड़ी ताकतों का नेतृत्व करेगा। दूसरे शब्दों में, वे वह खोज रहे थे जो वे चाहते थे, न कि वह जिसे परमेश्वर ने घोषित किया था।

इसलिए समय की पूर्णता में मसीहा आया और वह शायद ही वह था जिसकी उन्होंने अपेक्षा की थी। एक पशु स्टाल में पैदा हुआ था, वहां कोई रॉयल्टी की सुगंध नहीं थी, कोई राजनीतिक संबंध नहीं था, कोई वंशावली नहीं थी या कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं था। वह यहूदी भी क्यों न था, वह गलील का था। उसके सबसे करीबी दोस्तों की महक मछली की तरह थी और वह महसूल लेनेवालों और वेश्याओं का साथ रखता था। जनता उससे प्यार करती थी। वे उससे प्रेम करते थे क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था और क्योंकि वह सरल सत्य बोलता था। वह सत्य थे लेकिन "शक्तियाँ जो हैं" अपेक्षित परंपरा। परंपरा से छेड़छाड़ करना हमेशा क्रूस पर चढ़ना है।

उस अध्याय की शुरुआत में मती 15 में, यीशु ने उनकी छोटी परंपरा की निंदा की, जिसे उन्होंने स्थापित किया था ताकि यहूदी लोगों ने मंदिर के लिए अपनी संपत्ति को गिरवी रखकर अपने माता-पिता की देखभाल की उपेक्षा की हो। पद्य 6 में कुछ कठोर टिप्पणियों को समाप्त करते हुए, "आपने अपनी छोटी-छोटी परंपराओं से ईश्वर के वचन को व्यर्थ कर दिया है।" मती 23 में, उसने महायाजकों और फरीसियों की सफेदी वाली कब्रों को बुलाया, "तुम सब ऊपर से तो रंगे हुए हो, परन्तु भीतर मुर्दे की हड्डियों से भरे हुए हो।"

one of them was cutting down a tree, the iron ax head fell into the water, 'Oh, my lord,' he cried out, 'it was borrowed!' The man of God asked, 'Where did it fall?' When he showed him the place, Elisha cut a stick and threw it there, and made the iron float. 'Lift it out,' he said. Then the man reached out his hand and took it." (2 Kings 6:1-6)

Most of us haven't spent a lot of time as lumberjacks, but you can picture the scene. Most of the men have handled an ax at one time or another and you know that the centripetal force from swinging that ax over and over again eventually loosens the ax head. So as this young seminarian lumberjack began to swing away, on one swing, the ax head loosened to the point that it flew off the handle and into the river. It's a simple story, and in it the prophet asked a very simple question. In verse six, he inquires, "Where did the ax head fall?"

From that question, I want to make a spiritual application. Much more can be learned than the fact that one day a long time ago, he made a piece of iron float. The God who created a trillion galaxies and who put everything on the face of this earth, who came to this earth in the form of His Son, who healed the sick and cured the lepers, who made the lame to walk, the God who is going to come back again and melt all of creation in a fervent fire, didn't need to go out of his way to show me that a five-pound piece of iron could float. No, I think this ax head stands for something.

The ax head represents the **POWER GOD WANTS TO CHANNEL THROUGH YOUR LIFE**. In other words, the ax head represents the tools that God places in your hands to effectively do his work. This young seminarian lumberjack, like the Christian today, was applying his presence and his effort to do something worthwhile for God. But he found out that without an ax head, the presence and the effort weren't enough. You don't cut down trees without the ax head being in place and being sharp. I think this lesson is going to hit home with lots of folks today.

The very fact that you are reading this lesson indicates where your interest and your efforts are. But how many trees are you felling for God? How productive are you in your Christian life? How satisfied are you right now with the fruit of your labor? See many Christians just like this young student. They've lost their ax head. They're not what they could be. They're not what they should be. In many cases, they're not even what they used to be. There's a lot of effort expended, but such little fruit received. Oh, they still go through the motions, still swing and swing and swing and rub elbows with real lumberjacks. They talk about the days when the trees used to fall. That was something, but not many trees are falling for them now. No fruit, no power, no joy, they've lost the ax head.

It reminds me of a story I heard about a young lumberjack who went into a camp as a rookie. The first day, he was

सत्य या परंपरा, यह एक कालातीत मुद्दा है, एक कालातीत विकल्प। फरीसी वही खोज रहे थे जो वे चाहते थे, न कि वह जो परमेश्वर ने घोषित किया था और ऐसा ही हम में से बहुत से करते हैं। सदियों से, संप्रदायों, संप्रदायों, पंथों और समूहों और उनके नेताओं ने यीशु के चित्रों को चित्रित किया है जो कि परमेश्वर के वास्तविक पुत्र से बहुत कम समानता रखते हैं। उसी अवधि के दौरान लाखों लोगों ने जो कभी बाइबिल नहीं पढ़ते थे, आपको बता रहे थे "ठीक है, भगवान के बारे में मेरा विचार है ..." या "मैंने हमेशा यीशु के बारे में सोचा है ..." सच्चाई पर परंपरा को चुनने का एक और तरीका। मेरी बात सुनो। भगवान धारणा का सम्मान नहीं करता है। यदि वह करता, तो फरीसी ठीक होते। परमेश्वर जिसका सम्मान करता है वह सत्य है।

आप वास्तविक यीशु के साथ क्या करेंगे? क्या आप उसे वैसा बनाएंगे जैसा आप उसे बनाना चाहते हैं? या, क्या आप अपना जीवन उसके अनुसार ढालेंगे जो वह है?

7. मसीह या भीड़ की पसंद?

यह वह विकल्प था जिसका विशेष रूप से पीटर के सामने सामना हुआ था। यह विडम्बना है कि जीसस को सूली पर चढ़ाने के लिए क्रोधित भीड़, एक संवेदनहीन भीड़ ने प्रेरित किया। यह विडम्बना है क्योंकि अपनी पूरी सेवकाई के दौरान, यीशु भीड़ के बीच बहुत लोकप्रिय थे। पर्वत पर महान उपदेश, वह एक पहाड़ पर था, इसका कारण यह था कि उसे उस अखाड़े की आवश्यकता थी जो लोगों के इतने बड़े समूह को अपना संदेश सुनाने में सक्षम हो। (मत्ती 5-7) यीशु ने मुट्ठी भर भोजन लिया और 5,000 पुरुषों और स्त्रियों और बच्चों को खिलाया। (मत्ती 14) जक्कई एक पेड़ पर चढ़ गया क्योंकि वह देख नहीं सकता था, भीड़ बहुत अधिक थी। (लूका) केवल सात दिन पहले जब वह यरूशलेम आया तो वे उसके मार्ग में खजूर के पत्ते डाल रहे थे और पुकार रहे थे, "परमेश्वर के पुत्र को होशाना।" वास्तव में यह भीड़ के कारण ही था कि यीशु जब तक जीवित रहा, तब तक जीवित रहा।

उसकी सेवकाई के लगभग दो-तिहाई रास्ते में "फरीसियों ने आपस में कहा, 'देखो, यह हमें कुछ नहीं दिलाता। देखो, सारा जगत उसके पीछे हो लिया है!'" (यूहन्ना 12:19) कई बार सुसमाचारों में, भीड़ उसे राजा का ताज पहनाने के लिए तैयार थी। लेकिन यीशु को कभी भीड़ द्वारा ताज नहीं पहनाया जाएगा। वह प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में या तो विराजमान है या विराजमान है।

क्या आपको याद है कि यीशु की गिरफ्तारी के बाद पतरस कैसे दूर से उसके पीछे-पीछे गया था? वह अलाव के पास खड़ा होकर ताप रहा था और तीन अलग-अलग बार उसने प्रभु को जानने से इन्कार किया। ऐसा क्यों था? यह एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न है, है ना? इसका पता लगाने के लिए किसी रॉकेट वैज्ञानिक की जरूरत नहीं है। यह उस समय राजनीतिक रूप से सही स्थिति नहीं थी। हो सकता है कि उस पहाड़ी पर कलवरी नाम का एक चौथा क्रॉस रहा हो। कम से कम यह निश्चित रूप से एक गंभीर पिटाई लाता, मसीह या भीड़? पीटर ने भीड़ को संभाला।

पुनरुत्थान के बाद, जब यीशु ने उसे आमने-सामने देखा और उसे

prepared, ready and gung ho when he went out. All day long he worked up in the great northwest and by the end of the day he had felled 20 huge trees. When he got back in camp around that campfire, he was bragging about how well he did. One of the veteran lumberjacks put his arm around him and said, "You know I believe 20 might be a first day record for a rookie." He continued "Top men around here do 30 trees a day. You keep it up, I believe in a short period of time, you'll be right there." The next day that rookie lumberjack eager to impress, got up 15 minutes earlier, he cut 15 minutes off his lunch hour, he pounded and hammered and sawed away. Finally, when he finished at the end of the day, only 18 trees had been felled. He was rather depressed. He said, "I'll get up 30 minutes earlier tomorrow, I'll work all the way through my lunch hour." The third day, only 16 trees had fallen. By the end of the week, he was down to about a dozen. Swallowing his pride, he kind of moped his way into camp and he talked to that veteran lumberjack and said, "I don't understand." He said, "The harder I try, the be-hinder I get." The veteran lumberjack asked, "Have you taken the time to sharpen your ax head?" The young man looked up, rolled his eyes, sighed and said, "No. I didn't take time to sharpen the ax head because I had so much to do."

Folks, I believe if God were to lean over right now and whisper something in many of our ears, something he would whisper in the ears of preachers, elders, deacons, Bible school teachers, counselors and ministry workers, he would whisper, "Have you taken the time to sharpen your ax head?" He might even ask, "Have you taken time to see if it's still in place?" Have we just keep swinging and swinging and wondering why we're not getting anywhere.

See if we've lost the ax head or if the ax has become dull, our work becomes very difficult because it's not designed to be that way. If you've lost the ax head, the joy of fruitfulness for God is ebbed. Your prayer life becomes stagnant. The zealotness, the earnestness is gone. The joy of being in Christ, which is supposed to be like a fountain welling up inside of us, just dries up. We don't see any fruit.

I thought about another story I read about some time ago at a university in the northwest. It involved lumberjacks as well, it was a study on motivation. The psychology department took two groups of lumberjacks. They paid one group of men the same price that they had been making, the same wage, to just go what they had always done—just chop down trees. The second group was told "We want you to use the flat edge, the blunt edge of the axe but we'll pay you twice your regular wage. We just want you to pound it against the tree, just keep going. Do it as long as you want; we'll pay you double wages." The test group using the blunt edge of the axe had all quit within half a day. As the last lumberjack from that test group was walking away, he was shaking his head. In his exit interview he said, "Money, or

बताया कि वह उससे कितना प्यार करता है, यीशु द्वारा उसे क्षमा करने के बाद, सात सप्ताह बाद पिन्तेकुस्त के बाद, पवित्र आत्मा के आने के बाद और उसकी कलीसिया के आने के बाद, वही पतरस ईसाइयत के लिए एक ऐसी ताकत है, उसे उन्हीं नेताओं के सामने बुलाया गया है। उसे अपनी जान का खतरा है और वे कहते हैं, "पीटर, तुम क्या करने जा रहे हो?" लब्बोलुआब यह है कि उसे फिर से वही सवाल मिला है। मसीह या भीड़? अपने श्रेय के लिए, इस बार पतरस ने उन्हें स्पष्ट रूप से आँखों में देखा और यदि आप व्याख्या की अनुमति देंगे, तो उन्होंने कहा, "मैं मसीह को लूंगा, धन्यवाद।" (अधिनियम 4-5)

हर दिन आप और मैं एक ही सवाल का सामना करते हैं। भीड़ बहुत चंचल है। हम कहते हैं कि अमेरिका एक ईसाई राष्ट्र है। यह नहीं माना जा रहा है कि अधिकांश अमेरिकी कभी ईसाई थे, लेकिन जूदेव-ईसाई नैतिकता वह सब कुछ थी जिसके लिए यह देश खड़ा था, प्रशंसा और मूल्यवान था। आज, बिल्कुल स्पष्ट रूप से, एक ईसाई होने को आमतौर पर मूर्ख, अज्ञानी और राजनीतिक रूप से गलत के रूप में देखा जाता है। हमारा समाज केवल एक चीज के बारे में असहिष्णु है, जो किसी ऐसे व्यक्ति के लिए है जो मानता है कि पूर्ण सत्य जैसी कोई चीज है। किसी के लिए खड़े होना और यह कहना पूरी तरह से अस्वीकार्य है कि "मैं यीशु से सहमत हूँ कि वह मार्ग, सत्य और जीवन है। नहीं, आप किसी अन्य तरीके से स्वर्ग तक नहीं पहुंच सकते, केवल उसके द्वारा।" आप कैसे हैं? क्या आप एक मरती हुई दुनिया के लिए नमक और प्रकाश हैं? या, क्या आप पीटर की तरह अपने छोटे से कैम्प फायर के पास खड़े होना चुनते हैं,

8. विवेक या सीज़र?

पीलातुस जानता था कि यह आदमी निर्दोष है, निश्चित रूप से किसी भी अपराध से निर्दोष है जो मृत्युदंड को अनिवार्य करेगा। सो जब उस पर देशद्रोही होने का दोष लगाया गया, तो पीलातुस ने उसे भीतर बुलाकर यीशु से पूछा, क्या तू राजा है? यीशु ने शांति से देखा और कहा, "आपने इस सही कहा है, लेकिन मेरा राज्य इस दुनिया का नहीं है।" उनकी बातचीत के बाद पीलातुस जान गया कि यीशु विद्रोही नहीं था। वह कोई विद्रोही या उत्साही नहीं था। उसने सोचा कि यह आदमी उसके सामने पहले स्थान पर क्यों आ रहा है।

मैथ्यू हमें रिकॉर्ड करके एक कोष्ठकीय नोट देता है "जब पीलातुस अपने न्यायाधीश की सीट पर बैठा था, तो उसकी पत्नी ने उसे यह संदेश भेजा, 'उस निर्दोष व्यक्ति के साथ कुछ लेना-देना नहीं है क्योंकि मैंने आज सपने में बहुत दुख उठाया है। उसे।'" (मत्ती 26:19) सो पीलातुस ने निर्णय लिया, उसे रिहा करने का प्रारंभिक निर्णय। जब यहूदियों ने देखा कि निर्णय सामने आ रहा है और उनकी साजिश विफल हो रही है, प्रेरित यूहन्ना ने उनकी प्रतिक्रिया दर्ज की। "उस समय से पीलातुस ने यीशु को छुड़ाने का यत्न किया, परन्तु यहूदी चिल्लाने लगे, 'यदि तू इस मनुष्य को जाने देगा, तो तू कैसर का मित्र नहीं; जो कोई राजा होने का दावा करता है, वह कैसर का विरोध करता है।'" (यूहन्ना 19:12)) बेम! क्या आप जानते हैं कि वह क्या था? वह दरवाजे की यीशु पर पटकने की

no money, this is no fun. When I swing the ax, I have to see the chips fly." A lot of us become worn and tired and weary and even bored because we're swinging the ax, but we're not seeing the chips fly. No fruit, no results, no joy.

Some simple observations from the story of the ax head

1. *The ax head was borrowed.*

It wasn't the property of the one who was using it. "As one of them was cutting down a tree, the iron ax head fell into the water 'Oh, my lord,' he cried out, 'it was borrowed!'" (2 Kings 6:5) What need to understand that our spiritual ax head, that cutting edge that God wants us to have, is the power we have to minister joyfully to others, the power that we are going to have to teach others to share our faith with Christ, the power that God is going to give us to overcome temptation and the power that we are going to have to lead our families in a righteous way. It's not a personal power. It is a God-given power. It is borrowed in a sense. You don't work up this power through psychology or build it up through your own willpower. It's a divine power that comes from Jesus Christ and his spirit living in you. It's a gift from God. It's not your power or my power, it's God's power.

Some Jews had returned home to Israel from Babylonian captivity eager to rebuild their temple. Just like a lot of us, they got started, laid the foundation and then they got tired. They lost their ax head. For 16 years, not one stone was turned as they left the foundation in place. Zechariah was a prophet sent back when the Jews had been released from Babylonian captivity. He said, "We can't just stop with the foundation, let's start building the temple." The people were all discouraged saying, "It was hard work just to do the foundation. We don't think we can ever build the whole temple." God told Zechariah "So God said to me ...'Not by might nor by power, but by my spirit,' says the Lord Almighty." (Zechariah 4:6) God told Zechariah, your arms aren't strong enough, your minds aren't smart enough, your hearts aren't courageous enough and your plans aren't good enough. If the temple is ever rebuilt, it will be because my Spirit causes it to happen.

The Spirit of God is the keen, sharp edge of the ax head. That's the difference. The power that you have to resist temptation, to share your faith or to influence your family for Christ, it's not a power created by your own energy, it is the gift you receive when you came to Christ. It's a borrowed power. Don't dare lose sight of it, ignore it or lose it. If we lose it trying to take on this world without God's power through his Holy Spirit, it's like trying to fell a great redwood by beating it with the ax handle. You get nowhere fast. It's a borrowed power.

2. *The ax head was lost.*

While he was working the ax head slipped off the handle and fell into the water. It was lost. Where do we lose our spiritual ax heads in our walk with God? Has anybody ever lost it in the waters of worldliness? Has anybody swung it

आवाज थी। वह निर्णायक प्रहार की आवाज थी।

एक सदी के एक चौथाई से अधिक के लिए यहूदिया रोम में भविष्य के नेतृत्व के लिए एक परीक्षण स्थल बन गया था। जैसे पुराना गाना कहता है, "यदि आप इसे वहां बना सकते हैं, तो आप इसे कहीं भी बना सकते हैं।" यदि कोई रोमन न्यायाधीश वहां तीन या चार साल रह सकता है और यहूदियों को खुश कर सकता है और सब कुछ शांत रख सकता है, तो वह राजनीतिक प्रचार के लिए रोम वापस आ जाएगा। अगर वह वहां नहीं पहुंच पाया, तो वह एक तरह से गुमनामी में भटक गया। जब पीलातुस ने ये शब्द सुने, "यदि तुम इस मनुष्य के मित्र हो, तो कैसर के मित्र नहीं।" वह तुरंत सीज़र के पास वापस आने वाले शब्द को देख सकता था कि यहाँ एक आदमी पीलातुस था, जो एक समूह का विरोध कर रहा था जो यहूदियों की एक शाखा थी, कोई ऐसा जो विद्रोह का कारण बन रहा था; शायद बहुत परेशानी होने वाली थी। पीलातुस ने कहा, "यह क्या होगा, विवेक या कैसर?" उसने सीज़र को चुना।

हमारे पास एक ही विकल्प है। हमारा सीज़र वह शक्ति, अधिकार या प्रभाव है, जिसकी स्वीकृति हमें लगता है कि हमें इतनी सख्त जरूरत है। हो सकता है कि काम पर आपका बॉस ही हो, जिसके एक हाथ में वेतन वृद्धि और पदोन्नति हो और दूसरे हाथ में गुलाबी पर्ची हो, जो आपको अपनी सत्यनिष्ठा से समझौता करने के लिए कह रही हो। यह वी आई पी है जिसका पक्ष हमें लगता है कि हमारे पास होना चाहिए और प्रत्येक दिन लाखों बार ईमानदारी से समझौता किया जाता है, दृढ़ विश्वास कमजोर होता है और कभी-कभी पॉकेटबुक मूल्यवान होता है। सीज़र की सेवा की जाती है, और मसीह को क्रूस पर चढ़ाया जाता है।

9. *सबमिशन या स्व*

आइए सूली पर चढ़ने के नाटक में एक और चरित्र को देखें, यहूदा इस्कैरियट नाम का एक व्यक्ति। मैं उनके दिल में विश्वास करता हूँ कि हम जीवन के मूल संघर्ष और निर्णय को पाते हैं। मुझे विश्वास है कि बहुत से लोगों को यहूदा के बारे में पूरी तरह से गलत धारणा है कि यहूदा कौन है। हम में से अधिकांश उसे पूरी तरह से और लगातार किसी शैतानी खलनायक के रूप में चित्रित करते हैं जिसने एक काली टोपी पहनी थी, अपने चेहरे पर एक केप रखा था, छाया में छिपा हुआ था और जीवन भर बुराई का प्रतीक था। मुझे विश्वास नहीं होता कि यह सच है। मेरा मानना है कि जब यीशु 12 पुरुषों, 12 प्रेरितों को खोजने के लिए निकले, तो उन्होंने सबसे अच्छे पुरुषों को चुना जो उन्हें मिल सकते थे और यहूदा उनमें से एक था। शिक्षित और एक यहूदी, वह शायद 12 में से सबसे योग्य और सबसे अच्छा तैयार था। नहीं, यहूदा का भाग्य और उसकी प्रतिष्ठा युगहीन संघर्ष में एक गलत निर्णय के परिणाम के रूप में आई, संप्रभुता का चुनाव, कौन शासन करता है इस पर चुनाव। ईश्वर या स्वयं।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, यहूदा अपने कर्मों के परिणाम का एक चौंका देने वाला गवाह बन गया। जैसे ही वह इस लिंग भीड़ के गुस्से को सुनता है, उसका दिल टूटने लगता है। मुझे नहीं लगता कि उसने क्रॉस पर सौदेबाजी की। इसलिए जैसे यीशु को उस

in the rivers of ritual? Has anybody lost your ax head in the creek of criticism? Did it fly off into the pond of prayerlessness, or the stream of secularism? Is your ax head in the swamp of self-satisfaction? It can go any number of places. But if we have lost it, what are we going to do about it? There's nothing sadder than losing the power that God wants his servant to have. The ax head was lost.

3. *There was a concern over its lost.*

As soon as he realizes it was gone, Elisha's helper cried out, "Oh, my lord." He was distressed. I venture to say that there's not a one of us whose walk with God hasn't had at one time or another to go look for their ax head. There are times that we've got to stop and re-check our priorities. When we realize something is missing we've got to repent and we've got to start again. If you've never done that, I suggest that you start looking for your ax head because you've lost it and don't know it. You see there's concern when it's lost. It thrills me that this fellow was greatly disturbed over losing it.

Too many times we go through religious rituals, go through the activities and say the right things, act the right way, we've got it so down pat and we don't even realize we've lost the ax head. We don't expect anything great from God and we don't ask anything great from Him. If the biggest thing we ask from God is to bless our meals, then it's possible for us to go through life and to lose that power and not even know it.

It's not what is done for God that matters nearly as much as what is done by God through us. I think we miss that point a lot of times. We all want to do something for God, but that's not nearly as important as what's done by God. So many times we substitute activity for productivity. We say, "Well, I've done this for God, I've done that for God or I've gone over there for God." We need to stop and ask: "Have I done it in and with the power of God?"

Activity isn't always productivity. We stay busy doing things, things for the church and things for other people. But, we also need to stop and ask: "Am I doing things for God, or is God doing things through me?" The former is good, but the latter is much better. The former, doing things for God, creates activity. But the latter, lets God creates productivity. Productivity occurs when the ax head is in place and sharp. I don't want to pray, "God, bless what I am doing." I want to pray, "God, show me what you're doing, and make sure I'm in that blessing."

4. *The ax head was found where it was lost.*

When the helper said, "My lord, I've lost the ax head and it's borrowed," the man of God (that's Elisha) asked, "Where did it fall?" When he showed him the place, Elisha cut a stick and threw it there and made the iron float." Now folks, I know it's simple, but look at this. The ax head was found right where it was lost. Spiritually, that's the same way it is with our walk with God. If you've lost your spiritual ax

पहाड़ी पर चढ़ाया जाता है; घबराए हुए उसने खून के पैसे लौटाकर सौदे को रद्द करने की कोशिश की। वह दौड़कर उसे महायाजकों के चरणों में फेंक देता है। उनके पाखंड में, जिन्होंने भुगतान किया, वे इसे वापस नहीं लेंगे। एक घायल अंतरात्मा से त्रस्त होकर, उसने गलती से एक जल्लाद के फंदे में बदल कर काम को पूर्ववत करने की कोशिश की।

मुझे बताओ, क्या तुमने कभी यह सोचना बंद किया है कि यदि यहूदा मसीह के बिना नहीं रह सकता था, तो उसने उसके लिए जीना क्यों नहीं चुना? उत्तर सीधा है। उसका यीशु के बिना जीने का कोई इरादा नहीं था। वह उसे लेना चाहता था, लेकिन बहुत गंभीरता से नहीं। वह यीशु को रखना चाहता था और कुछ खोना नहीं चाहता था, यहाँ तक कि चाँदी के 30 टुकड़े भी प्राप्त करना चाहता था। वह यीशु का अनुसरण करने के लिए तैयार था, लेकिन अपनी शर्तों पर, यह सशर्त था। वह वह मध्य मैदान चाहता था। यहूदा ने एक हाथ में मसीह और दूसरे हाथ में चाँदी के 30 टुकड़े पकड़ने की कोशिश की। वह विकल्प अभी भी है। भगवान या स्वयं? उनमें से एक को सूली पर चढ़ाना पड़ता है।

पौलुस ने वही कहा जो पूरे सुसमाचार संदेश के मर्म में है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, तौभी मैं जीवित हूँ, तौभी मैं नहीं, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है।" (गलतियों 2:20) आप स्वीकार कर सकते हैं और बपतिस्मा ले सकते हैं, लेकिन जब तक आप अपने दिल में खुद को क्रूस पर चढ़ाने और मसीह को शासन करने देने का निर्णय नहीं लेते, तब तक आप ईसाई धर्म के आनंद और फल को नहीं जान पाएंगे।

क्या आप जानते हैं कि दुनिया में सबसे दुखी लोग कौन हैं? बड़े होने पर, मुझे हमेशा कहा जाता था कि ये पापी हैं, जो बाहर कामुक जीवन जी रहे थे, पार्टी कर रहे थे और मौज-मस्ती कर रहे थे। लेकिन वे दुनिया के सबसे दुखी लोग नहीं हैं। गलत मत समझो। आखिरकार वे जिस चीज में खुद को शामिल करते हैं, वह उन्हें पकड़ लेगी। यह एक खोखला जीवन है जो खालीपन की ओर ले जाता है। यह कुल अस्वीकृति और निराशा की ओर ले जाता है। लेकिन वे दुनिया के सबसे दुखी लोग नहीं हैं। दुनिया में सबसे दुखी लोग यहूदा की तरह हैं जो उस बीच की जमीन पर खड़े होते हैं और एक हाथ में क्रॉस और दूसरे हाथ से दुनिया को थामने की कोशिश करते हैं। उस विभाजन को फैलाकर, जिसे कोई नहीं फैला सकता, वे अंदर ही अंदर लगातार टूटते जा रहे हैं। सबमिशन या स्वयं, जब आप प्रश्न का सामना करते हैं तो आपको इसका उत्तर देना होता है,

क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? पीलातुस ने लगभग 2,000 साल पहले यह सवाल पूछा था और फिर भी यह वर्षों से गूँज रहा है। बुनियादी विकल्प, सत्य या परंपरा, मसीह या भीड़, विवेक या कैसर और अधीनता या स्वयं सभी अभी भी हैं। आपका निर्णय क्या है? तुम इस यीशु के साथ क्या करोगे जो मसीह कहलाता है?

दुख की बात है कि जब भीड़ ने उस प्रश्न को सुना, तो वे मुख्य याजकों और फरीसियों के नेतृत्व में, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे

head this morning, you're going to find it in the same place you lost it.

Remember the parable of the Prodigal Son? Where did the boy go to find the ax head? He went right back where he left it. He left it at home when he walked out and went to a far country. When he came to himself, he went home and there it was. Do you know where some of you need to go to find your ax head? Some of you need to go get your dusty Bible off the shelf and read it. Some of you need to go to that quiet place you had one time. You need to get on your knees and pray again because it's been a long time. That's where you left your ax head. Some of you need to return to your spouse.

Matthew 18 says, "Sometimes, we left our ax head with another brother." It doesn't have to be in your immediate family. Reconcile with a brother before you worship. Why? Because until you do, you've lost your ax head. You've lost your source of spiritual power. Some of us just need to humble ourselves before God, the Father, because our stubborn pride has sapped away our spiritual power. "Where did you lose it?" That's where it's going to be found. I don't know where you've left your ax head, but you know where it was. Go there, that's where you will find it.

5. *The one who lost it had to be the one who retrieved it.*

After it was floating, Elisha looked at the man and said, "Lift it out." Then the man reached out his hand and took it." You say, "What's the significance of that?" You are responsible for your ax head. No one can relieve you of that.

You see the prophet said, "You go in the water and pick it up for yourself." The good news is, if you make that determination, that's exactly what you can do. To me one of the most amazing concepts in all Scripture is that God gives us the power to choose. God has chosen only to use human beings to accomplish his will for the most part. Incredibly, he gives us the power of choice to determine how much power from him is going to be channeled through us. Yet, by one thought, word or choice, we determine whether any power will go through us. As long as you choose to let the ax head stay in the water, that's where it will stay. If you choose to pick it up. God can bless your life in a mighty way. Amazing Grace #1274 Steve Flatt, July 28, 1996

Chapter 6

Where is the Lamb?

We're going to travel to one of the most remarkable and emotional scenes in all of human history. God gives Abraham an incredibly bizarre command. "Some time later God tested Abraham. He said to him, 'Abraham!' 'Here I am,' he replied. Then God said, 'Take your son, your only

कूस पर चढ़ाओ, उसे कूस पर चढ़ाओ!" मुझे उम्मीद है कि आपकी प्रतिक्रिया अलग होगी। मत्ती 10:32 में यीशु ने कहा, "जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं पिता के साम्हने मान लूंगा।" उसने मरकुस 16:16 में कहा, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, और जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।"

आज वह सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न आपके सामने है। "आप यीशु के साथ क्या करेंगे जो मसीह कहलाता है?" यदि आपने कभी इसका उत्तर बड़े अर्थों में नहीं दिया है, यदि आपने कभी नहीं कहा है, "मैं जानता हूँ कि वह परमेश्वर का पुत्र है, मैं इसे स्वीकार करूँगा, मैं इसे अभी स्वीकार करूँगा, तो अब समय आ गया है। मैं चाहता हूँ बपतिस्मा लेने के लिए, प्रतीकात्मक रूप से अपने पुराने पापी स्व को पानी की कब्र में दफनाना ताकि जीवन के नएपन में चलने के लिए उठाया जा सके। मुझे उम्मीद है कि "उसे फिर से सूली पर चढ़ा दो। उसे फिर से सूली पर चढ़ा दो" कहकर तुम्हारा उत्तर भीड़ की तरह नहीं होगा।

आप में से जिन्होंने अपना जीवन मसीह को सौंप दिया है, क्या आप उन चार बुनियादी विकल्पों की जाँच करेंगे जो उस प्रश्न में लिपटे हुए हैं? क्या आप अपने दिल की गहराई में देखेंगे और खुद से पूछेंगे कि क्या मैं उस यीशु की तस्वीर बना रहा हूँ जिसे मैं चाहता हूँ या क्या मैं सत्य का पालन कर रहा हूँ? क्या मैं वास्तव में भीड़ की मोहिनी पुकार सुन रहा हूँ या क्या मैं एक मरती हुई दुनिया में अडिग खड़ा हूँ जिसे किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो खड़ा हो? अपने आप से प्रश्न पूछें, क्या मेरा विवेक मेरा नेतृत्व कर रहा है या मैं कहीं किसी सीज़र के सामने झुक रहा हूँ? अंत में, क्या मैंने उसके सामने आत्मसमर्पण कर दिया है? या, क्या आप वास्तव में अपने स्वयं के शॉट्स बुला रहे हैं। क्या आप एक बार मसीह में विश्वासयोग्य थे, लेकिन अब आपको फिर से प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है, कि आप परमेश्वर से एक बार फिर से क्षमा करने के लिए कहें, जैसा कि वह करने के लिए तैयार है और उस क्रॉस से शक्ति प्राप्त करने के लिए उठने और सच्चे स्व के साथ फिर से चलने के लिए। तो आज का दिन उस प्रतिबद्धता का दिन है। देर मत करो। अमेज़िंग ग्रेस #1277 स्टीव फ्लैट 25 अगस्त 1996

अध्याय 5

कुल्हाड़ी का सिर कहाँ गिरा?

पहली नज़र में इस प्रश्न को अब तक पूछे गए सबसे महान प्रश्नों में से एक या आपके जीवन के लिए कोई महत्व या निहितार्थ नहीं माना जा सकता है। लेकिन जब तक हम समाप्त कर लेंगे, शायद, आप कुछ चीजें देखेंगे जो परमेश्वर के साथ आपके चलने में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

एलीशा इस्राएल में महान भविष्यद्वक्ता है, जो अपने गुरु एलियाहा का उत्तराधिकारी है। एलीशा ने भविष्य के नबियों के लिए एक पाठशाला शुरू की है। यह इस बिंदु तक बढ़ गया है कि उनकी

son, Isaac, whom you love, and go to the region of Moriah. Sacrifice him there as a burnt offering on one of the mountains I will tell you about." (Genesis 22:1-2)

Now folks, that seems bizarre to us, but there is no way that we can begin to adequately appreciate how it impacted Abraham. We're going to study more about this in a moment, but remember Abraham and Sarah had been childless. He waited more than a quarter of a century for this child. It was a promised child. Another thing you may not appreciate is that when God called Abraham to go into this land of Canaan, all of the Canaanite people were child-sacrificing people. I've stood at Megiddo and saw the round altar where the Canaanites who lived at Megiddo sacrificed their little children. There's another altar outside the gates of Jericho, the same thing. Jehovah God was the only God of antiquity who said, "No! Human life is precious to me. Don't you dare shed man's blood." Now, God wants the wonder boy sacrificed!

But despite a lack of understanding, Abraham responded with obedient faith. Early the next morning Abraham got up and saddled his donkey. He gathered the servants, took Isaac and left. When they came to the foot of Mount Moriah, Abraham told the servants to stay while he and Isaac ascended the mountain to worship. The question that we're going to consider came as the two of them started up that mountainside.

"Abraham took the wood for the burnt offering and placed it on his son Isaac and he himself carried the fire and the knife. As the two of them went on together, Isaac spoke up and said to his father Abraham, 'Father?' 'Yes, my son?' Abraham replied. 'The fire and wood are here,' Isaac said, 'but where is the lamb for the burnt offering?' (Genesis 22:6-7)

Can you imagine? If ever a question cut into a man's heart, this was it. That boy who had worshipped so many times with his father automatically knew what was missing. The boy who so loved and so trusted his dad that the last possibility to cross his mind was that his would be the throat that would be slit and his would be the blood to flow over the woods. That boy with innocent eyes looked into his father's and said, "Where is the Lamb?" Obviously, Isaac was asking more than he knew. God was calling his father, Abraham, to sacrifice more than he ever had before.

I think Genesis 22:1 is one of the great understatements in the Bible. Do you see how it began? Sometime later God tested Abraham. Test? Test? This is a final exam. This is the sounding out of the depths of a man's soul. Isaac was the most precious thing in Abraham's life. I've already told you that Abraham and Sarah had been childless through all their marriage and when God called him to make a covenant with him, Abraham was 75 years old and Sarah was 65. God says, "Don't worry, I'm going to make your descendants more numerous than the stars in the sky." The

वर्तमान सुविधा बहुत छोटी थी। इसलिए वे एक नई साइट पर गए हैं और नई सुविधा के लिए जमीन की सफाई शुरू कर दी है।

"भविष्यद्वक्ताओं के दल ने एलीशा से कहा, 'सुन, वह स्थान जहां हम तुझ से मिले वह हमारे लिथे छोटा है; सो हम यरदन तक जाएं, जहां हम में से हर एक के लिथे एक एक खम्भा हो जाए, और वहां हम अपने रहने के लिथे एक स्थान बना लें। हमें जीने के लिए। और उसने कहा, 'जाओ।' तब उनमें से एक ने कहा, 'क्या आप कृपया अपने सेवकों के साथ नहीं चलेंगे?' एलीशा ने उत्तर दिया, 'मैं चाहता हूँ।' और वह उनके साथ चला गया। वे यरदन के पास गए और पेड़ों को काटने लगे। उनमें से एक के रूप में एक पेड़ काट रहा था, लोहे की कुल्हाड़ी पानी में गिर गई, 'हे मेरे प्रभु, 'वह चिल्लाया,' यह उधार लिया गया था।' परमेश्वर के जन ने पूछा, 'वह कहाँ गिरा?' जब उस ने उसे वह स्थान दिखाया, तब एलीशा ने एक लकड़ी काटकर वहां फेंकी, और लोहा तैराया, और उस ने कहा, 'उसे उठा ले,' तब उस मनुष्य ने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया। (2 राजा 6:1-6)

हम में से अधिकांश ने लंबरजैक के रूप में बहुत समय नहीं बिताया है, लेकिन आप इस दृश्य को देख सकते हैं। अधिकांश पुरुषों ने एक समय या किसी अन्य पर एक कुल्हाड़ी को संभाला है और आप जानते हैं कि उस कुल्हाड़ी को बार-बार झूलने से केन्द्रापसारक बल अंततः कुल्हाड़ी के सिर को ढीला कर देता है। इसलिए जैसे ही यह युवा सेमिनारियन लकड़हारा झूलने लगा, एक झूले पर, कुल्हाड़ी का सिरा इतना ढीला हो गया कि वह हैंडल से उड़कर नदी में जा गिरा। यह एक साधारण कहानी है, और इसमें भविष्यवक्ता ने एक बहुत ही सरल प्रश्न पूछा है। छठे पद में, वह पूछता है, "कुल्हाड़ी का सिरा कहाँ गिरा था?"

उस प्रश्न से, मैं एक आध्यात्मिक प्रयोग करना चाहता हूँ। इस बात से कहीं अधिक सीखा जा सकता है कि बहुत समय पहले एक दिन उसने लोहे के एक टुकड़े को तैराया। वह परमेश्वर जिसने एक खरब आकाशगंगाएँ बनाईं और जिसने सब कुछ इस पृथ्वी पर रखा, जो अपने पुत्र के रूप में इस पृथ्वी पर आया, जिसने बीमारों को चंगा किया और कोढ़ियों को चंगा किया, जिसने लंगड़ों को चलने दिया, परमेश्वर जो फिर से वापस आने और सारी सृष्टि को एक प्रचंड आग में पिघलाने के लिए, मुझे यह दिखाने के लिए अपने रास्ते से हटने की ज़रूरत नहीं थी कि पाँच पाउंड का लोहे का टुकड़ा तैर सकता है। नहीं, मुझे लगता है कि यह कुल्हाड़ी सिर कुछ के लिए खड़ा है।

कुल्हाड़ी का सिर उस शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिसे परमेश्वर आपके जीवन में प्रवाहित करना चाहता है। दूसरे शब्दों में, कुल्हाड़ी का सिर उन उपकरणों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें परमेश्वर अपना काम प्रभावी ढंग से करने के लिए आपके हाथों में देता है। यह युवा सेमिनारियन लकड़हारा, आज के ईसाई की तरह, अपनी उपस्थिति और परमेश्वर के लिए कुछ सार्थक करने के अपने प्रयास को लागू कर रहा था। लेकिन उसने पाया कि बिना कुल्हाड़ी के सिर के, उपस्थिति और प्रयास पर्याप्त नहीं थे। आप बिना कुल्हाड़ी के सिर और तेज होने के बिना पेड़ों

problem was, they didn't even have a child. So, what does God do? I'm sure Sarah, had they been available, would be taking a home pregnancy test every morning. God made them wait 25 more years! When they were old enough to be great, great, great grandparents, Abraham was 100 and Sarah was 90, God fulfilled the promise and Isaac was born. The boy grew, his mother doted over him, and his father cherished every movement he made. They loved that promised child more than they loved life itself. Then out of the clear blue comes that vassalling, unbelievable, unthinkable command, to slay the wonder boy. Why? Why did God do that?

Most of us have never really come to grips with the bewilderment and the atrocity of this incomprehensible situation. Surely, God was asking too much of this man, Abraham. This is the key to unlocking the meaning of Genesis 22. It is the key to answering the question, "Where is the lamb?" It is the key to the question being put to you, where is your lamb? And here's that key: *Before God will use any one of us for a great purpose, he and we must be sure that we love him more than anything else.*

That's the lesson. *Before God will use any one of us for a great purpose, he and we must be sure that we love him more than we love anything else.* See, it wasn't for God's vanity that he put Abraham to the test. It was so Abraham, himself, could know that nothing, nothing was more important to him than Jehovah God. People, while Abraham and Isaac's story is unique in all history, the principle isn't. God still asks for lambs. He asks for our lambs, things precious to us and things that we love dearly, to be put on the altar of sacrifice so that He might do something great through our lives. He might ask you for your lamb to be your home and your immediate family, father and mother, brothers and sisters, as you feel a burning in your heart to be a missionary on a foreign soil.

Your lamb might be your money if God has blessed you with a great deal of affluence. Your calling to put that lamb on the altar might be a major gift to fund some great ministry or some great project for the Lord's work. Your lamb might be your time if you sense God calling you to a ministry that you used to occupy with a hobby.

Where is the lamb? I believe with all my heart God wants to do something great through every one of us, but only if we're willing to put our lamb on the altar. I want to share with you then seven quick principles of sacrifice. Obviously, we're going to cover these briefly.

Principles of Sacrifice

1. He prepares us for times of sacrifice.

It's obvious to me that God was preparing Abraham for this test. Look at verse 1 again, it begins this way, "Sometime later God tested Abraham;" some time later than what? The answer to that is some time later than the experiences that

को नहीं काटते हैं। मुझे लगता है कि यह पाठ आज बहुत सारे लोगों के घर में आ रहा है।

यह तथ्य कि आप इस पाठ को पढ़ रहे हैं, यह दर्शाता है कि आपकी रुचि और आपके प्रयास कहाँ हैं। लेकिन आप भगवान के लिए कितने पेड़ काट रहे हैं? आप अपने ईसाई जीवन में कितने उत्पादक हैं? अभी आप अपनी मेहनत के फल से कितने संतुष्ट हैं? इस युवा छात्र की तरह कई ईसाईयों को देखें। उन्होंने अपना कुल्हाड़ी वाला सिर खो दिया है। वे वह नहीं हैं जो वे हो सकते थे। वे नहीं हैं जो उन्हें होना चाहिए। कई मामलों में, वे वह भी नहीं होते जो वे हुआ करते थे। बहुत मेहनत की है, लेकिन इतना कम फल मिला है। ओह, वे अभी भी गतियों के माध्यम से जाते हैं, अभी भी झूलते हैं और झूलते हैं और झूलते हैं और कोहनी को असली लकड़हारे से रगड़ते हैं। वे उन दिनों की बात करते हैं जब पेड़ गिरते थे। वह कुछ था, लेकिन अब उनके लिए ज्यादा पेड़ नहीं गिर रहे हैं। न फल, न शक्ति, न आनंद, उन्होंने कुल्हाड़ी सिर खो दी है।

यह मुझे एक कहानी की याद दिलाता है जो मैंने एक युवा लकड़हारे के बारे में सुना था जो एक शिविर में एक धोखेबाज़ के रूप में गया था। पहले दिन, वह तैयार था, तैयार था और जब वह बाहर गया तो गदगद हो गया। पूरे दिन महान उत्तर पश्चिम में काम किया और दिन के अंत तक वह 20 विशाल पेड़ों को काट चुका था। जब वह कैम्प फायर के आसपास कैम्प में वापस आया, तो वह डींग मार रहा था कि उसने कितना अच्छा किया। अनुभवी लंबरजैक में से एक ने अपना हाथ उसके चारों ओर रखा और कहा, "आप जानते हैं कि मेरा मानना है कि 20 एक धोखेबाज़ के लिए पहले दिन का रिकॉर्ड हो सकता है।" उन्होंने जारी रखा "यहां के शीर्ष पुरुष एक दिन में 30 पेड़ लगाते हैं। आप इसे बनाए रखें, मुझे विश्वास है कि थोड़े समय में, आप वहां पहुंच जाएंगे।" अगले दिन प्रभावित करने के लिए उत्सुक लंबरजैक धोखेबाज़, 15 मिनट पहले उठा, उसने अपने दोपहर के भोजन के समय से 15 मिनट कम कर दिए, उसने पाउंड और हथौड़े से देखा और देखा। अंत में, जब वह दिन के अंत में समाप्त हो गया, केवल 18 पेड़ काटे गए थे। वह बल्कि उदास था। उन्होंने कहा, "मैं कल 30 मिनट पहले उठूंगा, मैं अपने दोपहर के भोजन के समय तक काम करूंगा।" तीसरे दिन केवल 16 पेड़ गिरे थे। सप्ताह के अंत तक, वह लगभग एक दर्जन से नीचे था। अपने अभिमान को निगलते हुए, उसने शिविर में अपना रास्ता बनाया और उसने उस अनुभवी लकड़हारे से बात की और कहा, "मुझे समझ नहीं आया।" उन्होंने कहा, "जितना कठिन मैं प्रयास करता हूँ, मुझे उतनी ही बाधा मिलती है।" वयोवृद्ध लकड़हारे ने पूछा, "क्या आपने अपने कुल्हाड़ी के सिर को तेज करने के लिए समय निकाला है?" उस युवक ने ऊपर देखा, आंखें मूंद लीं, आह भरी और कहा, "नहीं। मैंने कुल्हाड़ी की धार तेज करने में समय नहीं लगाया क्योंकि मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ था।" तीसरे दिन, केवल 16 पेड़ गिरे थे। सप्ताह के अंत तक, वह लगभग एक दर्जन तक गिर गया था। अपने अभिमान को निगलते हुए, उसने शिविर में अपना रास्ता बनाया और उसने उस वयोवृद्ध लकड़हारे से बात की और कहा, "मैं समझ में नहीं आता।" उसने कहा, "जितना कठिन मैं प्रयास करता

Abraham had experienced. Up to this point, God was preparing Abraham. He had told him to move out of his homeland to Ur. He made him wait 25 years for a son. On the other hand, God had been giving him some blessings. Abraham had become prosperous financially; he was wealthy. When Isaac was finally born, the boy grew up healthy and strong. Abraham even signed a peace treaty with Abimelech. (Genesis 21)

So my point is God had been giving Abraham the right combination of challenges and blessings preparing him for the moment of sacrifice. He does the same thing for us. Look over your life; you know it's true. He fills our lives with challenges and blessings in just the right combination. As he does, he prepares us for those great moments when our faith will be put on the line.

Here's a great axiom worth writing down, it's worth remembering. I've seen it true in Scripture, I've seen it true in my life and you know it's true: "After the blessing comes the testing." Here in the story of Abraham, after the most peaceful moment of his life and after he made peace with Abimelech, God comes to him and calls him for a sacrifice.

I think about how after Moses led the children of Israel through the parted Red Sea. After they are safe on the other side, God let them go without water for three days. He's testing them. When Jesus was baptized God said, "This is my Son in whom I'm well pleased," and the Spirit descended as a dove, he goes to the wilderness to be tested by Satan. After the blessing comes the testing. People, we will only bask in blessing so long until we're tested. That's true of the congregation and it's also true in our individual lives.

2. Our love for God needs to be proven.

We may not like that, but it's true. Our love for God needs to be proven. When the tests come, God is asking, "Where is your lamb?" He expects more than words. We sing a song frequently, "Take my life and let it be, consecrated Lord to thee." Aren't those good words? Heavy words, full of sacrifice, consecration and commitment, but do you know what God says about those words? He said, "I don't want you to just be hearers of the word, I want you to be speakers of the word. I want you to be doers of the word." The reason he said that is because God knows words are cheap. You can say a lot through words, but God says back it up with action, quit telling me how much you love me, show me your love and prove it.

God said, "Take your son, your only son, Isaac, whom you love." (vs. 2) "Whoa, Whoa! There's an error in the Bible, there's a contradiction. Abraham had more than one son. We know he had another son by Hagar the handmaiden. That boy's name was Ishmael and Ishmael became the father of all the Arab nations. So, Isaac wasn't his only son. The Greek word "*monogenee*" translated "only" came to us through the Septuagint. It's really hard to translate into

हूँ, उतनी ही बाधा मुझे मिलती है।" वयोवृद्ध लकड़हारे ने पूछा, "क्या तुमने अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज करने के लिए समय निकाला है?" युवक ने ऊपर देखा, अपनी आँखें घुमाई, आह भरी और कहा, "नहीं। मुझे कुल्हाड़ी की धार तेज करने में समय नहीं लगा क्योंकि मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ था।" तीसरे दिन, केवल 16 पेड़ गिरे थे। सप्ताह के अंत तक, वह लगभग एक दर्जन तक गिर गया था। अपने अभिमान को निगलते हुए, उसने शिविर में अपना रास्ता बनाया और उसने उस वयोवृद्ध लकड़हारे से बात की और कहा, "मैं समझ में नहीं आता।" उसने कहा, "जितना कठिन मैं प्रयास करता हूँ, उतनी ही बाधा मुझे मिलती है।" वयोवृद्ध लकड़हारे ने पूछा, "क्या तुमने अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज करने के लिए समय निकाला है?" युवक ने ऊपर देखा, अपनी आँखें घुमाई, आह भरी और कहा, "नहीं। मुझे कुल्हाड़ी की धार तेज करने में समय नहीं लगा क्योंकि मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ था।" वयोवृद्ध लकड़हारे ने पूछा, "क्या आपने अपने कुल्हाड़ी के सिर को तेज करने के लिए समय निकाला है?" उस युवक ने ऊपर देखा, आँखें मूंद लीं, आह भरी और कहा, "नहीं। मैंने कुल्हाड़ी की धार तेज करने में समय नहीं लगाया क्योंकि मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ था।" वयोवृद्ध लकड़हारे ने पूछा, "क्या आपने अपने कुल्हाड़ी के सिर को तेज करने के लिए समय निकाला है?" उस युवक ने ऊपर देखा, आँखें मूंद लीं, आह भरी और कहा, "नहीं। मैंने कुल्हाड़ी की धार तेज करने में समय नहीं लगाया क्योंकि मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ था।"

दोस्तों, मेरा मानना है कि अगर भगवान अभी झुक जाते और हमारे कई कानों में कुछ फुसफुसाते, कुछ ऐसा जो वह प्रचारकों, बड़ों, उपयाजकों, बाइबिल स्कूल के शिक्षकों, सलाहकारों और मंत्रालय के कर्मचारियों के कानों में फुसफुसाते, तो वह फुसफुसाते, "क्या तुमने अपना कुल्हाड़ी सिर तेज करने के लिए समय लिया?" वह यह भी पूछ सकता है, "क्या आपने यह देखने के लिए समय लिया है कि क्या यह अभी भी है?" क्या हम सिर्फ झूलते और झूलते और झूलते रहे हैं और सोच रहे हैं कि हम कहीं क्यों नहीं पहुंच रहे हैं।

देखें कि अगर हमने कुल्हाड़ी का सिर खो दिया है या अगर कुल्हाड़ी सुस्त हो गई है, तो हमारा काम बहुत मुश्किल हो जाता है क्योंकि इसे इस तरह से डिजाइन नहीं किया गया है। यदि आपने कुल्हाड़ी का सिर खो दिया है, तो परमेश्वर के फलने-फूलने का आनंद कम हो जाता है। आपका प्रार्थना जीवन स्थिर हो जाता है। जोश, उत्साह चला गया है। मसीह में होने का आनंद, जिसे हमारे भीतर उमड़ने वाले फव्वारे की तरह माना जाता है, बस सूख जाता है। हमें कोई फल नहीं दिख रहा है।

मैंने एक और कहानी के बारे में सोचा जो मैंने कुछ समय पहले उत्तर पश्चिम के एक विश्वविद्यालय में पढ़ी थी। इसमें लंबरजैक भी शामिल थे, यह प्रेरणा पर एक अध्ययन था। मनोविज्ञान विभाग ने लंबरजैक के दो समूह लिए। उन्होंने पुरुषों के एक समूह को वही कीमत चुकाई जो वे कमाते रहे थे, वही मजदूरी, जो वे हमेशा करते आए थे—बस पेड़ों को काट देना। दूसरे समूह से कहा गया, "हम चाहते हैं कि आप कुल्हाड़ी के सपाट किनारे, कुंद किनारे का उपयोग करें, लेकिन हम आपको आपके नियमित वेतन का दोगुना

English, it means, "most prized and cherished and wonderful possession." Let me give you another instance of its use. In the King James Version, John 3:16 states "For God so loved the world that he gave his only begotten Son." The New International Version says, "God so loved the world he gave his one and only Son." The Revised Standard Version states "For God so loved the world that he gave his only Son." The same word is in 1 John 4:9, "God sent His only, (monogeneses), Son into the world. What's being said here is that God was asking Abraham for the one that really was his one and only, the most prized possession in all his life. In other words, God says, "Abraham, don't tell me you love me. I'm going to really let you show me."

The same principle we see in John 21 when Jesus came to Peter, after the Resurrection, after Peter's denial. Jesus asked "Peter, do you love me?" Peter humbly said, "Lord, you know I love you." Jesus said, "Then feed my sheep. Show me." It's interesting to me that the book of Acts is not called the "words" of the apostles. It's called the "acts" of the apostles. That's what God wants from you and from me. God says, "I have blessed you, I love you, I appreciate your attendance, I appreciate your praise and your songs, but put your sacrifice where your mouth is." Our Lord wants us to prove our love to him.

3. Sacrifice is giving up something precious in order to give to something that is more precious.

That's exactly what it is. Back to our story, how precious do you suppose Isaac was to Abraham? You know, don't you? But how much more precious and protected would your son be, fathers, if you waited and prayed for him every day for 25 years. Tell me, how precious would he be to you?

"Early the next morning Abraham got up and saddled his donkey." (vs. 3) I think there's more said there than just that Abraham is an early riser. We're not told, but here's my supposition; I believe Abraham got up early the next morning because he didn't sleep a wink the whole night. I think he laid flat on his back gazing into the stars, thinking and praying, thinking and praying.

They get to the foot of Mount Moriah. How would you feel stacking wood on the shoulders of that unsuspecting boy, knowing that in a little while it would be the fuel for the blaze that would engulf his body? Then that question, "Father, where is the lamb for the burnt offering?" (vs. 6)

"When they reached the place God had told him about, Abraham built an altar there and arranged the wood on it. He bound his son Isaac and laid him on the altar, on top of the wood. Then he reached out his hand and took the knife to slay his son." (Vs. 9-10) What on earth could make a man do such a thing? What on earth? The answer is only something or someone even more precious than that boy. God Almighty.

भुगतान करेंगे। हम चाहते हैं कि आप इसे पेड़ के खिलाफ मारें, बस चलते रहें। इसे ऐसे ही करें।" जब तक तुम चाहो, हम तुम्हें दोगुना वेतन देंगे।" कुल्हाड़ी की कुंद धार का उपयोग करने वाले परीक्षण समूह ने आधे दिन के भीतर ही छोड़ दिया था। जैसे ही उस परीक्षण समूह का आखिरी लकड़हारा दूर जा रहा था, वह अपना सिर हिला रहा था। अपने निकास साक्षात्कार में उन्होंने कहा, "पैसा, या पैसा नहीं, यह कोई मज़ा नहीं है। जब मैं कुल्हाड़ी घुमाता हूँ, तो मुझे चिप्स उड़ते हुए देखने पड़ते हैं।" हममें से बहुत से लोग थके हुए और थके हुए और यहाँ तक कि ऊब जाते हैं क्योंकि हम कुल्हाड़ी घुमा रहे हैं, लेकिन हम चिप्स को उड़ते नहीं देख रहे हैं। कोई फल नहीं, नहीं परिणाम, कोई खुशी नहीं।

कुल्हाड़ी के सिर की कहानी के कुछ सरल अवलोकन

2. कुल्हाड़ी सिर उधार ली थी।

यह उसकी संपत्ति नहीं थी जो इसका उपयोग कर रहा था। "जब उनमें से एक पेड़ काट रहा था, तो लोहे की कुल्हाड़ी पानी में गिर गई, 'हे मेरे स्वामी,' वह चिल्लाया, 'यह उधार लिया गया था!'" (2 राजा 6:5) यह समझने की क्या आवश्यकता है कि हमारे आध्यात्मिक कुल्हाड़ी सिर, वह अत्याधुनिक जो परमेश्वर चाहता है कि हमारे पास हो, वह शक्ति है जो हमें दूसरों को खुशी से सेवा करने के लिए है, वह शक्ति जो हमें दूसरों को मसीह के साथ अपने विश्वास को साझा करने के लिए सिखाने जा रही है, वह शक्ति जो परमेश्वर करने जा रहा है हमें प्रलोभन पर विजय पाने के लिए और वह शक्ति दें जो हमें अपने परिवारों को धार्मिकता के मार्ग पर ले जाने के लिए प्राप्त होगी। यह कोई व्यक्तिगत शक्ति नहीं है। यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति है। यह एक अर्थ में उधार है। आप इस शक्ति को मनोविज्ञान के माध्यम से काम नहीं करते हैं या इसे अपनी स्वयं की इच्छा शक्ति के माध्यम से निर्मित नहीं करते हैं। यह एक दिव्य शक्ति है जो यीशु मसीह और आप में रहने वाली उनकी आत्मा से आती है। यह भगवान की ओर से एक उपहार है। यह आपकी शक्ति या मेरी शक्ति नहीं है, यह ईश्वर की शक्ति है।

कुछ यहूदी अपने मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए उत्सुक होकर बेबीलोन की बंधुआई से इस्राएल लौट आए थे। हम में से बहुतों की तरह, उन्होंने भी शुरुआत की, नींव रखी और फिर वे थक गए। उन्होंने अपना कुल्हाड़ी वाला सिर खो दिया। 16 साल तक, एक भी पत्थर नहीं बदला गया क्योंकि उन्होंने नींव छोड़ दी थी। जकर्याह एक नबी था जिसे वापस भेजा गया था जब यहूदियों को बेबीलोन की कैद से रिहा किया गया था। उन्होंने कहा, "हम केवल नींव के साथ नहीं रुक सकते, चलो मंदिर का निर्माण शुरू करें।" सभी लोग यह कहते हुए निरुत्साहित हो गए, "सिर्फ नींव डालना ही कठिन काम था। हमें नहीं लगता कि हम कभी भी पूरे मंदिर का निर्माण कर सकते हैं।" परमेश्वर ने जकर्याह से कहा, "तो परमेश्वर ने मुझ से कहा ... 'न तो बल से और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा,' सर्वशक्तिमान यहोवा का यही वचन है।" (जकर्याह 4:6) परमेश्वर ने जकर्याह से कहा, तेरी बाहें पर्याप्त बलवान नहीं, तेरे मन हैं पर्याप्त स्मार्ट नहीं है, आपके दिल में पर्याप्त साहस नहीं है और आपकी योजनाएँ पर्याप्त अच्छी नहीं हैं। अगर कभी मंदिर का पुनर्निर्माण होता है, तो ऐसा इसलिए होगा

Do you love God that much? Huh? I'll be honest, I don't know either, because I've never been called to sacrifice that much. But what have you been called to sacrifice? Will you, have you given up something precious to you for something, someone, even more precious? Some of you are doing it for a ministry that's found your passion; you've helped not just one person, but person after person. But sacrifice is giving up something precious to you to give to something that's even more precious.

4. The sacrifice isn't always understood.

There are times when you walk with God and you have questions instead of answers and God just says to you, "It's all right. You don't understand, but hold my hand and obey me." That's what God was saying to Abraham. There's no way Abraham understood this request. The promise had come to him earlier that it would be through Isaac that his offspring would be blessed. Now God says, "Go kill Isaac." That doesn't make any sense. But sacrifice doesn't always make sense and that's where faith is magnified. Faith is being sure of what you hope for and certain of what you cannot see. It takes faith to make any sacrifice. Anytime you give up something precious to you to give to something more precious takes faith. But it takes greater faith when you can't understand it.

"He said to his servants when they got to the foot of Mount Moriah, 'Stay here with the donkey while I and the boy go over there.'" (v. 5) Do you know why I'm convinced that he made the servants stay? I'm convinced it's because he knows that when he took up that knife and started to kill his son, the servants would have tried to stop him. Abraham by faith was not going to let anything interfere with God's command.

But then he told those servants, "We will worship and then we will come back to you." (v. 5) What? "We will worship and then WE will come back to you." People, that's not an accident, it's not a slip of the tongue. It's not a misprint in your Bible. I think I know what Abraham was thinking about all the night before, before they left that morning. Hebrews 11:19 gives us a little insight. He said as he was thinking about what would happen to Isaac, he reckoned that God would raise him from the dead. Then the Hebrew writer said, figuratively speaking, that's exactly what happened, he got him back from the dead.

I want to tell you about faith and not understanding. We have read so many stories in the Bible about men and women being raised from the dead by prophets, by Jesus or by apostles. We just think it's no big deal. Let me tell you something, Abraham believed that God would raise Isaac back from the dead before God raised anybody up from the dead. Sacrifice is not always understood.

5. Sacrifice must be voluntary.

God told Abraham to make the sacrifice, but he didn't force

क्योंकि मेरी आत्मा इसे होने देती है।

परमेश्वर का आत्मा कुल्हाड़े की नोक की पैनी, पैनी धार है। यही अंतर है। प्रलोभन का विरोध करने के लिए, अपने विश्वास को साझा करने के लिए या मसीह के लिए अपने परिवार को प्रभावित करने के लिए आपके पास जो शक्ति है, वह आपकी अपनी ऊर्जा द्वारा बनाई गई शक्ति नहीं है, यह वह उपहार है जो आप तब प्राप्त करते हैं जब आप मसीह के पास आते हैं। यह उधार की शक्ति है। इसे देखने की हिम्मत मत करो, इसे अनदेखा करो या इसे खो दो। यदि हम पवित्र आत्मा के माध्यम से परमेश्वर की शक्ति के बिना इस दुनिया को लेने की कोशिश में इसे खो देते हैं, तो यह कुल्हाड़ी के हथ्ये से पीटकर एक बड़े लाल पेड़ को गिराने की कोशिश करने जैसा है। तुम कहीं जल्दी नहीं पहुँचते। यह उधार की शक्ति है।

2. कुल्हाड़ी का सिर खो गया था।

जब वह काम कर रहा था तो कुल्हाड़ी का सिर हैंडल से फिसल गया और पानी में गिर गया। यह खो गया था। परमेश्वर के साथ चलने में हम अपनी आत्मिक धुरी कहाँ खो देते हैं? क्या कभी किसी ने दुनियादारी के जल में इसे खोया है? क्या किसी ने इसे कर्मकाण्ड की नदियों में प्रवाहित किया है? क्या आलोचना की धारा में किसी ने अपना कुल्हाड़ी सिर खो दिया है? प्रार्थना विहीनता के सरोवर में उड़ गई या धर्मनिरपेक्षता की धारा में? आत्मसंतोष के दलदल में तो नहीं आपका कुल्हाड़ी सिर? यह कितनी भी जगहों पर जा सकता है। लेकिन अगर हम इसे खो चुके हैं, तो हम इसके बारे में क्या करने जा रहे हैं? उस शक्ति को खो देने से ज्यादा दुख की बात नहीं है जो परमेश्वर चाहता है कि उसका सेवक हो। कुल्हाड़ी का सिर खो गया था।

3. इसके खो जाने की चिंता थी।

जैसे ही उसे पता चला कि वह चला गया था, एलीशा का सहायक चिल्ला उठा, 'हे मेरे प्रभु!' वह व्यथित था। मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि हममें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसके पास परमेश्वर के साथ चलने के लिए एक या दूसरे समय में अपने कुल्हाड़ी के सिर की तलाश करने के लिए नहीं गया हो। कई बार ऐसा होता है कि हमें रुकना पड़ता है और अपनी प्राथमिकताओं की फिर से जांच करनी पड़ती है। जब हमें पता चलता है कि कुछ छूट गया है तो हमें पश्चाताप करना होगा और हमें फिर से शुरुआत करनी होगी। यदि आपने ऐसा कभी नहीं किया है, तो मेरा सुझाव है कि आप अपनी कुल्हाड़ी की तलाश शुरू कर दें क्योंकि आपने इसे खो दिया है और इसे नहीं जानते हैं। आप देखते हैं कि जब यह खो जाता है तो चिंता होती है। यह मुझे रोमांचित करता है कि यह व्यक्ति इसे खोने से बहुत परेशान था।

बहुत बार हम धार्मिक अनुष्ठानों से गुजरते हैं, गतिविधियों से गुजरते हैं और सही बातें कहते हैं, सही तरीके से कार्य करते हैं, हमें यह इतना नीचे मिल गया है और हमें यह भी एहसास नहीं होता है कि हमने कुल्हाड़ी सिर खो दी है। हम भगवान से कुछ भी महान की उम्मीद नहीं करते हैं और हम उनसे कुछ भी महान नहीं मांगते हैं। यदि हम ईश्वर से सबसे बड़ी चीज अपने भोजन को आशीर्वाद देना चाहते हैं, तो यह संभव है कि हम जीवन से गुजरें और उस

him to do it. This is a major misunderstanding even among good religious folks. There's no such thing as an involuntary sacrifice. We sometimes mistakenly refer to a loss as a sacrifice. To lose a job, an investment, your health, a mate or a child, is not a sacrifice. Now it may be painful, horrible, tragic or the most awful thing you've ever gone through, but biblically it's not a sacrifice. The reason is: a sacrifice must be given, it's by choice, it is not just something that happens. Jesus' cross was a sacrifice. Why? Because, he chose it. It didn't have to happen. When he calls you to take up the cross, he's calling you to choose the sacrifice.

6. The greater the sacrifice, the greater the sweetness and the greater the blessing.

I love this point. Let's talk about the sweetness, first. God stopped Abraham from the sacrifice; he provided a ram in the thicket. (v. 13) "The Angel of the Lord called to Abraham from heaven a second time and said, 'I swear by myself, declares the Lord, that because you have done this and have not withheld your son, your only son, I will surely bless you and make your descendants as numerous as the stars in the sky and as the sand on the seashore. Your descendants will take possession of the cities of their enemies, and through your offspring all nations on earth will be blessed, because you have obeyed me.'" (Genesis 22:15-18)

"Then Abraham returned to his servants, and they set off together for Beersheba." (v. 19) Have you ever thought about how Abraham felt coming down that mountain? How do you think he felt all the way to Beersheba? Have you ever felt so good about something you did, something you said, something that was right that when you were walking along you just couldn't keep the smile off your face. Sometimes you just walked on and said, "Yes!" I can see Abraham doing that and smiling as he recalled the speech from the Angel of the Lord. Now I know how much you fear me. Do you know what he was experiencing? He was experiencing the sweetness of the sacrifice.

Most of us have been so thrilled when we came out of the waters of baptism which may be the sweetest moment in all your memory. Do you know why? Because at that moment you were saying, "God, I sacrifice my life to you. I buried my old sinful self and I turned my new self over to you."

a. The greater the sacrifice the greater the blessing. Abraham received the blessing of God's timing. Just as the hand is raised, just as the knife is about to come down, "Then God stopped him as the angel of the Lord called out and said, 'Do not lay a hand on the boy, do not do anything to him.'" (v. 10-11) Then he received the blessing of God's approval that we read about in verse 12.

b. He received the blessing of God's provision. "Abraham looked up and there in the thicket he saw a ram caught

शक्ति को खो दें और उसे जाने भी नहीं।

यह वह नहीं है जो परमेश्वर के लिए किया जाता है जो लगभग उतना ही मायने रखता है जितना कि परमेश्वर द्वारा हमारे द्वारा क्या किया जाता है। मुझे लगता है कि हम उस बिंदु को बहुत बार याद करते हैं। हम सभी परमेश्वर के लिए कुछ करना चाहते हैं, लेकिन यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि परमेश्वर ने क्या किया है। इसलिए कई बार हम उत्पादकता के लिए गतिविधि को प्रतिस्थापित करते हैं। हम कहते हैं, "ठीक है, मैंने यह परमेश्वर के लिए किया है, मैंने वह परमेश्वर के लिए किया है या मैं वहाँ परमेश्वर के लिए गया हूँ।" हमें रुकने और पूछने की जरूरत है: "क्या मैंने इसे भगवान की शक्ति में और उसके साथ किया है?"

गतिविधि हमेशा उत्पादकता नहीं होती है। हम चीजों को करने में व्यस्त रहते हैं, चर्च के लिए चीजें और अन्य लोगों के लिए चीजें। लेकिन, हमें रुकने और पूछने की भी आवश्यकता है: "क्या मैं परमेश्वर के लिए कार्य कर रहा हूँ, या परमेश्वर मेरे माध्यम से कार्य कर रहा है?" पूर्व अच्छा है, लेकिन बाद वाला बहुत बेहतर है। पूर्व, भगवान के लिए काम कर रहा है, गतिविधि बनाता है। लेकिन बाद वाला, भगवान को उत्पादकता पैदा करने देता है। उत्पादकता तब होती है जब कुल्हाड़ी का सिर जगह पर और तेज होता है। मैं प्रार्थना नहीं करना चाहता, "भगवान, मैं जो कर रहा हूँ उसे आशीर्वाद दें।" मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ, "भगवान, मुझे दिखाओ कि तुम क्या कर रहे हो, और सुनिश्चित करो कि मैं उस आशीर्वाद में हूँ।"

4. कुल्हाड़ी का सिरा वहीं मिला जहां वह खोया था।

जब सहायक ने कहा, 'हे मेरे प्रभु, मैंने कुल्हाड़ी का सिर खो दिया है और यह उधार ली गई है,' परमेश्वर के व्यक्ति (वह एलीशा है) ने पूछा, 'वह कहाँ गिरी थी?' जब उस ने उसे वह स्थान दिखाया, तब एलीशा ने एक लकड़ी काटकर वहीं फेंक दी, और लोहा तैरने लगा। अब दोस्तों, मुझे पता है कि यह आसान है, लेकिन इसे देखें। कुल्हाड़ी का सिरा वहीं मिला, जहां खोया था। आत्मिक रूप से, परमेश्वर के साथ हमारे चलने के साथ भी ऐसा ही है। यदि आपने आज सुबह अपनी आध्यात्मिक कुल्हाड़ी का सिर खो दिया है, तो आप इसे उसी स्थान पर पाएंगे जहाँ आपने इसे खोया था।

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त याद है? कुल्हाड़ी का सिर खोजने वाला लड़का कहाँ गया? वह ठीक वहीं चला गया जहाँ उसने उसे छोड़ा था। जब वह बाहर चला गया और एक दूर देश में चला गया तो उसने उसे घर पर छोड़ दिया। जब वह अपने होश में आया, तो वह घर गया और वहाँ था। क्या आप जानते हैं कि आपमें से कुछ लोगों को अपनी कुल्हाड़ी खोजने के लिए कहाँ जाना होगा? आप में से कुछ लोगों को अपनी धूल भरी बाइबल को शेल्फ से निकालकर पढ़ने की आवश्यकता है। आप में से कुछ को उस शांत जगह पर जाने की जरूरत है जहाँ आप एक बार गए थे। आपको अपने घुटनों पर बैठने और फिर से प्रार्थना करने की आवश्यकता है क्योंकि यह एक लंबा समय हो गया है। वहीं आपने अपना फरसा सिर छोड़ दिया। आप में से कुछ को अपने जीवनसाथी के पास लौटने की जरूरत है।

by its horns. He went over and took the ram and sacrificed it as a burnt offering instead of his son." (v. 13) Did the ram just happen to get its horns caught? Or did God provide it?

7. God is the real provider of the lamb.

"So, Abraham called that place *The Lord Will Provide (Jehovah-Jireh)*. And to this day it is said, 'On the mountain of the Lord it will be provided.'" (v. 14) When Abraham finished he didn't call the mountain, "The Agony of the Lord," "The Near Miss," or "The Almost Catastrophe." He called it, *Jehovah-Jireh. The Lord Will Provide.*

Any sacrifice God asks us to make, anything in your life, he provides the lamb. He was the one who had given Abraham all his lambs. He was the one who had given Isaac to Abraham. He was the one who initiated and empowered the covenant, not Abraham. Whatever sacrifice God may request of you, remember He has provided the lamb in your life. Whether it's your time, money, heart, home or a relationship, God gives you that lamb. When you're willing to offer it on the altar, he will make provisions for you a hundred times over.

I want to close with one little point here that's really an extension of principle number seven; God has of course provided the ultimate lamb, the Lamb of God. Here is a beautiful illustration of a type or foreshadowing in the Old Testament of the Christ. We've already looked at a couple of them. For example, Isaac was called the "monogeneses," the one and only, the best loved Son. Jesus, John 3:16. He was the monogeneses of the Father. They waited for years for Isaac to get there, the prophets waited for years and centuries for Jesus to come. Isaac was called upon to be the sacrifice. How about Jesus? When John the Baptizer first saw him in John 1:29, he looked at him and said, "Behold the Lamb."

Even the place, Mount Moriah, where Isaac was taken to be sacrificed, is right in the heart of the city of Jerusalem. It is just a stones-throw away from the place of the skull, where the Lamb of God hung on the cross so that you and I could be freed from our sins.

Peter says, "For you know that it was not with perishable things such as silver or gold that you were redeemed from the empty way of life handed down to you from your forefathers, but with the precious blood of Christ, a Lamb without blemish and without spot." There are all kinds of parallels, but one big difference. God didn't make Abraham sacrifice his Son Isaac, and God wouldn't halt the sacrifice of his Son Jesus.

If you have not accepted the sacrifice, the Lamb of God, by obeying the gospel, by confessing the name of Jesus, by turning from sins, and laying your life upon the altar by dying to sin and being buried with Christ, NOW is the time.

Amazing Grace # 1276, Steve Flatt, August 18, 1996

मत्ती 18 कहता है, "कभी-कभी, हम अपने कुल्हाड़ी के सिर को दूसरे भाई के पास छोड़ देते थे।" यह आपके तत्काल परिवार में होने की जरूरत नहीं है। पूजा करने से पहले भाई से सुलह कर लें। क्यों? क्योंकि जब तक आप ऐसा नहीं करते, आप अपना कुल्हाड़ी सिर खो चुके हैं। आपने अपनी आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत खो दिया है। हममें से कुछ लोगों को परमेश्वर, पिता के सामने खुद को विनम्र करने की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे हठीले अहंकार ने हमारी आत्मिक शक्ति को चूस लिया है। "तुमने इसे कहाँ खो दिया?" वहीं यह मिलने वाला है। मैं नहीं जानता कि तुमने अपनी कुल्हाड़ी कहाँ छोड़ी है, लेकिन तुम जानते हो कि वह कहाँ थी। वहाँ जाओ, वहीं तुम पाओगे।

10. जिसने इसे खो दिया उसे इसे पुनः प्राप्त करने वाला होना चाहिए।

उसके तैरने के बाद, एलीशा ने उस व्यक्ति की ओर देखा और कहा, "इसे बाहर निकालो।" तब उस मनुष्य ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया।" आप कहते हैं, "इसका क्या महत्व है?" आप कुल्हाड़ी सिर के लिए जिम्मेदार हैं। इससे आपको कोई छुटकारा नहीं दिला सकता।

आप देखते हैं कि भविष्यवक्ता ने कहा, "आप पानी में जाओ और इसे अपने लिए उठाओ।" अच्छी खबर यह है कि अगर आप यह दृढ़ संकल्प करते हैं, तो आप वास्तव में यही कर सकते हैं। मेरे लिए पूरे पवित्रशास्त्र में सबसे आश्चर्यजनक अवधारणाओं में से एक यह है कि परमेश्वर हमें चुनने की शक्ति देता है। अधिकांश भाग के लिए परमेश्वर ने अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए केवल मनुष्यों का उपयोग करना चुना है। अविश्वसनीय रूप से, वह हमें यह निर्धारित करने के लिए पसंद की शक्ति देता है कि उससे कितनी शक्ति हमारे माध्यम से प्रवाहित होने वाली है। फिर भी, एक विचार, शब्द या पसंद से, हम यह निर्धारित करते हैं कि कोई शक्ति हमारे माध्यम से जाएगी या नहीं। जब तक आप कुल्हाड़ी के सिर को पानी में रहने देना चुनते हैं, तब तक वह वहीं रहेगा। यदि आप इसे चुनना चुनते हैं। परमेश्वर आपके जीवन को सामर्थ्य तरीके से आशीषित कर सकता है। अमेज़िग ग्रेस #1274 स्टीव फ्लैट, 28 जुलाई 1996

अध्याय 6

मेमना कहाँ है?

हम पूरे मानव इतिहास में सबसे उल्लेखनीय और भावनात्मक दृश्यों में से एक की यात्रा करने जा रहे हैं। परमेश्वर अब्राहम को एक अविश्वसनीय रूप से विचित्र आदेश देता है। "कुछ समय के बाद परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा ली। उस ने उस से कहा, 'अब्राहम!' उसने उत्तर दिया, 'मैं क्या हूँ।' तब परमेश्वर ने कहा, 'अपने पुत्र को, अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरियाह के देश में चला जा, वहाँ उसको एक पहाड़ पर होमबलि करके चढ़ा। के बारे में बताओ।'" (उत्पत्ति

What Must I Do To Be Saved?

The most important question that I know is the one recorded in Acts 16:30. It came from the lips of a Philippian jailer who was contemplating suicide. But within a matter of moments he was wanting a life, not just a life, he wanted eternal life. He asked, "What must I do to be saved?"

The answer to that most critical of all human questions is the focus of this lesson. Obviously, I want to address this question and its answer to those who aren't Christians. There are many who honestly don't know the answer to the jailer's question: What must I do to be saved? More than anything else in the world, you need not only to know the answer, but to respond to it. Secondly, I want to address this question and answer to Christians who do understand the reasoning and the ramifications of your commitment. I hope this lesson will better equip you to share the answer to the question with those who desperately need it. I'm very concerned about how we effectively communicate. I'm concerned that we often don't do a very good job of expressing just how good the Good News of Jesus is and the beauty associated with the way that God wants us to accept it.

Often, we assume what we think people know. We assume what we think they understand. Many have a pat answer, but it doesn't answer the question. We just don't communicate. I love the story of the couple who had been married for 70 years and he was pretty hard of hearing. On their 70th anniversary the little old lady leaned over to him and said, "I'm so proud of you!" He looked around at her and said, "I'm tired of you, too!"

I don't know about you, but I think at times I've been guilty of spiritually speaking while being hard of hearing—not hearing what was being asked or sensing where they were. So helping those of us who are Christians to communicate the answer to that question may be the most important use of this lesson. Because folks, there is no question about the power of the gospel. It is the power of God to convict and to convert in any culture in any generation. If it's not doing that in abundance, it's not because of a lack of clarity of the signal; it would more be the way it's being transmitted.

What must I do to be saved? The entire New Testament, in one way or another, is focused on the answer to that question. Ephesians 2, the first ten verses give us a concise and powerful description about what one must do to be saved. Ephesians 2:1-10

1. *Recognize the need.*

22:1-2)

अब दोस्तों, यह हमें अजीब लगता है, लेकिन ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे हम पर्याप्त रूप से इसकी सराहना करना शुरू कर सकें कि इसने इब्राहीम को कैसे प्रभावित किया। हम इसके बारे में थोड़ी देर में और अधिक अध्ययन करने जा रहे हैं, लेकिन याद रखें कि अब्राहम और सारा बेओलाद थे। उन्होंने इस बच्चे के लिए एक चौथाई सदी से भी अधिक समय तक प्रतीक्षा की। यह एक वादा किया हुआ बच्चा था। एक और बात जो आप नहीं समझ सकते वह यह है कि जब परमेश्वर ने इब्राहीम को इस कनान देश में जाने के लिए बुलाया, तो सभी कनानी लोग बाल-बलि देने वाले लोग थे। मैं मगिदो में खड़ा हुआ हूँ और उस गोल वेदी को देखा है जहाँ मगिदो में रहनेवाले कनानी अपने छोटे बच्चोंको बलि करते थे। यरीहो के फाटकों के बाहर एक और वेदी है, ठीक वैसी ही। यहीवा परमेश्वर पुरातनता का एकमात्र परमेश्वर था जिसने कहा, "नहीं! मानव जीवन मेरे लिए अनमोल है। क्या तुम मनुष्य का खून बहाने की हिम्मत नहीं करते।" अब, भगवान चाहता है कि वंडर बॉय की बलि दी जाए!

लेकिन समझ की कमी के बावजूद, इब्राहीम ने आज्ञाकारी विश्वास के साथ जवाब दिया। बिहान को इब्राहीम सबेरे उठा और अपने गदहे पर काठी कसी। वह सेवकों को इकट्ठा करके इसहाक को लेकर चला गया। जब वे मोरिय्याह पर्वत की तलहटी में आए, तो इब्राहीम ने सेवकों से कहा कि वे वहीं रहें और वह और इसहाक आराधना करने के लिए पर्वत पर चढ़े। जिस सवाल पर हम विचार करने जा रहे हैं, वह तब आया जब उन दोनों ने उस पहाड़ी के ऊपर चलना शुरू किया।

"अब्राहम ने होमबलि की लकड़ी ले आपके पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को आप ही ले गया; और वे दोनों संग संग चले, इसहाक ने आपके पिता इब्राहीम से कहा, हे पिता? 'हाँ, मेरे बेटे?' इब्राहीम ने उत्तर दिया। इसहाक ने कहा, आग और लकड़ी तो यहाँ हैं, परन्तु होमबलि के लिये मेम्ना कहाँ है? (उत्पत्ति 22:6-7)

आप कल्पना कर सकते हैं? अगर कभी किसी आदमी के दिल में कोई सवाल आया, तो वह यही था। वह लड़का जिसने अपने पिता के साथ इतनी बार पूजा की थी, स्वतः ही समझ गया कि क्या कमी थी। वह लड़का जो अपने पिता से इतना प्यार करता था और उस पर इतना भरोसा करता था कि उसके दिमाग को पार करने की आखिरी संभावना यह थी कि उसका गला काट दिया जाएगा और उसका खून जंगल में बह जाएगा। उस बालक ने मासूम आँखों से अपने पिता की आँखों में देखा और कहा, "कहाँ है मेमना?" जाहिर है, इसहाक जितना जानता था उससे कहीं ज्यादा पूछ रहा था। परमेश्वर अपने पिता इब्राहीम को पहले से कहीं अधिक बलिदान करने के लिए बुला रहा था।

मुझे लगता है कि उत्पत्ति 22:1 बाइबल की सबसे बड़ी खामोशियों में से एक है। क्या आप देखते हैं कि इसकी शुरुआत कैसे हुई? कुछ समय बाद परमेश्वर ने अब्राहम की परीक्षा ली। परीक्षा? परीक्षा? यह एक अंतिम परीक्षा है। यह मनुष्य की आत्मा की गहराइयों से निकलने वाली आवाज़ है। इसहाक अब्राहम के जीवन

"As for you, you were dead in your transgressions and sins, in which you used to live when you followed the ways of this world and of the ruler of the kingdom of the air, the spirit who is now at work in those who are disobedient. All of us also lived among them at one time, gratifying the cravings of our sinful nature and following its desires and thoughts. Like the rest, we were by nature objects of wrath." Folks, if anyone is going to come to Christ, they must first see a need for that conversion. This is where, as ambassadors of Christ, Christians often fail. We leapfrog to an answer when we don't have a question.

There are two broad categories of people who don't come to Christ. The first category is those who think they are so bad that there is no chance in the world that God could ever reach them or save them. "You mean God could save me?" In my experience as a preacher and as an ambassador for Christ, I find that those people are usually easier to reach. Because once you break through their guilt and shame and pour the love and mercy of Christ in that opening, they begin to loosen up.

But there's a second group that seldom comes to Christ and this is the vast majority. Those who think I'm a good person and I don't really need to be saved. I'm always intrigued by the Gallup Polls that indicate 90% of Americans say, "I'm a Christian." Yet, that percentage is nowhere close to the percentage of our population who assemble together, have their name on any church roll, who read the Bible at all, who pray or who give money to any congregation.

As you look closely at the questions they answer, you begin to understand why they think as they do. Most of America defines being a Christian as basically being a good person. They've made the two things synonymous. Believe it or not, there are tons of folks out there who think they are already Christians just because they perceive themselves as good.

I've learned one of the most insightful questions you can ask a person and obviously you do this tactfully as conversation goes along. Ask them if they're going to heaven. Usually that will startle them and they'll say, "Well, I guess I am." Then I like to ponder, "Well tell me, why do you think you will?" Over 90 percent of the time, the answer is "I do a pretty good job at work, I love my kids, I'm basically honest, I give to the United Way and I don't break any laws." In other words, what they're saying is: The good in my life outweighs the bad. I deserve to be saved." They don't understand the need. They don't understand the scope of sin. They're like Simon, the Pharisee who answered Jesus by saying "The one who has forgiven much, is the one who's going to love much." (Luke 7)

If I'm going to respond to the gospel of Jesus Christ or if I am going to effectively communicate the gospel of Jesus Christ, the first thing I've got to do is see the need. I've got to discover the reality of lostness. I've got to understand that life is not some great humanity test that's going to be graded

की सबसे कीमती वस्तु थी। मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ कि इब्राहीम और सारा अपने पूरे विवाह में निःसंतान थे और जब परमेश्वर ने उन्हें उनके साथ एक वाचा बाँधने के लिए बुलाया, इब्राहीम 75 वर्ष का था और सारा 65 वर्ष की थी। परमेश्वर कहते हैं, "चिंता मत करो, मैं ' मैं तेरे वंश को आकाश के तारों से भी अधिक बढ़ाऊंगा।" समस्या यह थी कि उनके कोई बच्चा भी नहीं था। तो, भगवान क्या करता है? मुझे यकीन है कि सारा, अगर वे उपलब्ध होते, तो हर सुबह घर पर गर्भावस्था परीक्षण करतीं। भगवान ने उन्हें 25 साल और इंतजार कराया! जब वे महान, महान होने के लिए काफी पुराने थे, परदादा, इब्राहीम 100 और सारा 90 की थी, परमेश्वर ने वादा पूरा किया और इसहाक का जन्म हुआ। लड़का बड़ा हुआ, उसकी माँ ने उसे प्यार किया, और उसके पिता ने उसकी हर हरकत को संजोया। वे उस प्रतिज्ञात बच्चे को अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करते थे। फिर स्पष्ट नीले रंग से वह वंडर बॉय को मारने के लिए वशीकरण, अविश्वसनीय, अकल्पनीय आदेश आता है। क्यों? भगवान ने ऐसा क्यों किया?

हम में से अधिकांश वास्तव में कभी भी इस अतुलनीय स्थिति की भयावहता और अत्याचार की चपेट में नहीं आए हैं। निश्चय ही, परमेश्वर इस व्यक्ति, अब्राहम से बहुत अधिक मांग रहा था। यह उत्पत्ति 22 के अर्थ को खोलने की कुंजी है। यह इस प्रश्न का उत्तर देने की कुंजी है, "मेमना कहाँ है?" यह आपके लिए पुछे जा रहे प्रश्न की कुंजी है कि आपका मेमना कहाँ है? और यहाँ वह कुंजी है: इससे पहले कि परमेश्वर हम में से किसी एक को एक महान उद्देश्य के लिए उपयोग करे, उसे और हमें निश्चित होना चाहिए कि हम उसे सबसे अधिक प्यार करते हैं।

यही सीख है। इससे पहले कि परमेश्वर हम में से किसी एक को एक महान उद्देश्य के लिए उपयोग करे, उसे और हमें निश्चित होना चाहिए कि हम उससे अधिक प्रेम करते हैं जितना हम किसी और से प्रेम करते हैं। देखो, यह परमेश्वर की व्यर्थता के कारण नहीं था कि उस ने इब्राहीम की परीक्षा ली। यह इस तरह से था कि इब्राहीम खुद जान सकता था कि उसके लिए यहोवा परमेश्वर से बढ़कर कुछ भी नहीं, कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं था। लोग, जबकि अब्राहम और इसहाक की कहानी पूरे इतिहास में अद्वितीय है, सिद्धांत नहीं है। भगवान अब भी मेमनों की मांग करते हैं। वह हमारे मेमनों के लिए कहता है, जो हमारे लिए कीमती हैं और जो हमें बहुत प्रिय हैं, उन्हें बलिदान की वेदी पर रखा जाना चाहिए ताकि वह हमारे जीवनो के द्वारा कुछ महान कर सके। हो सकता है कि वह आपसे आपका घर और आपका तत्काल परिवार, पिता और माता, भाई और बहन होने के लिए कह सकता है, क्योंकि आप एक विदेशी धरती पर एक मिशनरी होने के लिए अपने दिल में जलन महसूस करते हैं।

आपका मेमना आपका धन हो सकता है यदि परमेश्वर ने आपको बहुत अधिक संपन्नता से आशीषित किया है। उस मेमने को वेदी पर रखने की आपकी बुलाहट किसी महान सेवकाई या प्रभु के कार्य के लिए किसी महान परियोजना के लिए एक प्रमुख उपहार हो सकती है। आपका मेमना आपका समय हो सकता है यदि आप महसूस करते हैं कि परमेश्वर आपको एक ऐसी सेवकाई के लिए

on the curve about how good I am in relation to everybody else. If I'm going to respond to who Jesus is and what he has done, it will be because I've first realized the truth, that all have sinned and fallen short of God's glory (Romans 3:23) and that the wages of sin is death. (Romans 6:23)

Paul says, "you were dead in your transgressions and sins" (Ephesians 2:1) and "All of us also lived among them at one time." (Ephesians 2:1) Until someone sees and feels the need, he or she won't become a Christian. So step one is to recognize the need.

2. Realize the solution.

"But because of his great love for us, God, who is rich in mercy made us alive with Christ, even when we were dead in transgressions—It is by grace you have been saved. And God raised us up with Christ and seated us with him in the heavenly realms in Christ Jesus, in order that in the coming ages he might show the incomparable riches of his grace, expressed in his kindness to us in Christ Jesus." (Ephesians 2:4) There's the solution. Once the need is communicated, then and only then, can we talk about a solution.

The modern American mind is: "I can pull myself up by my bootstraps. I'm a self-made man. I don't need anybody else and I can take care of this problem. I'm independent." But the gospel message says. No, you can't take care of this problem. It's bigger than you. You don't have what it takes to solve it. The great news is God, who is rich in love and mercy, has already solved the problem. "But because of his great love for us. God, who is rich in mercy, made us alive with Christ even when we were dead in our transgressions."

The non-Christian who really has a curious mind will ask, "Now, I've heard about Jesus around Christmas and Easter but just how does Christ save me? How does Jesus Christ make me alive? Paul answered that question: "For God made him who had no sin (that's Jesus) to be sin for our sakes, so that in him we might become the righteousness of God." (2 Corinthians 5:21) Do you know what that's called?

Theologians and scholars call it "Substitutionary Atonement." That sounds awfully scholarly but it's not hard to understand. Break it down. What does substitute mean? It means, "One who takes the place of another." Atonement means "One who pays a debt for another." Jesus took your place, he was the substitute and he atoned; he paid your sin debt to God that you could not pay. Therefore, you share in his righteousness. That is the Gospel of Jesus Christ, the message of Christianity.

But often we discuss how without first discussing why and who made the how possible. The why and the who need to be understood first. People need to know the Christ. They need to fall in awe before the one who came from heaven's throne room, God come in the flesh, the one who never sinned, who hung on a dirty cross and who was treated like

बुला रहा है जिसे आप शौक से किया करते थे।

मेमना कहाँ है? मेरा पूरे दिल से विश्वास है कि परमेश्वर हम में से हर एक के द्वारा कुछ महान करना चाहता है, लेकिन केवल तभी जब हम अपने मेमने को वेदी पर रखने के लिए तैयार हों। मैं आपके साथ बलिदान के सात त्वरित सिद्धांतों को साझा करना चाहता हूँ। जाहिर है, हम इन्हें संक्षेप में कवर करने जा रहे हैं।

बलिदान के सिद्धांत

2. वह हमें बलिदान के समय के लिए तैयार करता है.

मेरे लिए यह स्पष्ट है कि परमेश्वर अब्राहम को इस परीक्षा के लिए तैयार कर रहा था। पद 1 को फिर से देखें, यह इस तरह से शुरू होता है, "कुछ समय बाद परमेश्वर ने इब्राहीम की परीक्षा ली;" कुछ समय बाद क्या? इसका उत्तर उन अनुभवों से कुछ समय बाद है जो अब्राहम ने अनुभव किए थे। इस बिंदु तक, परमेश्वर अब्राहम को तैयार कर रहा था। उसने उसे अपनी मातृभूमि से उर जाने के लिए कहा था। उन्होंने बेटे के लिए 25 साल तक इंतजार कराया। दूसरी ओर, भगवान उसे कुछ आशीर्वाद दे रहे थे। इब्राहीम आर्थिक रूप से समृद्ध हो गया था; वह धनवान था। जब अंत में इसहाक का जन्म हुआ, तो लड़का स्वस्थ और मजबूत हुआ। इब्राहीम ने अबीमेलक के साथ एक शांति संधि पर भी हस्ताक्षर किए। (उत्पत्ति 21)

तो मेरा कहना है कि परमेश्वर इब्राहीम को बलिदान के क्षण के लिए तैयार करने के लिए चुनौतियों और आशीषों का सही संयोजन दे रहा था। वह हमारे लिए वही काम करता है। अपने जीवन को देखो; तुम जनते हो यह सच है। वह सही संयोजन में हमारे जीवन को चुनौतियों और आशीषों से भर देता है। जैसा वह करता है, वह हमें उन महान क्षणों के लिए तैयार करता है जब हमारा विश्वास दांव पर लगा दिया जाएगा।

यहाँ लिखने लायक एक महान स्वयंसिद्ध है, यह याद रखने योग्य है। मैंने इसे पवित्रशास्त्र में सत्य देखा है, मैंने इसे अपने जीवन में सत्य देखा है और आप जानते हैं कि यह सत्य है: "आशीर्वाद के बाद परीक्षा आती है।" यहाँ इब्राहीम की कहानी में, उसके जीवन के सबसे शांतिपूर्ण क्षण के बाद और अबीमेलक के साथ शांति स्थापित करने के बाद, परमेश्वर उसके पास आता है और उसे बलिदान के लिए बुलाता है।

मैं सोचता हूँ कि किस प्रकार मूसा ने इस्राएल के बच्चों को दो भागों में बंटे लाल समुद्र में से निकाला। जब वे दूसरी ओर सुरक्षित थे, तब परमेश्वर ने उन्हें तीन दिन तक बिना जल के रहने दिया। वह उनका परीक्षण कर रहा है। जब यीशु का बपतिस्मा हुआ तो परमेश्वर ने कहा, "यह मेरा पुत्र है जिससे मैं प्रसन्न हूँ," और आत्मा एक कबूतर के रूप में उतरा, वह शैतान द्वारा परखे जाने के लिए जंगल में जाता है। आशीर्वाद के बाद परीक्षा आती है। लोग, जब तक हमारी परीक्षा नहीं हो जाती, तब तक हम केवल आशीषों में डूबे रहेंगे। यह कलीसिया के बारे में सच है और यह हमारे व्यक्तिगत जीवन में भी सच है।

he was the world's only sinner. We need to fall on our knees when we understand who Jesus is. We don't need to walk away smugly with some formula for salvation. Our message, our hope and our ticket is the person of Jesus Christ.

Peter did this the first time the Gospel was preached. He talked about the need. He helped them realize there was a need. He showed them their sin. He told them "This Jesus, whom you crucified," now that's showing them their sin, isn't it? I mean he could have shown them a million more, but he said, let's just take the most dominate one, "You crucified the son of God." The second thing he did was to show them the solution "God has made Him both Lord and Christ." Then in the next verse, Peter's listeners asked in essence the same as that all important question asked by the Philippian jailer. "Brothers, what shall we do? We recognize our sin. We realize the solution is in Jesus, now. What do we do?" That leads to step three.

3. Respond in faith.

"For it is by grace you have been saved, through faith—and this not from yourselves, it is the gift of God—not by works, so that no one can boast." (Ephesians 2:8-9) Folks, there it is. Scripture makes it clear that there has to be a response to this grace. Grace just means the gift offered by Jesus and in a word that response is a thing called "faith."

Again, there is a communication problem. Much of the world has defined the word "faith," in their own terms, "just believe." Just believe that Jesus is the Son of God with all your heart, that's faith. The Bible says faith is being sure of what you cannot see and what you may not understand. (Hebrews 11:1) The Bible says that faith is going where God says. (2 Corinthians 4:5)

Folks, just to ask Jesus to come into your heart as a personal Savior is not what Ephesians 2:8-9 is saying. Read it again. The passage says we are saved by grace through faith; not our works and not our own merits. The Ephesians statement is confirmed throughout the Bible, particularly the New Testament.

To properly understand Ephesians 2:8-9, let's allow God to define his desired faith response. There is no question that belief is at the core of faith. He has always dictated the faith response that he wanted. For example, when the Israelites were being bitten by poisonous snakes, what did God want as a faith response? Do you remember? He had Moses fashion a bronze serpent on top of a pole and he lifted that up. God said, "If you want to be healed from that, here's what you do. You look at that serpent. You'll be healed." (Numbers 21) That was the faith response. Who decided what that faith response would be? The people? No, God did.

Consider when the children of Israel were coming into the Promised Land and they were about to take on Jericho, that

2. परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को सिद्ध करने की आवश्यकता है।

हो सकता है हमें यह अच्छा न लगे, लेकिन यह सच है। परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को सिद्ध करने की आवश्यकता है। जब परीक्षाएँ आती हैं, तो परमेश्वर पूछ रहा है, "तुम्हारा मेमना कहाँ है?" वह शब्दों से अधिक की अपेक्षा करता है। हम बार-बार एक गीत गाते हैं, "मेरी जान ले लो और इसे रहने दो, भगवान को तुम्हारे लिए समर्पित कर दो।" क्या वे अच्छे शब्द नहीं हैं? भारी वचन, बलिदान, समर्पण और प्रतिबद्धता से भरे हुए, लेकिन क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर उन वचनों के बारे में क्या कहता है? उसने कहा, "मैं नहीं चाहता कि तुम केवल वचन के सुनने वाले बनो, मैं चाहता हूँ कि तुम वचन के वक्ता बनो। मैं चाहता हूँ कि तुम वचन पर चलने वाले बनो।" उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि परमेश्वर जानता है कि शब्द सस्ते हैं। आप शब्दों के माध्यम से बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन भगवान इसे कार्रवाई के साथ वापस कहते हैं, मुझे यह बताना बंद करो कि तुम मुझसे कितना प्यार करते हो, मुझे अपना प्यार दिखाओ और इसे साबित करो।

परमेश्वर ने कहा, "अपने पुत्र को, अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, ले ले।" (बनाम 2) "वाह, वाह! बाइबल में एक त्रुटि है, एक विरोधाभास है। इब्राहीम के एक से अधिक पुत्र थे। हम जानते हैं कि दासी हाजिरा से उसका एक और पुत्र था। उस लड़के का नाम इश्माएल था और इश्माएल उसका पिता बना। सभी अरब राष्ट्र। इसलिए, इसहाक उसका इकलौता बेटा नहीं था। ग्रीक शब्द "मोनोजीन" का अनुवाद "केवल" सेप्टुआजेंट के माध्यम से हमारे पास आया। अंग्रेजी में अनुवाद करना वास्तव में कठिन है, इसका अर्थ है, "सबसे बेशकीमती और पोषित और अद्भुत अधिकार।" मैं आपको इसके उपयोग का एक और उदाहरण देता हूँ। किंग जेम्स संस्करण में, जॉन 3:16 में कहा गया है, "ईश्वर ने दुनिया से इतना प्यार किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" न्यू इंटरनेशनल वर्जन कहता है, "भगवान ने इतना प्यार किया जगत को उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया।" संशोधित मानक संस्करण कहता है "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" यही शब्द 1 यूहन्ना 4:9 में है, "परमेश्वर ने अपने एकलौते (मोनोजेनेसिस) पुत्र को जगत में भेजा। यहाँ जो कहा जा रहा है वह यह है कि परमेश्वर अब्राहम से वह मांग रहा था जो वास्तव में उसका एकमात्र था, उसके पूरे जीवन में सबसे बेशकीमती संपत्ति थी। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर कहता है, "अब्राहम, मुझे मत बताओ कि तुम मुझसे प्यार करते हो। मैं वास्तव में तुम्हें मुझे दिखाए जा रहा हूँ।"

वही सिद्धांत हम यूहन्ना 21 में देखते हैं जब यीशु पतरस के पास आया, पुनरुत्थान के बाद, पतरस के इनकार के बाद। यीशु ने पूछा "पीटर, क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?" पीटर ने विनम्रतापूर्वक कहा, "भगवान, आप जानते हैं कि मैं आपसे प्यार करता हूँ।" यीशु ने कहा, "फिर मेरी भेड़ों को चराओ। मुझे दिखाओ।" मेरे लिए यह दिलचस्प है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक को प्रेरितों के "शब्द" नहीं कहा जाता है। इसे प्रेरितों के "कार्य" कहा जाता है। ईश्वर आपसे और मुझसे यही चाहता है। भगवान कहते हैं, "मैंने तुम्हें

great walled and most fortified city. God wanted belief in his power but he also wanted a faith response. I want you to march around that city once a day for six days and on the seventh day I want you to march around it seven times, and then I want you to call out in a great shout.

What faith response did God ask of Naaman, the Syrian leper, in 2 Kings 5 when he came down to see the prophet Elisha? Elisha didn't even go down to see him. He just sent word down through a messenger. He said, you tell him to go dip seven times in the Jordan River. It was God's idea.

What faith response did God ask of Peter after he had fished all night and he came to the shore? Jesus said, Peter, I want you to go launch out into the deep one more time and let down your nets.

There are countless other examples. But the question is: Did any of those responses merit or supply the power for the miraculous event that followed? No. No. No. Do you understand that? The faith response didn't supply the power. The children of Israel could have marched around the wall of Jericho a thousand times and that wall wouldn't have budged an inch if it weren't for the power of God. Naaman could have dipped in the Jordan River from sun up to sun down and he would have still left there a leper, except for the power of God. But when they responded in faith as God had prescribed then His power was channeled to them. God always determines the faith response. He always has. So, what faith response does God demand for accepting Christ? Let's allow the Bible answer rather than someone's opinion. The Book of Acts is the only inspired book of the Bible that gives us the pure history of the birth and the growth of the early church. In it and it alone are the only specific details of individual conversions of those first Christians. It's where to go to learn how they became a Christian. We should do no more or no less.

I want to show you concisely all of the accounts of conversions to Christianity found in the book of Acts. Now, we're not going to be able to take them in their entirety so I would encourage you in your private study to go back and look at them in their entire and the whole context. Look at the moments how they came to Christ and assimilate all that data we find.

1. The day the church began when those first 3,000 asked the question to Peter and the apostles. "When the people heard this, they were cut to the heart and said to Peter and the other apostles, 'Brothers, what shall we do?' Peter replied, 'Repent and be baptized, every one of you, in the name of Jesus Christ for the forgiveness of your sins. And you will receive the gift of the Holy Spirit.'" (Acts 2:37-38), "Those who accepted his message were baptized, and about three thousand were added to their number that day." (Acts 2:41)
2. "But many who heard the message believed and the

आशीर्वाद दिया है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मैं तुम्हारी उपस्थिति की सराहना करता हूँ, मैं तुम्हारी स्तुति और तुम्हारे गीतों की सराहना करता हूँ, लेकिन जहाँ तुम्हारा मुँह है वहाँ अपना बलिदान करो।" हमारा प्रभु चाहता है कि हम उसके प्रति अपने प्रेम को प्रमाणित करें।

5. किसी कीमती वस्तु को देने के लिए जो अधिक कीमती है, बलिदान देना है.

ठीक ऐसा ही है। हमारी कहानी पर वापस, आप क्या सोचते हैं कि इसहाक अब्राहम के लिए कितना कीमती था? तुम्हें पता है, है ना? लेकिन पिताओं, आपका बेटा कितना अधिक कीमती और सुरक्षित होगा, अगर आपने 25 साल तक हर दिन उसकी प्रतीक्षा की और उसके लिए प्रार्थना की। मुझे बताओ, वह तुम्हारे लिए कितना कीमती होगा?

"अब्राहम बिहान को सबेरे उठा, और अपने गदहे पर काठी कसी।" (बनाम 3) मुझे लगता है कि इब्राहीम एक जल्दी उठने वाला है, इसके अलावा और भी बहुत कुछ कहा गया है। हमें बताया नहीं गया है, लेकिन यहाँ मेरा अनुमान है; मेरा मानना है कि इब्राहीम अगली सुबह जल्दी उठ गया क्योंकि वह पूरी रात एक पलक भी नहीं सोया। मुझे लगता है कि वह अपनी पीठ के बल लेटा हुआ सितारों को देख रहा था, सोच रहा था और प्रार्थना कर रहा था, सोच रहा था और प्रार्थना कर रहा था।

वे मोरियाह पर्वत की तलहटी में पहुँच गए। आप उस बेखबर लड़के के कंधों पर लकड़ी का ढेर लगाना कैसा महसूस करेंगे, यह जानते हुए कि थोड़ी देर में यह आग का ईंधन होगा जो उसके शरीर को घेर लेगा? फिर वह प्रश्न, "पिता, होमबलि के लिए मेमना कहाँ है?" (बनाम 6)

"जब वे उस स्थान पर पहुँचे जिसके विषय में परमेश्वर ने उसको बताया था, तब इब्राहीम ने वहाँ वेदी बनाकर उस पर लकड़ी सजाई, और अपने पुत्र इसहाक को बान्धकर वेदी पर की लकड़ी के ऊपर लिटा दिया। तब उस ने हाथ बढ़ाकर उसको ले लिया। अपने बेटे को मारने के लिए चाकू।" (ब. 9-10) पृथ्वी पर क्या एक आदमी से ऐसा काम करवा सकता है? पृथ्वी पर क्या? उत्तर केवल कुछ है या कोई उस लड़के से भी ज्यादा कीमती है। भगवान शक्तिशाली है।

क्या आप भगवान से इतना प्यार करते हैं? हुह? मैं ईमानदार रहूँगा, मैं या तो नहीं जानता, क्योंकि मुझे इतना त्याग करने के लिए कभी नहीं बुलाया गया है। लेकिन आपको बलिदान करने के लिए क्या कहा गया है? क्या आप, किसी चीज़ के लिए, किसी से भी अधिक कीमती के लिए अपने लिए कुछ कीमती छोड़ देंगे? आप में से कुछ इसे एक ऐसी सेवकाई के लिए कर रहे हैं जिसे आपका जुनून मिल गया है; आपने सिर्फ एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि व्यक्ति के बाद व्यक्ति की मदद की है। लेकिन त्याग का अर्थ है किसी ऐसी चीज़ को देना जो आपके लिए और भी कीमती हो।

6. बलिदान हमेशा समझ में नहीं आता है.

number of men grew to about five thousand." (Acts 4:4)

3. The next reference is in the conversion of Simon, the Sorcerer. "But when they believed Philip as he preached the good news of the kingdom of God and the name of Jesus Christ, they were baptized ... And he followed Philip everywhere, astonished by the great signs and miracles he saw." (Acts 8:12-13)
4. The Ethiopian eunuch. "Then Philip began with that very passage of Scripture and told him the good news about Jesus. As they traveled along the road, they came to some water and the eunuch said, 'Look, here is water. Why shouldn't I be baptized?' And he gave orders to stop the chariot. Then both Philip and the eunuch went down into the water and Philip baptized him. When they came up out of the water, the Spirit of the Lord suddenly took Philip away, and the eunuch did not see him again, but went on his way rejoicing." (Acts 8:35-39)
5. Saul, who would become the great apostle Paul, gives his own testimony of what happened as he was on his way to Damascus. "As he neared Damascus on his journey, suddenly a light from heaven flashed around him. He fell to the ground and heard a voice say to him, 'Saul, Saul, why do you persecute me?' 'Who are you Lord?' Saul asked. 'I am Jesus, whom you are persecuting,' he replied." (Acts 9:3-5) After Saul gets to Damascus and talks with Ananias, "Immediately, something like scales fell from Saul's eyes and he could see again. He got up and was baptized." (Acts 9:18)
6. The conversion of the first Gentile, Cornelius. "Then Peter said, 'Can anyone keep these people from being baptized with water? They have received the Holy Spirit just as we have.' So he ordered that they be baptized in the name of Jesus Christ." (Acts 10:46)
7. "Some of the men from Cypress and Cyrene went to Antioch and began to speak to Greeks also, telling them the good news of Jesus. The Lord's hand was with them, and a great number of people believed and turned to the Lord." (Acts 11:20-21)
8. "There they spoke so effectively that a great number of Jews and Gentiles believed." (Acts 14:1)
9. Lydia came to Christ through the preaching and teaching of Paul, "One of those listening was a woman named Lydia, a dealer in purple cloth from the city of Thyatira, who was a worshiper of God. The Lord opened her heart to respond to Paul's message. When she and the members of her household were baptized, she invited us to her home." (Acts 16:14)
10. The Philippian jailer said, "He (the jailer) then brought them out and asked, 'Sirs, what must I do to be saved?' They replied, 'Believe in the Lord Jesus, and you will

ऐसे समय होते हैं जब आप परमेश्वर के साथ चलते हैं और आपके पास उत्तर के बजाय प्रश्न होते हैं और परमेश्वर आपसे बस इतना कहता है, "यह ठीक है। तुम नहीं समझते, लेकिन मेरा हाथ पकड़ कर मेरी बात मानो।" परमेश्वर अब्राहम से यही कह रहा था। इब्राहीम ने इस अनुरोध को किसी भी तरह नहीं समझा। यह प्रतिज्ञा उसके पास पहिले ही आई थी कि इसहाक के द्वारा उसकी सन्तान आशीष पाएगी। अब परमेश्वर कहते हैं, "जाओ इसहाक को मार डालो।" इसका कोई मतलब नहीं है। लेकिन बलिदान का हमेशा कोई मतलब नहीं होता है और यहीं पर विश्वास को बढ़ाया जाता है। आस्था का अर्थ है कि आप जिस चीज की आशा करते हैं उसके बारे में निश्चित होना और जो आप देख नहीं सकते उसके बारे में निश्चित होना। कोई भी त्याग करने के लिए विश्वास की आवश्यकता होती है। किसी भी समय आप अपने लिए कुछ कीमती चीज छोड़ देते हैं और अधिक कीमती चीज को देने के लिए विश्वास की जरूरत होती है। लेकिन जब आप इसे समझ नहीं पाते हैं तो यह अधिक विश्वास लेता है।

"जब उसके सेवक मोरियाह पर्वत की तलहटी में पहुंचे, तब उस ने उन से कहा, कि गदही के पास यहीं ठहरो, और मैं और लड़का वहां पार हो जाएं।" (पद. 5) क्या आप जानते हैं कि मुझे क्यों यकीन है कि उसी ने बनाया है। नौकर रहते हैं? मुझे विश्वास है क्योंकि वह जानता है कि जब उसने वह चाकू उठाया और अपने बेटे को मारना शुरू किया, तो नौकरों ने उसे रोकने की कोशिश की होगी। विश्वास के द्वारा इब्राहीम किसी भी चीज को परमेश्वर की आज्ञा में बाधा नहीं बनने देने वाला था।

परन्तु फिर उसने उन सेवकों से कहा, 'हम दण्डवत करेंगे, और तब तेरे पास फिर आएंगे।'" (पद. 5) क्या? 'हम पूजा करेंगे और फिर हम आपके पास वापस आएंगे।' यह आपकी बाइबिल में गलत छाप नहीं है। मुझे लगता है कि मुझे पता है कि इब्राहीम पूरी रात क्या सोच रहा था, इससे पहले कि वे उस सुबह चले गए। इब्रानियों 11:19 हमें थोड़ी अंतर्दृष्टि देता है। उसने कहा कि जब वह सोच रहा था कि इसहाक का क्या होगा, तो उसने सोचा कि परमेश्वर उसे मरे हुआ में से जिलाएगा। तब इब्रानी लेखक ने लाक्षणिक अर्थ में कहा, कि ठीक ऐसा ही हुआ, कि वह उसे मरे हुआ में से जिलाए।

मैं आपको विश्वास और समझ के बारे में बताना चाहता हूँ। हमने बाइबिल में नबियों, यीशु या प्रेरितों द्वारा पुरुषों और महिलाओं को मरे हुआ में से उठाए जाने के बारे में बहुत सी कहानियां पढ़ी हैं। हमें लगता है कि यह कोई बड़ी बात नहीं है। मैं आपको कुछ बता दूँ, इब्राहीम का मानना था कि इससे पहले कि परमेश्वर किसी को मरे हुआ में से जिलाता, इससे पहले कि परमेश्वर इसहाक को मरे हुआ में से जिलाएगा। बलिदान हमेशा समझ में नहीं आता है।

5. बलिदान स्वैच्छिक होना चाहिए।

परमेश्वर ने इब्राहीम से बलिदान करने के लिए कहा, परन्तु उसने उसे ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं किया। अच्छे धार्मिक लोगों के बीच भी यह एक बड़ी गलतफहमी है। अनैच्छिक बलिदान जैसी कोई चीज नहीं होती है। हम कभी-कभी गलती से एक नुकसान

be saved—you and your household.' Then they spoke the word of the Lord to him and to all the others in his house. At that hour of the night the jailer took them and washed their wounds; then immediately he and all his family were baptized." (Acts 16:30)

11. "Many of the Jews believed, as did also a number of prominent Greek women and many Greek men." (Acts 17:12)
12. "A few men became followers of Paul and believed." (Acts 17:34)
13. "Crispus, the synagogue ruler, and his entire household believed in the Lord; and many of the Corinthians who heard him believed and were baptized." (Acts 18:8)
14. Paul comes to Ephesus and stays there for two-and-a-half years. "And he asked them, 'Did you receive the Holy Spirit when you believed?' They answered, 'No, we have not even heard that there is a Holy Spirit.' So Paul asked, 'Then what baptism did you receive?' 'John's baptism,' they replied. Paul said, 'John's baptism was a baptism of repentance. He told the people to believe in the one coming after him, that is, in Jesus.' On hearing this, they were baptized into the name of the Lord Jesus." (Acts 19:2-5)
15. "I have declared to both Jews and Greeks that they must turn to God in repentance and have faith in our Lord Jesus." (Acts 20:21)
16. And then finally the last one. Paul once again recounts his conversion experience and said, "I fell to the ground and heard a voice say to me, 'Saul! Saul! Why do you persecute me?' 'Who are you, Lord?' I asked. 'I am Jesus of Nazareth, whom you are persecuting,' he replied. My companions saw the light, but they did not understand the voice of him who was speaking to me. 'What shall I do, Lord?' I asked. 'Get up,' the Lord said, 'and go into Damascus. There you will be told all that you have been assigned to do.'" Ananias asked Saul, "And now what are you waiting for? Get up, be baptized and wash your sins away, calling on his name." (Acts 22:16)

That may have been a little lengthy, but I wanted you to see it for yourself. Nine different times in those conversion accounts, all that we find in the book of Acts, we're told that the people believed and obviously they did. Three different times we're told that they repented and the word, "repent," means "to turn," to turn away from the world and turn toward Jesus Christ. Ten different times, we're told they were baptized. The word, "baptized," means to be immersed, to be dunked or dipped, meaning the total body going beneath the water. When one is raised from the water, resurrected, he came out walking into a newness of life. By the way, each time they were baptized, it wasn't a week later and it wasn't a month later, it was immediately. Now, what

को बलिदान के रूप में संदर्भित करते हैं। एक नौकरी, एक निवेश, अपने स्वास्थ्य, एक साथी या एक बच्चे को खो देना कोई बलिदान नहीं है। अब यह दर्दनाक, भयानक, दुखद या सबसे भयानक चीज हो सकती है जिससे आप कभी भी गुजरे हैं, लेकिन बाइबिल के अनुसार यह एक बलिदान नहीं है। कारण यह है: एक बलिदान दिया जाना चाहिए, यह पसंद से होता है, यह कुछ ऐसा नहीं होता है जो होता है। यीशु का क्रूस एक बलिदान था। क्यों? क्योंकि, उन्होंने इसे चुना। ऐसा नहीं होना चाहिए था। जब वह आपको क्रूस उठाने के लिए बुलाता है, वह आपको बलिदान चुनने के लिए बुला रहा है।

6. जितना बड़ा बलिदान, उतनी ही बड़ी मिठास और उतना ही बड़ा आशीर्वाद।

मुझे यह बिंदु पसंद है। पहले बात करते हैं मिठास की। परमेश्वर ने इब्राहीम को बलि चढ़ाने से रोका; उसने झाड़ी में एक मेढ़ा रखा। (v। 13) "यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से इब्राहीम को पुकारा और कहा, 'मैं अपनी ही शपथ खाता हूँ, यहोवा की यह वाणी है, कि क्योंकि तू ने यह किया है और अपने पुत्र, अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, मैं वे निश्चय तुझे आशीष दूँगा, और तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकोंके समान अनगिनत करूँगा। तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरोंका अधिकारनी होगा, और पृथ्वी की सारी जातियाँ तेरे वंश के द्वारा आशीष पाएंगी, क्योंकि तू मेरी बात मानी है।'" (उत्पत्ति 22:15-18)

"तब इब्राहीम अपने सेवकोंके पास लौट आया, और वे सब बेशर्बा को संग संग गए।" (वि. 19) क्या आपने कभी सोचा है कि इब्राहीम को उस पहाड़ से नीचे उतरते हुए कैसा लगा? आपको क्या लगता है कि उन्होंने बेशर्बा तक कैसा महसूस किया? क्या आपने कभी अपने किसी काम के बारे में इतना अच्छा महसूस किया है, कुछ आपने कहा, कुछ ऐसा जो सही था कि जब आप साथ चल रहे थे तो अपने चेहरे से मुस्कान को नहीं रोक पाए। कभी-कभी आप बस चले गए और कहा, "हाँ!" मैं इब्राहीम को ऐसा करते हुए और मुस्कराते हुए देख सकता हूँ जब उसने प्रभु के दूत के भाषण को याद किया। अब मुझे पता चला कि तुम मुझसे कितना डरते हो। क्या आप जानते हैं कि वह क्या अनुभव कर रहा था? उन्हें यज्ञ की मिठास का अनुभव हो रहा था।

जब हम बपतिस्मा के पानी से बाहर आए तो हममें से अधिकांश बहुत रोमांचित हुए हैं जो आपकी स्मृति में सबसे मधुर क्षण हो सकता है। आप जानते हैं क्यों? क्योंकि उस क्षण आप कह रहे थे, "परमेश्वर, मैं अपना जीवन तुझे अर्पित करता हूँ। मैंने अपने पुराने पापी मनुष्यत्व को दफना दिया और मैंने अपना नया मनुष्यत्व आपको सौंप दिया।"

एक। जितना बड़ा त्याग उतना बड़ा वरदान। इब्राहीम ने परमेश्वर के समय का आशीर्वाद प्राप्त किया। जैसे ही हाथ ऊपर उठता है, जैसे ही चाकू नीचे आने वाला होता है, "तब भगवान ने उसे रोक दिया क्योंकि भगवान के दूत ने पुकार कर कहा, 'लड़के पर हाथ मत रखो, उसे कुछ मत करो।'" (पद 10-11) तब उसने परमेश्वर की स्वीकृति की आशीष प्राप्त की जिसके बारे में हम पद 12 में पढ़ते हैं।

faith response does God set forth for coming to Christ?

I realize that much of the world asked "Do you really believe God requires baptism as a part of faith response for accepting Christ?" They could also ask "Do you really believe that Moses and the Israelites were required a look at the bronze snake as their faith response?" "Do you really believe that God required the Israelites to march around that city like idiots once a day for six days and seven times on the seventh day?" "Do you really believe God expected Naaman to dip seven times in the Jordan?" "Do you really believe he wanted Peter to go out after fishing all night and cast those nets one more time?" Do you really believe God wants the response He requested from all those people for their physical healing or the response He demands of us for our spiritual healing, the forgiveness of our sins. Of course the answer is God expects man to obey Him based upon knowledgeable faith.

A few other verses should put everything in perspective about the way God desires us to respond to Him in faith. "Whoever believes and is baptized will be saved, but whoever does not believe will be condemned." (Mark 16:16) But, what is the purpose for baptism? "Or don't you know that all of us who were baptized into Christ Jesus were baptized into his death? We were therefore buried with him through baptism into death in order that, just as Christ was raised from the dead through the glory of the Father, we too may live a new life. If we have been united with him like this in his death, we will certainly also be united with him in his resurrection." (Romans 6:3-5:1)

Paul says, the reason God chose to incorporate it as part of the faith response, contingent upon belief, contingent upon repentance and a turning to God, is to re-enact the very death, burial and resurrection of Jesus Christ. Peter gave the same reason when he was talking about Noah and how he was saved because of his faith response, when God sent that great flood upon the earth. "And that water symbolizes baptism that now saves you also—not the removal of dirt from the body but the pledge of a good conscience toward God." (1 Peter 3:21) There's nothing magical about the water. It's not holy. It's not what it does physically by taking away anything dirty or unclean. Its whole purpose is "The pledge of a good conscience toward God" Why? Because it's fulfilling, the faith response that God has asked for.

There are a lot of friends who very respectfully and honestly disagree with what I've shared with you, despite all that I've shared and the reasoning behind it. Going back to our passage in Ephesians 2:8-9, where it says, "For by grace are you saved through faith—and this not of yourselves, it is the gift of God—not of works, lest anyone should boast." They say, "But baptism is a work, it's a work."

Let me show you one last verse as we summarize

बी। उसने परमेश्वर के प्रावधान का आशीष प्राप्त किया। "इब्राहीम ने आंख उठाई, और क्या देखा, कि झाड़ी में एक मेढ़ा उसके सींगोंसे फंसा हुआ है। उस ने जाकर उस मेढ़े को पकड़कर अपने पुत्र के बदले होमबलि करके चढ़ाया।" (वि. 13) क्या मेढ़े ने अपने सींगों को पकड़ा था? या भगवान ने दिया?

7. परमेश्वर मेमने का वास्तविक प्रदाता है।

"अतः इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे रखा (यहोवा यिरे)। और आज तक भी कहा जाता है, कि यहोवा के पहाड़ पर उपाय किया जाएगा।" (पद. 14) पहाड़ को "प्रभु की व्यथा," "निकट मिस," या "लगभग तबाही।" उसने उसका नाम यहोवा-यिरे रखा। प्रभु प्रदान करेगा।

कोई भी बलिदान जो परमेश्वर हमसे करने के लिए कहता है, आपके जीवन में कुछ भी, वह मेमना प्रदान करता है। वही है जिसने इब्राहीम को उसके सारे मेमनों को दिया था। उसने ही इब्राहीम को इसहाक दिया था। वह वह था जिसने वाचा को आरंभ और सशक्त किया था, न कि अब्राहम ने। परमेश्वर आपसे जो भी बलिदान माँगे, याद रखें कि उसने आपके जीवन में मेमना दिया है। चाहे वह आपका समय हो, पैसा हो, दिल हो, घर हो या कोई रिश्ता हो, भगवान आपको वह मेमना देते हैं। जब तुम उसे वेदी पर चढ़ाने को तैयार हो, तो वह तुम्हारे लिए सौ गुणा भोजन तैयार करेगा।

मैं यहाँ एक छोटे बिंदु के साथ समाप्त करना चाहता हूँ जो वास्तव में सिद्धांत संख्या सात का विस्तार है; परमेश्वर ने निश्चित रूप से परम मेमने, परमेश्वर के मेमने को प्रदान किया है। यहाँ मसीह के पुराने नियम में एक प्रकार या पूर्वाभास का एक सुंदर उदाहरण दिया गया है। हम उनमें से कुछ को पहले ही देख चुके हैं। उदाहरण के लिए, इसहाक को "मोनोजेनेसिस" कहा जाता था, एकमात्र, सबसे प्रिय पुत्र। जीसस, जॉन 3:16। वह पिता के मोनोजेनेसिस थे। उन्होंने इसहाक के वहाँ पहुँचने के लिए वर्षों तक प्रतीक्षा की, नबियों ने यीशु के आने के लिए वर्षों और सदियों तक प्रतीक्षा की। इसहाक को बलिदान के लिए बुलाया गया था। कैसे यीशु के बारे में? जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यूहन्ना 1:29 में उसे पहली बार देखा, तो उसने उसकी ओर देखा और कहा, "देखो मेमना।"

यहाँ तक कि वह स्थान, मोरियाह पर्वत, जहाँ इसहाक को बलि चढ़ाने के लिए ले जाया गया था, यरूशलेम नगर के ठीक मध्य में है। यह खोपड़ी की जगह से सिर्फ एक पत्थर फेंकना है, जहाँ भगवान का मेमना कूस पर लटका हुआ था ताकि आप और मैं हमारे पापों से मुक्त हो सकें।

पतरस कहता है, "क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो बापदादों से चला आता है, उस से तुम्हारा छुटकारा चांदी या सोने जैसी नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, परन्तु निर्दोष और निर्दोष मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोह के द्वारा

everything up "He saved us, not because of righteous things we had done, but because of his mercy." (Titus 3:5) See it's not by what we do. It's not our power. It's his mercy. He is the power. "He saved us through the washing of rebirth and the renewal of the Holy Spirit." (Titus 3:6) Baptism has nothing to do with working; it has everything to do with submission. It has everything to do with faith. It means nothing apart from belief. It means nothing apart from Jesus Christ. Baptism is simply the faith response connecting us to the great power that saves us from our sins. Amazing Grace #1273, Steve Flatt July 21, 1996

हुआ।" बिना स्थान के।" सभी तरह की समानताएं हैं, लेकिन एक बड़ा अंतर है। परमेश्वर ने इब्राहीम से अपने पुत्र इसहाक का बलिदान नहीं करवाया, और परमेश्वर अपने पुत्र यीशु के बलिदान को नहीं रोकेगा।

यदि आपने सुसमाचार का पालन करके, यीशु के नाम को अंगीकार करके, पापों से मुड़कर, और पाप के लिए मरने और मसीह के साथ गाड़े जाने के द्वारा, परमेश्वर के मेमने के बलिदान को स्वीकार नहीं किया है, तो अब वह है समय। अमेज़िंग ग्रेस # 1276, स्टीव फ्लैट, 18 अगस्त 1996

अध्याय 7

बचने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न जो मुझे पता है वह प्रेरितों के काम 16:30 में दर्ज है। यह फिलिप्पी के एक जेलर के होठों से निकला था जो आत्महत्या के बारे में सोच रहा था। लेकिन कुछ ही पलों में वह एक जीवन चाहता था, केवल एक जीवन नहीं, वह अनन्त जीवन चाहता था। उसने पूछा, "उद्धार पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?"

सभी मानवीय प्रश्नों में से सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर इस पाठ का फोकस है। जाहिर है, मैं इस सवाल और इसके जवाब को उन लोगों के लिए संबोधित करना चाहता हूँ जो ईसाई नहीं हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो ईमानदारी से जेलर के प्रश्न का उत्तर नहीं जानते हैं: उद्धार पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? दुनिया में किसी भी चीज से ज्यादा, आपको न केवल उत्तर जानने की जरूरत है, बल्कि इसका जवाब देने की भी जरूरत है। दूसरे, मैं इस प्रश्न और उत्तर को उन ईसाइयों से संबोधित करना चाहता हूँ जो तर्क और आपकी प्रतिबद्धता के प्रभाव को समझते हैं। मुझे आशा है कि यह पाठ आपको प्रश्न का उत्तर उन लोगों के साथ साझा करने के लिए बेहतर रूप से तैयार करेगा जिन्हें इसकी सख्त आवश्यकता है। हम इस बारे में बहुत चिंतित हैं कि हम प्रभावी ढंग से कैसे संवाद करते हैं। मुझे चिंता है कि हम अक्सर नहीं करते हैं।

अक्सर, हम वही मान लेते हैं जो हम सोचते हैं कि लोग जानते हैं। हम वही मानते हैं जो हम सोचते हैं कि वे समझते हैं। बहुतों के पास पॉट उत्तर है, लेकिन यह प्रश्न का उत्तर नहीं देता है। हम सिर्फ संवाद नहीं करते हैं। मुझे उस जोड़े की कहानी बहुत पसंद है जिसकी शादी को 70 साल हो गए थे और वह सुनने में काफी मुश्किल था। उनकी 70वीं वर्षगांठ पर छोटी बूढ़ी औरत उनके पास झुकी और बोली, "मुझे तुम पर बहुत गर्व है!" उसने उसकी ओर देखा और कहा, "मैं भी तुमसे थक गया हूँ!"

मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन मुझे लगता है कि कई बार मैं सुनने में कठोर होने के कारण आध्यात्मिक रूप से बोलने का दोषी रहा हूँ - यह नहीं सुन रहा था कि क्या पूछा जा रहा है या यह महसूस कर रहा हूँ कि वे कहाँ थे। इसलिए हममें से उन लोगों की मदद करना जो ईसाई हैं उस प्रश्न का उत्तर संवाद करने के लिए

इस पाठ का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग हो सकता है। क्योंकि दोस्तों, सुसमाचार की शक्ति के बारे में कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यह किसी भी संस्कृति में किसी भी पीढ़ी को दोषी ठहराने और परिवर्तित करने की ईश्वर की शक्ति है। यदि यह बहुतायत में ऐसा नहीं कर रहा है, तो यह संकेत की स्पष्टता की कमी के कारण नहीं है; यह और अधिक होगा जिस तरह से इसे प्रसारित किया जा रहा है।

बचने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? संपूर्ण नया नियम, किसी न किसी रूप में, उस प्रश्न के उत्तर पर केंद्रित है। इफिसियों 2, पहले दस पद हमें एक संक्षिप्त और शक्तिशाली विवरण देते हैं कि उद्धार पाने के लिए किसी को क्या करना चाहिए। इफिसियों 2:1-10

4. आवश्यकता को पहचानो।

"जब तक तू इस संसार की रीति पर, और आकाश के राज्य के हाकिम, अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलता था, जो अब उन में काम करता है, तब तू अपने अपराधों और पापों के कारण मरा हुआ था; अवज्ञाकारी। हम सब भी एक समय में उनके बीच रहते थे, अपने पापी स्वभाव की लालसाओं को तृप्त करते थे और उसकी इच्छाओं और विचारों का पालन करते थे। बाकी लोगों की तरह, हम स्वभाव से क्रोध के पात्र थे। दोस्तों, यदि कोई मसीह के पास आने वाला है, तो उसे पहले उस परिवर्तन की आवश्यकता को देखना चाहिए। यही पर, मसीह के राजदूत के रूप में, ईसाई अक्सर असफल हो जाते हैं। जब हमारे पास कोई प्रश्न नहीं होता है तो हम उत्तर की ओर छलांग लगाते हैं।

लोगों की दो व्यापक श्रेणियाँ हैं जो मसीह के पास नहीं आते हैं। पहली श्रेणी वे हैं जो सोचते हैं कि वे इतने बुरे हैं कि दुनिया में ऐसा कोई मौका नहीं है कि भगवान कभी उन तक पहुंच सकें या उन्हें बचा सकें। "तुम्हारा मतलब है कि भगवान मुझे बचा सकता है?" एक प्रचारक के रूप में और मसीह के एक राजदूत के रूप में मेरे अनुभव में, मैंने पाया है कि उन लोगों तक पहुंचना आमतौर पर आसान होता है। क्योंकि एक बार जब आप उनके दोष और लज्जा को तोड़ देते हैं और उस उद्घाटन में मसीह के प्रेम और दया को उंडेल देते हैं, तो वे ढीले पड़ने लगते हैं।

परन्तु एक दूसरा समूह है जो कभी कभी मसीह के पास आता है और यह विशाल बहुमत है। जो लोग सोचते हैं कि मैं एक अच्छा इंसान हूँ और मुझे वास्तव में बचाने की जरूरत नहीं है। मैं हमेशा गैलप पोल से प्रभावित होता हूँ जो इंगित करता है कि 90% अमेरिकी कहते हैं, "मैं एक ईसाई हूँ।" फिर भी, वह प्रतिशत हमारी जनसंख्या के प्रतिशत के आस-पास भी नहीं है जो एक साथ इकट्ठा होते हैं, जिनका नाम किसी भी चर्च रोल पर है, जो बाइबल पढ़ते हैं, जो प्रार्थना करते हैं या जो किसी मंडली को पैसे देते हैं।

जैसे-जैसे आप उनके द्वारा पूछे गए सवालों को करीब से देखते हैं, आप यह समझने लगते हैं कि वे ऐसा क्यों सोचते हैं। अधिकांश अमेरिका एक ईसाई होने को मूल रूप से एक अच्छा व्यक्ति होने के रूप में परिभाषित करता है। उन्होंने दो चीजों को पर्यायवाची बना दिया है। मानो या न मानो, वहाँ बहुत सारे लोग हैं जो सोचते

हैं कि वे पहले से ही ईसाई हैं क्योंकि वे खुद को अच्छा मानते हैं।

मैंने सबसे व्यावहारिक प्रश्नों में से एक सीखा है जो आप किसी व्यक्ति से पूछ सकते हैं और स्पष्ट रूप से बातचीत के साथ-साथ आप इसे चतुराई से करते हैं। उनसे पूछें कि क्या वे स्वर्ग जा रहे हैं। आम तौर पर यह उन्हें चौंका देगा और वे कहेंगे, "ठीक है, मुझे लगता है कि मैं हूँ।" तब मुझे विचार करना अच्छा लगता है, "मुझे बताओ, तुम क्यों सोचते हो कि तुम ऐसा करोगे?" 90 प्रतिशत से अधिक समय में, उत्तर है "मैं काम पर बहुत अच्छा काम करता हूँ, मैं अपने बच्चों से प्यार करता हूँ, मैं मूल रूप से ईमानदार हूँ, मैं यूनाइटेड वे को देता हूँ और मैं कोई कानून नहीं तोड़ता।" दूसरे शब्दों में, वे जो कह रहे हैं वह है: मेरे जीवन में अच्छाई बुराई से अधिक है। मैं बचाए जाने के योग्य हूँ।" वे आवश्यकता को नहीं समझते। वे पाप के दायरे को नहीं समझते। वे शमौन, फरीसी की तरह हैं जिन्होंने यीशु को यह कहकर उत्तर दिया, "जिसने बहुत क्षमा किया है, वही है।"

यदि मैं यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रत्युत्तर देने जा रहा हूँ या यदि मैं यीशु मसीह के सुसमाचार को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने जा रहा हूँ, तो सबसे पहले मुझे जो करना है वह आवश्यकता को देखना है। मुझे खोएपन की वास्तविकता का पता लगाना है। मुझे यह समझ में आ गया है कि जीवन कोई महान मानवता की परीक्षा नहीं है जो वक्र पर वर्गीकृत किया जा रहा है कि मैं हर किसी के संबंध में कितना अच्छा हूँ। यदि मैं इस बात का उत्तर देने जा रहा हूँ कि यीशु कौन है और उसने क्या किया है, तो यह इसलिए होगा क्योंकि मैंने पहले सत्य को जान लिया है, कि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:23) और यह कि परमेश्वर की मजदूरी पाप मृत्यु है। (रोमियों 6:23)

पौलुस कहता है, "तुम अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।" (इफिसियों 2:1) और "हम सब भी एक समय उनके बीच जी चुके थे।", वह ईसाई नहीं बनेगा। इसलिए पहला कदम जरूरत को पहचानना है।

5. उपाय समझो।

"परन्तु दया के धनी परमेश्वर ने हम से अपने बड़े प्रेम के कारण हमें मसीह के साथ जीवित किया, यहां तक कि जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है। और परमेश्वर ने हमें मसीह के साथ जिलाया और बैठाया।" हमें उसके साथ मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में, कि आनेवाले युगों में वह अपने अनुग्रह का वह अतुलनीय धन दिखाए, जो मसीह यीशु में हम पर अपनी उस करुणा के द्वारा व्यक्त हुआ है।" (इफिसियों 2:4) इसका समाधान है। एक बार जब जरूरत का संचार हो जाता है, तब और केवल तभी हम किसी समाधान के बारे में बात कर सकते हैं।

आधुनिक अमेरिकी दिमाग है: "मैं अपने बूटस्टैप से खुद को ऊपर खींच सकता हूँ। मैं एक स्व-निर्मित आदमी हूँ। मुझे किसी और की जरूरत नहीं है और मैं इस समस्या का ध्यान रख सकता हूँ। मैं स्वतंत्र हूँ।" लेकिन सुसमाचार संदेश कहता है। नहीं, आप इस

समस्या का ख्याल नहीं रख सकते। यह तुमसे बड़ा है। इसे हल करने के लिए आपके पास क्या है। महान समाचार यह है कि प्रेम और दया के धनी परमेश्वर ने पहले ही समस्या का समाधान कर दिया है। "परन्तु अपने उस बड़े प्रेम के कारण जो हम पर है; परमेश्वर ने जो दया का धनी है, हमें मसीह के द्वारा उस समय भी जिलाया, जब हम अपने अपराधों के कारण मर गए थे।"

वास्तव में एक जिज्ञासु मन वाला गैर-ईसाई पूछेगा, "अब, मैंने क्रिसमस और ईस्टर के आसपास यीशु के बारे में सुना है, लेकिन मसीह मुझे कैसे बचाता है? यीशु मसीह मुझे कैसे जीवित करता है? पॉल ने उस प्रश्न का उत्तर दिया:" भगवान के लिए जिसमें कोई पाप नहीं था (अर्थात् यीशु) को हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (2 कुरिन्थियों 5:21) क्या आप जानते हैं कि इसे क्या कहा जाता है?

धर्मशास्त्री और विद्वान इसे "प्रतिस्थापी प्रायश्चित" कहते हैं। यह बहुत ही विद्वतापूर्ण लगता है लेकिन इसे समझना कठिन नहीं है। तोड़ दो। स्थानापन्न का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है, "वह जो दूसरे का स्थान लेता है।" प्रायश्चित का अर्थ है "वह जो दूसरे के लिए ऋण चुकाता है।" यीशु ने आपका स्थान लिया, वह स्थानापन्न था और उसने प्रायश्चित किया; उसने परमेश्वर को आपके पाप का कर्ज चुका दिया जिसे आप चुका नहीं सकते थे। इसलिए, आप उसकी धार्मिकता में भाग लेते हैं। वह ईसा मसीह का सुसमाचार है, ईसाई धर्म का संदेश है।

लेकिन अक्सर हम इस बात पर चर्चा करते हैं कि पहले क्यों और किसने कैसे संभव बनाया, इस पर चर्चा किए बिना कैसे। पहले क्यों और किसे समझने की जरूरत है। लोगों को मसीह को जानने की जरूरत है। उन्हें उसके सामने विस्मय में पड़ने की आवश्यकता है जो स्वर्ग के सिंहासन कक्ष से आया है, परमेश्वर देह में आता है, जिसने कभी पाप नहीं किया, जो एक गंदे क्रूस पर लटका हुआ था और जिसके साथ ऐसा व्यवहार किया गया जैसे कि वह दुनिया का एकमात्र पापी था। जब हम समझते हैं कि यीशु कौन है, तो हमें अपने घुटनों पर गिरने की आवश्यकता है। हमें मोक्ष के लिए किसी सूत्र के साथ आत्मसंतुष्ट होकर चलने की आवश्यकता नहीं है। हमारा संदेश, हमारी आशा और हमारा टिकट यीशु मसीह का व्यक्ति है।

पतरस ने ऐसा पहली बार किया जब सुसमाचार का प्रचार किया गया। उन्होंने जरूरत के बारे में बात की। उसने उन्हें यह महसूस करने में मदद की कि वहाँ एक आवश्यकता थी। उसने उन्हें उनका पाप दिखाया। उसने उनसे कहा, "यह यीशु, जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया," अब यह उन्हें उनके पाप दिखा रहा है, है ना? मेरा मतलब है कि वह उन्हें एक लाख और दिखा सकता था, लेकिन उसने कहा, चलो सबसे अधिक प्रभुत्व वाले को लेते हैं, "तुमने परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाया।" दूसरा काम जो उसने किया वह उन्हें समाधान दिखाना था "परमेश्वर ने उसे प्रभु और मसीह दोनों बनाया है।" फिर अगले पद में, पतरस के श्रोताओं ने संक्षेप में वही पूछा जो फिलिप्पी के जेलर द्वारा पूछे गए सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों के समान था। "भाइयों, हम क्या करें? हम अपने

पाप को पहचानते हैं। हम महसूस करते हैं कि समाधान अब यीशु में है। हम क्या करें?" वह चरण तीन की ओर जाता है।

6. विश्वास में प्रतिक्रिया दें।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर का दान है - और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8-9) लोग, वहाँ है। पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट करता है कि इस अनुग्रह का प्रत्युत्तर होना चाहिए। अनुग्रह का अर्थ केवल यीशु द्वारा दिया गया उपहार है और एक शब्द में प्रतिक्रिया "विश्वास" कहलाती है।

फिर एक संचार समस्या है। दुनिया के अधिकांश लोगों ने "विश्वास" शब्द को अपने शब्दों में परिभाषित किया है, "बस विश्वास करो।" बस विश्वास करें कि यीशु आपके पूरे दिल से परमेश्वर का पुत्र है, यही विश्वास है। बाइबल कहती है कि जो कुछ आप नहीं देख सकते और जो आप नहीं समझ सकते हैं, उसके बारे में निश्चित होना ही विश्वास है। (इब्रानियों 11:1) बाइबल कहती है कि विश्वास वहीं जाता है जहाँ परमेश्वर कहता है। (2 कुरिन्थियों 4:5)

दोस्तों, केवल यीशु को एक व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में आपके हृदय में आने के लिए कहना वह नहीं है जो इफिसियों 2:8-9 कह रहा है। इसे फिर से पढ़ो। मार्ग कहता है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से बचाए गए हैं; न हमारे काम और न ही हमारे अपने गुण। इफिसियों के कथन की पुष्टि पूरी बाइबल में होती है, विशेषकर नए नियम में।

इफिसियों 2:8-9 को ठीक से समझने के लिए, आइए हम परमेश्वर को उसके वांछित विश्वास प्रतिक्रिया को परिभाषित करने दें। इसमें कोई संदेह नहीं है कि विश्वास विश्वास के मूल में है। उसने हमेशा उस विश्वास की प्रतिक्रिया को निर्धारित किया है जो वह चाहता था। उदाहरण के लिए, जब इस्राएलियों को ज़हरीले साँपों द्वारा डसा जा रहा था, तब परमेश्वर विश्वास के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में क्या चाहता था? तुम्हे याद है? उसने मूसा से एक खम्भे के ऊपर पीतल का एक साँप बनवाया और उसे उठा लिया। परमेश्वर ने कहा, "यदि आप इससे चंगाई पाना चाहते हैं, तो यह है जो आप करते हैं। आप उस सर्प को देखें। आप चंगे हो जाएंगे।" (गिनती 21) वह विश्वास की प्रतिक्रिया थी। किसने तय किया कि वह विश्वास प्रतिक्रिया क्या होगी? लोग? नहीं, भगवान ने किया।

ध्यान दें जब इस्राएल के बच्चे वादा किए गए देश में आ रहे थे और वे उस महान शहरपनाह और सबसे मजबूत शहर यरीहो पर कब्ज़ा करने वाले थे। ईश्वर अपनी शक्ति में विश्वास चाहता था लेकिन वह विश्वास की प्रतिक्रिया भी चाहता था। मैं चाहता हूँ कि तुम दिन में एक बार छह दिन तक उस नगर के चारों ओर घूमो और सातवें दिन मैं चाहता हूँ कि तुम उसके चारों ओर सात बार घूमो, और फिर मैं चाहता हूँ कि तुम ऊंचे स्वर से पुकारो।

2 राजा 5 में सीरियाई कोढ़ी नामान से परमेश्वर ने क्या विश्वास प्रतिक्रिया मांगी, जब वह भविष्यद्वक्ता एलीशा को देखने आया? एलीशा तो उसे देखने भी नहीं गया। उसने सिर्फ एक संदेशवाहक के माध्यम से संदेश भेजा। उस ने कहा, तू उस से कहना, कि जा

कर यरदन नदी में सात बार डुबकी मार। यह भगवान का विचार था।

पूरी रात मछली पकड़ने और किनारे पर आने के बाद परमेश्वर ने पतरस से क्या विश्वास प्रतिक्रिया मांगी? यीशु ने कहा, हे पतरस, मैं चाहता हूँ, कि तू एक बार फिर गहिरे में उतरे, और अपना जाल डाले।

और भी अनगिनत उदाहरण हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या उन प्रतिक्रियाओं में से कोई भी उस चमत्कारी घटना के लिए योग्यता या शक्ति की आपूर्ति करता है जो उसके बाद हुई? नहीं, नहीं, नहीं। क्या आप इसे समझते हैं? विश्वास की प्रतिक्रिया ने शक्ति की आपूर्ति नहीं की। इस्राएल के बच्चे जेरिको की दीवार के चारों ओर एक हजार बार घूम सकते थे और वह दीवार एक इंच भी नहीं हिलती अगर यह परमेश्वर की शक्ति के लिए नहीं होती। नामान सूर्य से सूर्यास्त तक यरदन नदी में डुबकी लगा सकता था और परमेश्वर की शक्ति को छोड़कर वह अभी भी वहाँ एक कोढ़ी को छोड़ देता। लेकिन जब उन्होंने विश्वास में जवाब दिया जैसा कि भगवान ने निर्धारित किया था तब उनकी शक्ति उनके पास गई थी। परमेश्वर हमेशा विश्वास की प्रतिक्रिया निर्धारित करता है। उसके पास हमेशा होता है। अतः, मसीह को स्वीकार करने के लिए परमेश्वर किस विश्वास प्रतिक्रिया की माँग करता है? आइए किसी की राय के बजाय बाइबल के उत्तर की अनुमति दें। प्रेरितों के काम की पुस्तक बाइबल की एकमात्र प्रेरित पुस्तक है जो हमें प्रारंभिक कलीसिया के जन्म और विकास का शुद्ध इतिहास देती है। इसमें और यह अकेले उन पहले ईसाइयों के व्यक्तिगत रूपांतरणों का एकमात्र विशिष्ट विवरण है। यह सीखने के लिए कहाँ जाना है कि वे कैसे ईसाई बने। हमें न अधिक करना चाहिए और न ही कम।

मैं आपको प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाए जाने वाले ईसाई धर्म में परिवर्तन के सभी विवरणों को संक्षेप में दिखाना चाहता हूँ। अब, हम उन्हें उनकी संपूर्णता में नहीं ले पाएंगे, इसलिए मैं आपको अपने निजी अध्ययन में वापस जाने और उन्हें उनके संपूर्ण और संपूर्ण संदर्भ में देखने के लिए प्रोत्साहित करूंगा। उन पलों को देखें कि वे कैसे मसीह के पास आए और उस सारे डेटा को आत्मसात करें जो हम पाते हैं।

1. जिस दिन चर्च शुरू हुआ जब उन पहले 3,000 लोगों ने पतरस और प्रेरितों से सवाल पूछा। "जब लोगों ने यह सुना, तो उनके हृदय छिद गए, और उन्होंने पतरस और अन्य प्रेरितों से कहा, 'भाइयो, हम क्या करें?' पतरस ने उत्तर दिया, 'मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। और तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'" (प्रेरितों के काम 2:37-38), " जिन्होंने उसका सन्देश ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उस दिन उन में कोई तीन हजार जुड़ गए।" (अधिनियम 2:41)
2. "परन्तु सन्देश के सुनने वालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और मनुष्यों की गिनती पांच हजार के लगभग हो गई।" (प्रेरितों के

काम 4:4)

3. अगला संदर्भ साइमन, जादूगर के परिवर्तन में है। "परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम का सुसमाचार सुनाता था, तो उन्होंने बपतिस्मा लिया... और जो बड़े चिन्ह और आश्चर्यकर्म उसने देखे, उन से चकित होकर वह हर जगह फिलिप्पुस के पीछे हो लिया।" (प्रेरितों के काम 8:12-13)
4. इथियोपियाई हिजड़ा। "फिर फिलिप्पुस ने पवित्रशास्त्र के उसी अंश से आरम्भ किया और उसे यीशु के विषय में सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह आए, और खोजे ने कहा, 'देख, यहाँ जल है। मैं क्यों न बपतिस्मा लूँ?' और उस ने रथ को रोकने की आज्ञा दी। तब फिलेप्पुस और खोजा दोनों जल में उतरे, और फिलेप्पुस ने उसे बपतिस्का दिया। परन्तु आनन्द करते हुए अपने मार्ग चला गया।" (प्रेरितों के काम 8:35-39)
5. शाऊल, जो महान प्रेरित पौलुस बनेगा, दमिश्क जाते समय जो कुछ हुआ उसकी अपनी गवाही देता है। "जब वह मार्ग में दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी। वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" "भगवान तुम कौन हो?" शाऊल ने पूछा, 'मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है,' उस ने उत्तर दिया। (प्रेरितों के काम 9:3-5) शाऊल के दमिश्क पहुँचने और हनन्याह से बात करने के बाद, "तुरंत शाऊल की आँखों से छिलके जैसा कुछ गिरा और वह फिर देखने लगा। वह उठा और बपतिस्मा लिया।" (अधिनियम 9:18)
6. प्रथम गैरयहूदी कुरनेलियुस का परिवर्तन। "पतरस ने कहा, 'क्या कोई इन लोगों को जल से बपतिस्मा लेने से रोक सकता है? इन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है।' सो उस ने आज्ञा दी, कि वे यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लें।" (प्रेरितों के काम 10:46)
7. और कुछ सरू और कुरेनी लोग अन्ताकिया को गए, और यूनानियोंको भी यीशु का सुसमाचार सुनाने लगे; और यहोवा का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके यहोवा की ओर फिरे। " (प्रेरितों के काम 11:20-21)
8. "वहां वे ऐसी प्रभावशाली बातें करते थे, कि बहुत से यहूदी और अन्यजाति विश्वास करते थे।" (प्रेरितों 14:1)
9. लुदिया पौलुस के प्रचार और शिक्षा के द्वारा मसीह के पास आई, "सुनने वालों में लुदिया नाम की थूआतीरा नगर की बैजनी कपड़े बेचनेवाली एक स्त्री थी, जो परमेश्वर की उपासक थी। पॉल के संदेश के लिए। जब उसने और घर के अन्य सदस्यों ने बपतिस्मा लिया, तो उसने हमें अपने घर बुलाया। (अधिनियम 16:14)
10. फिलिप्पी के दरोगा ने कहा, उस ने उन्हें बाहर ले जाकर पूछा,

हे साहिबो, उद्धार पाने के लिथे मैं क्या करूं? उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रभु यीशु पर विश्वास करो, तो तुम और तुम्हारा घराना उद्धार पाएगा।' तब उन्होंने उसको और उसके घर के सब लोगों को यहोवा का वचन सुनाया; और रात को उसी समय दारोगा ने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और तुरन्त उस ने और उसके सारे घराने ने बपतिस्मा लिया। (अधिनियम 16:30)

- 11 "बहुत से यहूदियों ने विश्वास किया, और बहुत सी प्रमुख यूनानी स्त्रियों और बहुत से यूनानी पुरुषों ने भी विश्वास किया।" (प्रेरितों के काम 17:12)
12. "कुछ लोग पॉल के अनुयायी बन गए और विश्वास किया।" (अधिनियम 17:34)
13. "आराधनालय के सरदार क्रिस्पुस ने और उसके सारे घराने ने प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थियों ने उसकी सुनकर विश्वास किया, और बपतिस्मा लिया।" (प्रेरितों के काम 18:8)
14. पौलुस इफिसुस आया और वहां ढाई वर्ष तक रहा। "और उस ने उन से पूछा, 'क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं, हमने यह भी नहीं सुना कि पवित्र आत्मा है।' सो पौलुस ने पूछा, 'तो फिर तुमने कौन सा बपतिस्मा लिया?' उन्होंने उत्तर दिया, 'यूहन्ना का बपतिस्मा।' पौलुस ने कहा, 'यूहन्ना का बपतिस्मा मन फिराव का बपतिस्मा था। यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।'" (प्रेरितों के काम 19:2-5)
15. "मैं ने यहूदियों और यूनानियों दोनों से कह दिया है, कि मन फिराकर परमेश्वर की ओर फिरें, और हमारे प्रभु यीशु पर विश्वास करें।" (प्रेरितों के काम 20:21)
16. और फिर अंत में आखिरी वाला। पॉल ने एक बार फिर से अपने परिवर्तन के अनुभव को बताया और कहा, "मैं जमीन पर गिर पड़ा और एक आवाज सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'शाऊल! शाऊल! तुम मुझे क्यों सताते हो?' 'आप कौन हैं, भगवान?' मैंने पूछा। उसने उत्तर दिया, 'मैं नासरत का यीशु हूँ, जिसे तुम सता रहे हो।' मैंने पूछा। 'उठो,' यहोवा ने कहा, 'और दमिश्क में जाओ। वहाँ तुम्हें वह सब बताया जाएगा जो तुम्हें करने के लिए नियुक्त किया गया है।' बपतिस्मा लो, और उसका नाम लेकर अपने पाप धो लो।" (प्रेरितों के काम 22:16)

यह थोड़ा लंबा हो सकता है, लेकिन मैं चाहता था कि आप इसे अपने लिए देखें। उन रूपांतरण खातों में नौ अलग-अलग बार, जो हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाते हैं, हमें बताया गया है कि लोगों ने विश्वास किया और स्पष्ट रूप से उन्होंने किया। तीन अलग-अलग बार हमें बताया गया है कि उन्होंने पश्चाताप किया और शब्द, "पश्चाताप," का अर्थ है "मुड़ना", दुनिया से मुड़ना और यीशु मसीह की ओर मुड़ना। दस अलग-अलग बार, हमें बताया गया है कि उनका बपतिस्मा हुआ था। शब्द "बपतिस्मा" का अर्थ है डूबना,

डुबाना या डुबाना, जिसका अर्थ है पूरा शरीर पानी के नीचे चला जाना। जब किसी को पानी से ऊपर उठाया जाता है, पुनर्जीवित किया जाता है, तो वह जीवन के एक नएपन में चलकर बाहर आता है। वैसे, हर बार जब वे बपतिस्मा लेते थे, तो यह एक सप्ताह बाद नहीं होता था और यह एक महीने बाद नहीं होता था, यह तुरंत होता था। अब,

मुझे पता है कि दुनिया के अधिकांश लोगों ने पूछा "क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि भगवान को मसीह को स्वीकार करने के लिए विश्वास प्रतिक्रिया के एक भाग के रूप में बपतिस्मा की आवश्यकता है?" उनकी आस्था प्रतिक्रिया? "क्या तुम सचमुच विश्वास करते हो कि परमेश्वर ने इस्राएलियों से उस नगर के चारों ओर मूर्खों के समान छः दिन तक एक बार और सातवें दिन सात बार घूमने को कहा?" "क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि भगवान ने नामान को जॉर्डन में सात बार डुबकी लगाने की उम्मीद की थी?" "क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि वह चाहता था कि पीटर पूरी रात मछली पकड़ने के बाद बाहर जाए और उन जालों को एक बार और डाले?" क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उन सभी लोगों से उनकी शारीरिक चंगाई के लिए अनुरोध की गई प्रतिक्रिया चाहता है या हमारे आध्यात्मिक चंगाई, हमारे पापों की क्षमा के लिए वह हमसे जिस प्रतिक्रिया की मांग करता है।

कुछ अन्य आयतों को सब कुछ उस परिप्रेक्ष्य में रखना चाहिए जिस तरह से परमेश्वर चाहता है कि हम विश्वास में उसके प्रति प्रतिक्रिया करें। "जो कोई विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16) परन्तु, बपतिस्मा का उद्देश्य क्या है? "या क्या तुम नहीं जानते, कि हम सब जिन्होंने ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जिस प्रकार मसीह भी परमेश्वर की महिमा के द्वारा मरे हुआँ में से जी उठा। पिता, हम भी एक नया जीवन जी सकते हैं। यदि हम उनकी मृत्यु में इस तरह उनके साथ एक हुए हैं, तो हम निश्चित रूप से उनके पुनरुत्थान में भी उनके साथ एक होंगे।" (रोमियों 6:3-5:1)

पॉल कहते हैं, भगवान ने इसे विश्वास प्रतिक्रिया के हिस्से के रूप में शामिल करने का कारण चुना, विश्वास पर आकस्मिक, पश्चाताप पर आकस्मिक और भगवान की ओर मुड़ना, यीशु मसीह की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान को फिर से लागू करना है। पतरस ने वही कारण बताया जब वह नूह के बारे में बात कर रहा था और कैसे वह अपने विश्वास की प्रतिक्रिया के कारण बचाया गया था, जब परमेश्वर ने पृथ्वी पर उस महान जलप्रलय को भेजा था। "और वह पानी बपतिस्मा का प्रतीक है जो अब आपको भी बचाता है - शरीर से गंदगी को हटाने का नहीं बल्कि भगवान के प्रति एक अच्छे विवेक की प्रतिज्ञा का।" (1 पतरस 3:21) पानी के बारे में कुछ भी जादुई नहीं है। यह पवित्र नहीं है। यह वह नहीं है जो यह शारीरिक रूप से किसी गंदी या अशुद्ध वस्तु को दूर ले जाकर करता है। इसका पूरा उद्देश्य "ईश्वर के प्रति एक अच्छे विवेक की प्रतिज्ञा" है

क्यों? क्योंकि यह पूरा कर रहा है, विश्वास का जवाब जो परमेश्वर ने मांगा है।

मेरे द्वारा साझा की गई बातों और उसके पीछे के तर्कों के बावजूद, बहुत सारे ऐसे मित्र हैं जो बहुत सम्मानपूर्वक और ईमानदारी से आपके साथ साझा की गई बातों से असहमत हैं। इफिसियों 2:8-9 में हमारे मार्ग पर वापस जाना, जहां यह कहता है, "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी ओर से नहीं, यह परमेश्वर का दान है - न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" वे कहते हैं, "लेकिन बपतिस्मा एक कार्य है, यह एक कार्य है।"

मैं आपको एक अंतिम पद दिखाता हूँ जब हम सब कुछ सारांशित करते हैं "उसने हमारा उद्धार किया है, यह हमारे धर्म के कामों के कारण नहीं, परन्तु अपनी दया के कारण है।" (तीतुस 3:5) देखें कि यह हम जो करते हैं उससे नहीं है। यह हमारी शक्ति नहीं है। यह उसकी दया है। वह शक्ति है। "उन्होंने हमें पुनर्जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के नवीकरण के द्वारा बचाया।" (तीतुस 3:6) बपतिस्मा का काम करने से कोई लेना-देना नहीं है; सब कुछ सबमिशन से संबंधित है। इसका सब कुछ आस्था से जुड़ा है। इसका मतलब विश्वास के अलावा कुछ नहीं है। इसका मतलब यीशु मसीह के अलावा कुछ भी नहीं है। बपतिस्मा केवल विश्वास की प्रतिक्रिया है जो हमें उस महान शक्ति से जोड़ती है जो हमें हमारे पापों से बचाती है। अमेज़िंग ग्रेस #1273, स्टीव फ्लैट 21 जुलाई 1996